

卐 श्री गङ्गेश्वरपार्ष्णिनाथाय नमः 卐

॥ स कलागमरहस्यवेदिपरमज्योतिर्विष्णुश्रीमद्विजयदानसूरीश्वरसद्गुरुभ्यो नमः ॥

श्रीमद्रामदेवगणप्रणीतप्राकृतभाषागाथाः छट्पिप्पनेन भूषितः

सप्ततिकाभिधः षष्ठः कर्मग्रन्थः



टिप्पणकादिना समलङ्कृत्य सम्पादकः संशोधकश्च

प्रवचनकौशल्याधार--मिद्वान्तमहोदधि--सुविशालगच्छाधिपति--परमशासनप्रभावक-

कर्ममाहित्यनिष्णात--परमपूज्य-स्वर्गताचार्यदेवेश-श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वर-

विनीताऽन्तेयामि-निःस्पृहतासलिलनिधि-परमगीतार्थ-परम-

पूज्या-ऽऽचार्यदेव-श्रीमद्वि हारसूरीश्वर-

विनेयरत्नमुनि-श्रीललितशेखरविजय-

शिष्यरत्न-मुनि-श्रीराजशेखरविजय-

शिष्यः-

मुनि-श्रीवीरशेखरविजयः

मद्राशिका-भारतीय-प्राच्य-तत्त्व-प्रकाशन-समितिः, पिन्डवाड़ा (राज०)

प्रथम आवृत्ति:-
प्रति- २५०+२५

राजसस्करण-१५) रु०
राजाधिराज ,, -२०) रु०

वीर सप्त २५००
विक्रम सप्त २०३-

* प्राप्तिस्थान *

भारतीय प्राच्यतत्त्व प्रकाशन समिति

C/o रमणलाल लालचंद

१३५/१३७ झवेरी बाजा , बम्बई २

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति

C/o शा समरथमल रायचंद

पिडवाडा, (राज०)

स्टे० सिरोही रोड (W R)

•

भारतीय-प्राच्यतत्त्व-प्रकाशन-समिति

शा. रमणलाल वजेचंद,

C/o दिल्लीपकुमार रमण ,

वी मार्केट,

अहमदाबाद २.

•

Saptatik hi S st r r t

With

ifferent C t ri

Edited by

M i s ri Vir s k rvij y

Published by

haratiya Prachya-Tattva rakas an a iti, in war
(Rajasthan) (India)

First Edition
Copies 250+25

DELUXE EDITION RS 15
SUPER DELUXE ,, RS 20

{ A D 1974

AVAILABLE FROM

1 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
Co Shah Ramanlal Lalchand,
135/37 Ziveri Bazaar
BOMBAY-2
(INDIA)



2 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
C/o Shah Samaratanmal Raychandji,
PINDWARA, (Rajasthan)
St. Sirohi Road (W. R.)
(INDIA)



3 BHARATIYA PRACHYA TATTVA PRAKASHAN SAMITI
Shah Ramanlal Vajechand,
C/o Dilpkumar Ramanlal,
Maskati Market,
AHMEDABAD-2
(INDIA)



Printed by
Gyanodaya Printing Press
PINDWARA (Raj)
St Sirohi Road, (W R.)
(INDIA)

सकलागमरहस्यवेदि-मरिपुरन्दर-बहुश्रुतगीतार्थ-परमज्योतिर्विद-परमगुरुदेव



परमपूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयदानसूरीश्वरजी महाराज

* प्रकाशकीय निवेदन *

यह सूचिन करते हुए हमें अत्यन्त आनन्द हो रहा है कि अल्प समय में परमपूज्य सिद्धान्त महोदधि कर्मसाहित्य निष्णात स्वर्गताचार्यदेवेश श्रीमद्विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज की परम पावनी निष्ठा में उनकी ही परमकृपा दृष्टि से सकलित किया हुआ और ग्लोकवद्ध प्राकृत भाषा में रचे हुए मूलग्रन्थ तथा संस्कृत भाषा में रचे हुये टीकाग्रन्थ रूप लांग्वोडलोक प्रमाण कर्म साहित्य का सर्जन हो चुका है, और भी सर्जन चालु है जिनके बोल्युम (महाग्रन्थ) ६ ग्रन्थरत्न हमारी मन्था द्वारा आपके कर कमलों में पहुच चुके है और ग्रन्थों का मुद्रण बाये चालु है। जिसे यथा समय आप प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा इस कर्मसाहित्य विषयक मुनिचन्द्रसूरि विरचित टिप्पणक से युक्त पूर्वाचार्य कृत चूर्णि और उदयग्रामसूरि विहित टिप्पणक इन दोनों से विभूषित किया हुआ ऐसा पूर्वग्र वाचक श्रीशिवशर्मसूरिप्रणीत 'बन्धशतकम्' नाम का प्राचीन ग्रन्थ तन भी हम ममिति द्वारा प्रकाशित किया गया है। उमी तरह पूर्वाचार्य कृत मूल टीका सहित "चत्वार प्राचीना कर्मग्रन्था" नाम का प्राचीन ग्रन्थरत्न हमारी सस्था द्वारा प्रकाशित हो चूका है। ठीक उमी तरह प्रस्तुत ग्रन्थरत्न भी प्रकाशित हो रहा है।

रामदेवगणिकृत टिप्पणक युक्त सप्ततिकाख्य पष्ठ कर्मग्रन्थ तथा रामदेवगणिरचित टिप्पणक और वृत्ति महित सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण मुद्रित नहीं होने से तथा उनकी हस्तलिखित प्रत एव प्रेस कॉपिया भी मिलने से इन का मुद्रण आवश्यक बन गया था।

संपादन-संशोधन :-

परमपूज्य सिद्धान्तमहोदधि कर्मसाहित्य निष्णात सुविशालगच्छाधिपति स्वर्गता आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी महाराज साहेब के शिष्यरत्न परमपूज्य गीतार्थ निगृहतानीरधि आचार्य-देवेश श्रीमद् विजयहोरसूरीश्वर म सा. के शिष्यरत्न प. पू. मुनिराज श्री ललितशेखरविजयजी म सा के शिष्यरत्न प. पू. मुनिराज श्री राजशेखरविजयजी म. सा के शिष्यरत्न प. पू. मुनिराज श्री वीरशेखरविजयजी म. सा. ने कर्मसाहित्य के नव निर्माण के विराट् कार्य को करते हुये भी अपने अमूल्य समय का भोग देकर इस 'ग्रन्थरत्न' का रुशोधन कर, हस्तलिखित प्रत्यादि के साथ मिलानादि करके संपादन किया है।

संपादन-पद्धति :-

मूलग्रन्थ-टीकाग्रन्थ-साक्षिग्रन्थ-प्रतीक-टिप्पणी आदि के लिये विभिन्न छोटे बड़े-खुले व गहरे एव विविध प्रकार के टाइप पसद कर अभ्यास कर्ताओं की अनुकूलता बनाए रखने का ठीक प्रयत्न किया है, जैसे मूल ग्रन्थ २० प्वाईन्ट ब्लेक टाईपों में, टीकाग्रन्थ १६ प्वाईन्ट सामान्य टाईप में, प्रतीक १६ प्वाईन्ट ब्लेक टाईप में, साक्षिग्रन्थ टिप्पणी विषयानुक्रम और शुद्धिपत्रक १२ प्वाईन्ट सामान्य टाईप में रखे है।

शुद्धिपत्रक में सहायक :-

ग्रन्थमुद्रित हो जाने के बाद में भी अनामोग मुद्रणदोषादि के कारण रही हुयी अशुद्धियों के समार्जन के लिये शुद्धिपत्रक में प. पू. स्व. आचार्यदेव के शिष्यरत्न प. पू. आगमग्रन्थ आचार्यदेव श्रीमद् विजयजम्बुसूरिश्वरजी म सा तथा प. पू. वीरशेखरविजयजी म सा और जैन श्रेयस्कर मडल पाठशाला मेहसाणा के अध्यापक सुश्रावक श्रीयुत पुखराजभाई ने श्रीयुत वसतभाई आदि द्वारा सहयोग दिया है यह शुद्धिपत्रक ग्रन्थ के अंत में दिया गया है। तदनुसार ग्रन्थ सुधार कर पढ़ने का ध्यान रखने की ज्ञान-पिपासु वाचकों से हार्दिक अपील है।

कृतज्ञता प्रदर्शन :-

अत मे सबसे पहले स्व परम गुरुदेव सिद्धान्तप्रहोदधि कर्मसाहित्य निष्णात आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयप्रेमसूरीश्वरजी म. सा. का जितना उपकार और आभार माने उतना कम है। क्योंकि उनकी ही परमकृपा और प्रभाव से इस समिति का उत्थान और कर्मसाहित्य का विशाल हो सका है। साहित्य की इस इमारत की नींव की इंट तो आप ही हैं।

साथ मे हस्तलिखित प्रतिया आदि के साथ मे मिलाकर, टिप्पणिया बनाकर, पढशीति प्रकरण के सब पदार्थों के ग्यारह (११) यंत्रों बनाकर उनका प्रथम परिशिष्ट और टिप्पणियुक्त पाचों प्राचीन कर्मग्रन्थ तथा सप्ततिकानाम के षष्ठ कर्मग्रन्थ की मूलगाथा, द्वितीय-चतुर्थ पञ्चम षष्ठ कर्मग्रन्थ की माष्यगाथा तथा सप्ततिकासार की गाथा और सूक्ष्मार्थविचारसारप्रकरण की मूलगाथा तथा माष्य गाथा का दूसरा परिशिष्ट बनवाकर जो-तोड परिश्रम से जिन्होंने इस ग्रन्थरत्न का सपादन किया है वह पूज्य मुनिराजश्री वीरशेखरविजयजी म सा के अर्घनीय उपकार के हम चिर ऋणी है।

इस ग्रन्थ के शुद्धिपत्रक के सहायक प. पू आगमप्रज्ञ आचार्यदेव श्रीमद् विजयजम्बूसूरी जी म सा तथा प. पू मु वीरशेखरविजयजी म. सा. और महेसाणा के प्राध्यापक पुखराजभाई तथा वसतभाई आदि का हार्दिक आभार मानते हैं।

श्रीरामदेवगणि की बनवायी हुयी सप्ततिकाटिप्पणी और 'सूक्ष्मार्थविचारसार टिप्पणी की प्रेस कापीया डभोई के "श्री जम्बूस्वामि जैन मुक्ताबाई आगममंदिर" नाम ज्ञान भण्डार के लिए तैयार की हुयी जिन्होंने ने इस कार्य के लिये भीजवायी उन पूज्य आगमप्रज्ञआचार्यदेव श्रीमद् विजयजम्बूसूरि म सा. का हृदय पूर्वक उपकार और आभार मानते है। श्रीरामदेवगणि की ही रची हुयी विभिन्नप्रकार की टिप्पणि की हस्तलिखित प्रत और सूक्ष्मार्थविचारसार प्रकरणवृत्ति की फोटोकोपी के लिए सुविधा करवानेवाले भोजक अमृतलालभाई का एव इन सब प्रत्यादिकी प्राप्ति करवाने में सहाय करने वाले पू मुनिराजश्री जयघोषविजयजी म सा. तथा पू मुनिराजश्री धर्मानन्दविजयजी म सा. का भी हार्दिक उपकार मानते है। 'प्रूफ रीडिंग' सहायक महेसाणा वाले मास्टर चाल का तथा मुद्रण काय को आत्मीयतातथा तेजी से करने वाले ज्ञानोदय प्रिन्टींग प्रेस - पिंडवाडा के व्यवस्थापक व्यावर निवासी श्रीमान फतहचन्दजी जैन (हालावाले) एव उनके सहयोगी कर्मचारीगण की निष्ठा एव तत्परता के कारण उनकी स्मृति सदा मराहनीय बनी रहेगी।

द्रव्य सहायक :-

श्री हुकमीचदजी कोल्हापुर वाले ने अपने स्व० पिताजी श्री डु गाजी की पुण्य स्मृति में इस ग्रन्थ के मुद्रण-व्यय मे रु ५०००) की द्रव्य सहाय करके अर्पण श्रत मक्ति की है।

श्री डु गाजी का जन्म विक्रम सवत १९१९ मे राजस्थान-सिरोही जिले के फु गणी गांव मे हुआ था। व्यवसाय का प्रारम्भ महाराष्ट्र मे कोल्हापुर जिले के वडगाव में कपडे की दुकान से हुआ। आर्थिक स्थिति सामान्य होने पर भी नीतिमत्ता असामान्य थी। क्षमा-परोपकार-सहनशीलतादि सात्त्विक गुणों से जीवन एक सुभावक के उचित था। सामायिक प्रति पूजा पञ्चकत्वानादि नित्य कृत्यों मे तथा श्री सघ के कार्यों मे सदैव अग्रमत्त और उत्साही रहते थे। फलत विक्रम स० १९८० में मुनि भगवतों की निश्रा मे अनशन वी भाषना के साथ सर्व-सग का त्यागकर दिवगत हुए।

हुकमीचंदजी के परिवार में धर्म सपन्नता आचारशीलता और नीतिमत्ता का जो उत्कर्ष है इसका श्रेयः स्व० डु गंजी को ही है।

इनका यह दानादि धर्म उत्तरोत्तर वृद्धि को पाता रहे और भाव-धर्म का स्वरूप लेकर मोक्षदायक बने यही शुभेच्छा।

निकट भविष्य में और अधिक ग्रन्थों के प्रकाशन की आशा में।

भव गीय-

(1) पिंडवाड़ा

स्टे सिरौहीरोड (राजस्थान)

(11) १३५/१३७ जौहरी बाजार

बम्बई-२

शा. समरथमल रायचन्दजी (मंत्री)

शा. लालचन्द छगनलालजी (मंत्री)

भारतीय प्राच्य-तत्त्व शासन समिति

❀ समिति का ट्रस्टी मंडल ❀

- | | |
|--|--|
| (१) शेठ रमणलाल दलसुखभाई (प्रमुख) खंभात | (६) शा. लालचंद छगनलालजी मंत्री पिंडवाड़ा |
| (२) शेठ माणिकलाल चुनीलाल बम्बई | (७) शेठ रमणलाल वजेचन्द अहमदाबाद। |
| (३) शेठ जीवतलाल पशी बम्बई | (८) शा. हिम्मतमल रुग्नाथजी वेडा |
| (४) शा. खूबचन्द अचलदासजी पिंडवाड़ा | (९) शेठ जैठालाल चुनीलाल धीवाले बम्बई |
| (५) शा. समरथमल रायचंदजी मंत्री पिंडवाड़ा | (१०) शा. इन्द्रमल हाराचन्दजी पिंडवाड़ा |



अध्याज्जलि

जिन्होंने भवरूपी सागर से मुझे बाहर निकाल कर चारित्ररूप नौका पर चढाया और दीक्षा दिन से लेकर बारह वर्ष तक आपने सानिध्य में रख कर ग्रहणशिक्षा और आसेवनशिक्षा के साथ साथ ही मस्कृत—प्राकृतव्याकरण न्याय दर्शन काव्य कोश छन्द अलङ्कार प्रकरण छेद! आगमादि विविध विषयक ग्रन्थो के अभ्यास द्वारा अमृतपान करवाया । जिन्होकी सतत मत्प्रेरणा और परम कृपा से ही महागंभीर और अतिभगीरथ ऐसे कर्मसाहित्य के नवनिर्माण में आज तेरह तेरह वर्ष तक लगातार प्रयत्नशील रहा हूं और भी ऐसे नवसर्जनादि अनेक कार्यों में व्यस्त रहने पर भी जिस पुण्यपुरुष की अमीदृष्टि से ही इस ग्रन्थरत्न की सम्पादनता मे भी सफलता पा रहा हूं । उन कर्मसाहित्य के सूत्रधार सिद्धान्तमहोदधि सच्चारित्रचूडामणि परमशासनप्रभावक सुविशालगच्छाधिपति परमाराध्यपाद स्वर्गीय आचार्यदेवेश—

श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी सहाराजा
की परमपावनी स्मृति में

भवदीय कृपैकाभिलाषी
मुनि वीरशेखर विजय

प्राकृतभाषागाथावद्धटिप्पनक-यन्त्रकादिना-ऽलङ्कृतः

प्ततिकाभिधः : कर्मग्रन्थः

ଆ ଗ୍ରନ୍ଥମାଂ ଦ୍ରବ୍ୟସାଧାୟକ



ଶାଢ଼ ଛୁକ୍ତମୟଂଦ଼଼ କୁଗା଼଼ ରା଼଼଼଼଼ (କୃଗା଼଼଼଼଼)
(କା଼଼଼ାପୁର)

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्रीगणेश्वरनाथनाथाय नमः ॥

न्यायाम्भोनिधिः श्रीमद्विजयानन्दसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः ॥
सद्धर्मसंरक्षकः श्रीमदाचार्यविजयकमलसूरीश्वरपादपद्मेभ्यो नमः ॥
सकलागमरहस्यवेदिः श्रीमदाचार्यविजयदानसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥
कर्मसाहित्यनिष्णातः श्रीमदाचार्यविजयप्रेमसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥
परमगीतार्थः श्रीमदाचार्यविजयहीरसूरीश्वरेभ्यो नमः ॥

श्रीमच्चिरन्तनाचार्यप्रणीता

स त्तिका

(सित्तरी)

“श्रीमद्गामदेवगणिना कृतेन टिप्पनकेन समलङ्कृता”

सिद्धपएहिं महत्थं बन्धोदयसंतपगडिठाणाणं ।
वोच्छं सुण सखेव निस्सदं दिड्ढिवायस्स ॥सू०-१॥ (१)^३
कइ बधतो वेयइ कइ कइ वा पगडिठाणकम्मसा ।
मूलुत्तरपयडोसुं भगविगप्पा बोद्धवा ॥सू०-२॥ (२)
सुगइगमसरलसरणि, वीरं नमिउण मोहत्तमतरणि ।
सत्तरिएटिप्पेमी, किंची चुन्नीउ अणुसरिउं ॥१॥ (३) [१]^३
संखेवा भंगाण, सुमरणहेउ तह पगडिठाणाणं ।
पत्तेयं पगडीणं, नामग्गाहं च काहामि ॥२॥ (४) [२]
आउसमं अट्ट भवे, आउविहूणा य सत्त बंधम्मि ।
मोहणियाऽऽउविणा छ उ, एगो वेयणियबंधो उ ॥३॥ (५) [३]
अट्टुदओ बहुयाणं, मोहं मोत्तूण केसि सत्तुदओ ।
घाइविहूणा चउरो, तह सत्ताए वि त्तियठाणा ॥४॥ (६) [४]

१ अज्ञातनामाचार्यचित्ता इत्यर्थः, न पुनश्चिरन्तनाभिधाचार्यविहिता इति । २ () एतच्चिह्नान्त-
गेनगाथाक्रम ससूत्रक L D (लालमाइ दल्पतभाइ विद्यामदिर) प्रत्यनुसारी । सूत्ररहितगाथाक्रम
पुन J (जेललमेर) प्रतिप्रेसकोप्यपेक्ष । ३ [] एतच्चिह्नान्तर्गगाथाक्रम ससूत्रक J प्रतिप्रेसकोप्य-
धिकृत । ४ “सखेवेण त्यमि ।

सामन्ना १ जीव २ गुणा ३, पत्तेयं मूलपयडिविसओ उ ।
नियनियभंगेहि समं, सुत्तऽणुसारउ तं च इमं ॥५॥ (७) [५]

मूलप्रकृतौ सत्तास्थानानि-

अट्टविह-सत्त-लुब्धएसु अट्टेव उदय'सताई ।
एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अबंधम्मि ॥सू०-३॥ (८) [६]
पढमद्ध कंठ ।

सत्तऽट्ट १ सत्त सत्त य २, चउरो चउरो य ३ उदयसंतंसा ।
एगविहबंधगे इह, तह य अबंधम्मि चउ चउरो ॥६॥ (९) [७]

सामन्ने ठवणा-

बन्धो	८	७	६	१	१	१	०
उदओ	८	८	८	७	७	४	४
सत्ता	८	८	८	८	७	४	४

जीवस्थानेषु मूलप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि-

सत्तऽट्टबंध अट्टुदयसत तेरस जीवठाणे ।
एगम्मि पच भगा दो भंगा 'होंति केवल्लिणे ॥सू०-४॥ (१०) [८]

पढमद्ध कंठ । 'एगम्मि' सन्निट्ठाणे ।

अडसत्तल्लेगबंधा, उदए संते य पढमतिसु अट्ट ।
एगम्मि सत्त अट्ट य, तह सत्त य सत्त उदयंसा ॥७॥ (११) [९]

सण्णिसस ठवणा-

बन्धो	८	७	६	१	१
उदओ	८	८	८	७	७
सत्ता	८	८	८	८	७

तेरससु जीवठाणेषु ठवणा-

व०	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८	७-८
उ०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
स०	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
जीव- ट्ठाणा	सू अप	सू प	वा अप	वा प.	वे अप	वे प	त्रि० अप	त्रि० प०	च अ	च प	अस अप	अस प	स अप

१ "सतंसा" इति वा पाठ । २ "हुति" इत्यपि ।

केवल्लिठवणा—

बन्धो	१	०
उदओ	४	४
सत्ता	४	४

गुणस्थानकेषु मूलप्रकृतीनां बन्धोदयसत्तास्थानानि—
 अ १ एगविगप्पो, छस्सु २ उ गुणसन्निएसु इविगप्पो ।
 पत्तेय पत्तेय, बधोदय—सतकम्माणं ॥सू०-५॥ (१२) [१०]
 मिस्सअपुव्वा ३ वायर, सगबंधा छच्च बंधए सुहमो ।
 ४ उवसंताई ३ एगं, अवधगोऽजोगि एगेगं ॥८॥ (१३) [११]
 मिच्छासामणअविरय—देसपमत्तअपमत्तया चैव ।
 सत्तऽदुबंधगा इह, उदया संता य पुण एए ॥६॥ (१४) [१२]
 जा सुहुमो ता अहु उ, उदए संते य होति पयडीओ ।
 ५ सत्तऽड उवसंते खीणि सत्त चत्तारि सेसेसु ॥१०॥ (१५) [१३]

ठवणा—

गुणठाणाणि	मिच्छ	सा०	मि०	अवि०	देव०	पम०	अपम	अपू०	अणि	सु०	उव०	खीण	सजो	अजो
बधो	८	७	७	८	७	८	७	७	७	६	१	१	१	०
उदओ	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	७	४	४
सत्ता	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	७	४	४
	२	२	१	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	१

मूलपयडीसु भणिया बन्धोदयसंतठाणसविगप्पा ।
 उत्तरपयडीसु तथा ते च्चिय पयडेमि पत्तेयं ॥ (१६)
 उत्तरप्रकृतिषु बन्धोदयसत्तास्थानानि —
 बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराइए पंच ।
 बधोवरमे वि तथा, ५ उदयसा होति पंचेव ॥सू०-६॥ (१७) [१४]

१ “वि”इत्यपि । २ “वादर” अनिवृत्ति । ३ उपशान्तकषायक्षीणकषायसयोगिकेवल्लिन । ४ “सत्त-
 ऽदुदुवसते” इति L. D. प्रती । ५ “उदसता हुति” इति ।

नाणावरणं म३१सुय२ओहि३मणोनाण४केवलावरणा ५ ।
विग्धं दाणे १लाभे २, भोगु३वभोगे४ य विरिण् य ५ ॥११॥ (१८) [१५]

सामन्नेण गुणद्वृणोसु य वधाइवोच्छेदमाह-

नाणंतरायबंधो, सुहुमे संतुदय खीणचरिमम्मि ।
वोच्छिन्ना य कमेणं, दो दो भंगा उ दोणं पि ॥१२॥ (१९) [१६]

ठवणा—

	नाणावरण०		अतराय०	
बधो	५	०	५	०
उदओ	५	५	५	५
सत्ता	५	५	५	५

दर्शनावरणस्योत्तरप्रकृतीना बन्धोदयसत्तास्थानानि-

बंधस्स य संतस्स य, पगइहाणाणि तिननि तुल्लाइं ।
उदयहाणाइं दुवे, चउ पणगं दसणावरणे ॥सू०-७॥ (२०) [१७]
नयणेयरोहि-केवल-दंसणआवरणयं भवे चउहा ।
निदा-पयलाहि छाहा, निदाइ^३दुरुत्त थीणद्धी ॥१३॥ (२१) [१८]

सामण्णे ठवणा-

	दसणावरण०		
बधो	६	६	४
उदओ	४		५
सत्ता	६	६	४

१ एतत्प्रतिपादन सप्ततिकाचूर्णि-टीकाभ्या सम (न) विरुध्यते, तद्यथा-‘दो होंति दोसु ठाणेसु’ त्ति उदयसताणि दोण्णि, एयाणि उवसतखीणकसागेसु दोसु भवति, सुहुमरागचरिमसमए बधो वोच्छिण्णो, छ उमत्थत्ताओ उदयसता अत्थि । ते य खीणकसायचरिमसमए दोव खिज्जति ।’ (सप्ततिकाचूर्णिपत्र ३५ पृष्ठि २) । तथा द्वयो पुनर्गुणस्थानकयो उवगान्तमोह-क्षीणमोहरूपयो ‘द्वे उदयसत्ते स्त न बन्ध, वन्वस्य सूक्ष्मसम्पराये व्यवच्छिन्नत्वात् । एतदुक्तं भवति बन्धाभवे उपशान्तमोहे क्षीणमोहे च ज्ञानावरणीयाऽन्तराययो प्रत्येक पञ्चविध उदय पञ्चविधा च सत्ता भवतीति परत उदय सत्तयोरप्यभाव । (कर्मग्रन्थद्वितीयविभाग. पृ० २०७) २ आदिशब्दात् प्रचला ज्ञातव्या ।

- नव छच्चउहा वधे, तह 'संता पंच चउर उदयम्मि ।
 'सामणमिणं वीए, भंगा पुण 'होति 'एक्कारा ॥१४॥ (२०) [१६]
 वीयावरणे नत्र बंधएसु चउ पंच उदय नव संता ।
 छ चउबंधे चैव, चउबधुदए छलसा य ॥१०-८॥ (-३) [२०]
 उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छत्र चउसता ।
 वेयणिया-ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोह परं वोच्छं ॥१०-६॥ (२४) [२१]
 नव छ चउ वेहबंधे, उदए चउ पंच संत नव छसु वि ।
 चउबंधुदए 'संता, 'छच्चेव य होति खवगरस ॥१५॥ (२५) [२२]
 बंधोवरमे चउ पंच उदय नव संत होति उयमंते ।
 खीणे उदयचउकम्मि छ च चत्तारि 'संताओ ॥१६॥ (२६) [२३]

ठवणा-

वधो	६	६	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदओ	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	४
सत्ता	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	४

'वेदणीयाऽयगोए विभज्ज मोह पर वोच्छ ।

वेदनीयाऽऽयुगोत्रणासुत्तरप्रकृतीना वधोदयसत्तास्थानसवेधमज्जा-

'गोयम्मि सत्त भगा, अहु य भगा भवति वेयणिए ।

पण नव नव पण भगा, आउचउक्केवि कमसो उ। १०-०। (२७) [२४]

नीयं बंधं नीयस्स उदय नीयस्स चैव संताओ ।

अनिलाऽनलजीवाणं इयरेसु अणंतरुव्वट्टे ॥१७॥ [२५]

अनला-ऽनिलजीवाणं एगो इय एसु केसि चि ॥ (२८)

उद्वालियउच्चागोए तेउवारुण णीयमिह संतं ।

इयरेसु च उव्वट्टे पज्जत्ती जा न पूरेइ ॥ (२९)

१-५-० "सत्ता" इति L D प्रतौ । २ 'सामन्नं' इति L D प्रतौ । ३ "हुति" इति L D प्रतौ । ४ अत्र प्राचीनकर्मस्तवकारादिभिः त्रयोदशमज्जा प्रतिपाद्यन्ते । यत्रते क्षपकाणामपि निद्राद्विकोदय स्वीक्रियते । दृश्यता प्राचीनकर्मस्तवे त्रयस्त्रिंशत्तमगाथापूर्वार्धं तट्टीका च ६ क्षपकाणा स्त्यानद्वित्रिक-क्षयानन्तर षड्विधा सत्ता बोद्धव्या । ५ अय पाठ J० प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । L D प्रतौ चास्ति । ६ 'वेनाऽपि विदुषा सप्ततिका मूलप्रकरणेऽर्थानुसन्धानार्थं प्रक्षिप्तमिदं गाथासूत्रम्, न तु मूलप्रकरणम्येद-मिति । एवमप्येऽपि ज्ञेयम् ।

नाणावरणं मङ्गसुय२ओहि३मणोनाण४केवलवरणा ५ ।
विग्धं दाणे १लाभे २, भोगु३वभोगे४ य विरिए य ५ ॥११॥ (१८) [१५]

सामन्नेण गुणद्वृणगेसु य वधाइयोच्छेदमाह-

नाणंतरायबंधो, सुहुमे संतुदय खीणचरिमस्मि ।
वोच्छिन्ना य क्रमेणं, दो दो भंगा उ दोणहं पि ॥१२॥ (१९) [१६]

ठवणा—

	नाणावरण०		अतराय०	
वधो	५	०	५	०
उदओ	५	५	५	५
सत्ता	५	५	५	५

दर्शनावरणस्योत्तरप्रकृतीना वन्धोदयसत्तास्थानानि-
बंधस्स य संतस्स य, पगइट्टाणाणि तिन्नि तुल्लाइं ।
उदयट्टाणाइं दुवे, चउ पणगं दसणावरणे ॥सू०-७॥ (२०) [१७]
नयणेयरोहि-केवल-दंसणआवरणयं भवे चउहा ।
निदा-पयलाहि छहा, निदाइदुरुत्त थीणद्वी ॥१३॥ (२१) [१८]

सामण्णे ठवणा-

	दसणावरण०		
वधो	६	६	४
उदओ	४		५
सत्ता	६	६	४

१ एतत्प्रतिपादन सप्ततिकाचूर्णि-टीकाभ्या सम (न) विरुध्यते, तद्यथा-‘दो होंति दोसु ठाणेसु’ त्ति उदयसताणि दोष्णि, एयाणि उवसतखीणकसायेसु दोसु भवति, सुहुमरागचरिमममए वधो वोच्छिण्णो, छ उमत्थत्ताओ उदयसता अत्थि । ते य खीणकसायचरिमसमए दोव खिज्जति ।’ (सप्ततिकाचूर्णिपत्र ३५ पृष्ठि २) । तथा द्वयो पुनरुणास्थानकयो उवशान्तमोह-क्षीणमोहरूपयो ‘द्वे’ उदयसत्ते स्त न वन्ध, वन्वस्य सूक्ष्मसम्पराये व्यवच्छिन्नत्वात् । एतदुक्तं भवति वन्वाम वे उपशान्तमोहे क्षीणमोहे च ज्ञान वरणीयाऽन्तराययो प्रत्येक पञ्चविध उदय पञ्चविधा च सत्ता भवतीति परत उदय-सत्तयोरप्यभाव । (कर्मग्रन्थद्वितीयविभागः पृ० २०७) २ आदिशब्दात् प्रचला ज्ञातव्या ।

- नव छच्चउहा वधे, तह 'संता पंच चउर उदयम्मि ।
 'सामणमिणं वीए, भंगा पुण 'होति 'एक्कारा ॥१४॥ (२०) [१६]
 वीयावरणे नव बंधएसु चउ पंच उदय नव संता ।
 छ च्चउबंधे चैव, चउबंधुदए छलसा य ॥सू०-८॥ (-३) [२०]
 उवरयबंधे चउ पण, नवंस चउरुदय छच्च चउसता ।
 वेयणिघा-ऽऽउय-गोए, विभज्ज मोह परं वोच्छं ॥सू०-९॥ (२४) [२१]
 नव छ च्चउ वेहबंधे, उदए चउ पंच संत नव छसु वि ।
 चउबंधुदए 'संता, 'छच्चेव य होति खवगरस ॥१५॥ (२५) [२२]
 बंधोवरमे चउ पंच उदय नव संत होति उवसंते ।
 खीणे उदयचउकम्मि छ च्च चत्तारि 'संताओ ॥१६॥ (२६) [२३]

ठवथा-

वधो	६	६	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदओ	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४	४
सत्ता	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	४

“वेदणीयाउयगोए विभज्ज मोह पर वोच्छ ।

वेदनीया-ऽऽयुर्गोत्राणासुत्तरप्रकृतीना वधोदयसत्तास्थानसवधेभज्जा -

‘गोयम्मि सत्त भगा, अट्ट य भगा भवति वेयणिए ।

पण नव नव पण भगा, आउचउक्केचि कमसो उ।सू०-०। (२७) [२४]

नीयं बंधं नीयस्स उदय नीयस्स चैव संताओ ।

अनिलाऽनिलजीवाणं इयरेसु अणंतरुव्वट्टे ॥१७॥ [२५]

अनला-ऽनिलजीवाणं एगो इय एसु केसिं चि ॥ (२८)

उद्वालियउच्चागोए तेउवाउण णीयमिह संतं ।

इयरेसु च उव्वट्टे पज्जत्ती जा न पूरेइ ॥ (२९)

१-५-० “सत्ता” इति L D प्रती । २ ‘सामन्न०” इति L D प्रती । ३ “हुति” इति L D प्रती । ४ अत्र प्राचीनकर्मस्तवकारादिभिः त्रयोदशमङ्गा प्रतिपाद्यन्ते । यतस्ते क्षपकाणामपि निद्राद्विकोदय स्वीक्रियते । दृश्यता प्राचीनकर्मस्तवे त्रयस्त्रिंशत्तमगाथापूर्वार्धं तट्टीका च ६ क्षपकाणा स्त्यानद्धिन्निक-क्षयानन्तर षड्विधा सत्ता बोद्धव्या । ८ अयं णठ J० प्रतिप्रेसकोष्ठा नास्ति । L D प्रती चास्ति । ९ ‘केनाऽपि विदुषा सप्ततिका मूलप्रकरणेऽर्थाहुसन्धानार्थं प्रक्षिप्तमिद गाथासूत्रम्, न तु मूलप्रकरणान्येद-मिति । एवमत्रेऽपि हेयम् ।

नीउच्चं वंधुदए, विगण्य चत्तारि दोहि संतेहि ।
बंधोवरमे उच्चस्स उदय दो-एकसंताओ ॥१८॥ (३०) [२६]

ठवणा—

धधो	नीय	नीय	नीय	उरुच	उरुच	०	०
उदओ	नीय	नीय	उरुच	नीयं	उरुच	उरुच	उरुच
सत्ता	नीय	२	२	२	२	२	उरुचं

सायाऽसाये दोसुं, चउभंगा वंध-उदइ दु दु संता ।
बंधोवरमे चउरो, संता दुसु दोन्नि दुसु एगं ॥१९॥ (३१) [२७]

ठवणा—

वधो	असा- य	असा- य	साय	साय	०	०	०	०
उदओ	असा- य	साय	असा- य	साय	असा- य	साय	असा- य	साय
सत्ता	२	२	२	२	२	२	१	१

एगो अ वंधपुव्वे, वंधे वंधुत्तरे य चउ चउरो ।
नरतिरियाणं आउयचउक्कबंधुदय-संतेहि ॥२०॥ (३२) [२८]
सुर-नरयाणं पण पण, वंधे वंधुत्तरे य दो दुन्नि ।
जम्हा न तेसिं वंधो, सुर-निरयाउण संभवइ ॥२१॥ (३३) [२९]

ठवणा—

देवाण भगा					मणुयाण भगा					तिरियाण भगा					नेरइयाण भगा													
वध.	०	म	ति	०	०	दे	म	ति	नि	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
उद	दे	दे	दे	दे	दे	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म	म
सत्ता	१	२	२	२	२	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कुल	१	२	३	४	५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१	२	३	४	५

मोहनीयस्थोत्तरप्रकृतीना वन्वस्थानानि दश—

वावोस एकवोसा, सत्तरसा तेरसेव नव पच ।

चउत्तिगदुग च एकक, वध^२हाणाणि मोहस्स ॥२०-१०॥ (३४) [३०]

१ 'चउभगो' इति J० प्रतिप्रेसकंप्य म् । २ 'हाणा' इति L D प्रती ।

मिच्छं कसायसोलम, भय कुच्छा तिण्ह वेयमन्नयरं ।
 हास-रइ इयरजुयलं च बंधपयडी य वावीसं ॥२२॥ (३५) [३१]
 इगवीसा 'मिच्छविणा, 'नपुबंधविणा उ सासणे वंधे ।
 अणरहिया^१सत्तरस न बंधि थिइं^२तुरिअठाणम्मि ॥२३॥ (३६) [३२]
 त्रियसंपरायऊणा, तेरस तह तइयऊण नव बंधे ।
 भय-कुच्छ-जुगलचाए, पण बंधे वायरे ठाणे ॥२४॥ (३७) [३३]
 तह पुरिस-कोह-ऽहंकार-^३माय-लोमस्स बंधवोच्छेए ।
 चउ-ति-दुग-एगबंधे, कमेण मोहस्स दम ठाणा ॥२५॥ (३८) [३४]

ठवणा-२२, २१, १७, १३, ९, ५, ४, ३, २, १ ॥ एवं वंधे १० ॥

मोहनीयस्योत्तरप्रकृतीनामुदयस्थानानि नव—

एगं च दो य चउरो, एत्तो एगाहिया दसुकुकोसा ।
 ओहेण मोहणिउजे, उदयट्टाणाणि नव^४होति ॥सू०-११॥ (३६) [३५]
 एगयरसंपरायं, वेयजुयं^५दोणिण जुयलजुयचउरो ।
 पच्चक्खाणेगयरे, छूढे पंचेव पयडीओ ॥२६॥ (४०) [३६]
 छ विडय ४ एगयरेणं, छूढे सत्त य दुगुंछि भय अट्ट ।
 अणि नव मिच्छे दसगं, सामन्नेणं तु^६नव उदया ॥२७॥ (४१) [३७]

ठवणा-१, २, ४, ५, ६, ७, ८, ९ १० ।

मोहनीयस्योत्तरप्रकृतीना सत्तास्थानानि पञ्चदश—

^१ 'अदृग-सत्तग-छ-चउ-तिग दुग एगाहिया भवे वोसा ।

तेरस^७ 'वारेक्कारस. एत्तो पंचाइएकूणा ॥सू०-१२॥ (४२) [३८]

१ "मिच्छूणा" इति L D प्रती । "मिच्छोणा" इति वा पाठ । २ अत्र पुं-स्त्रीवेदयोरन्यतरस्य वन्ध प्रक्षिप्यते । ३ "सत्तरस न बंधि थिइं" इति L D प्रती । अत्र केवल पु वेदो बध्यते । ४ उप-लक्षणात्तृतीयगुणस्थानके-ऽपि । ५ "माया०" इति वा । ६ "हुति" इत्यपि । ७ वेदत्रिकादन्यतरवेदयुतम् ॥ ८ "दस" इति तु J० प्रतिप्रेसकोप्याम् । तेनोदयपदेन नवापेक्षयोदयस्थानानि, दशापेक्षया तूदयप्रकृ-तय इति सम्भान्यते । ९ अत्राचार्यश्रीमलयगिरिपादा सप्रतिकाटीकायामित्थं क्रमभेदेन व्याख्यानयन्ति "तत्र तत्र चतुर्णां सव्यलनानामन्यतमस्योदये एकमुदयस्थानम्, तदेव वेदत्रयान्यतमवेदोदयप्रक्षेपे द्विकम्, तत्रापि हास्यरतिरुपयुगलप्रक्षेपे चतुष्कम्, तत्रैव भयप्रक्षेपात् पञ्चकम्, जुगुप्साप्रक्षेपात् षट्कम्, तत्रैव चतुर्णां प्रत्याख्यानावरणकषायाणामन्यतमस्य प्रक्षेपे सप्तकम्, तत्रैव चाऽप्रत्याख्यानावरणकषाया-णामन्यतमस्य प्रक्षेपेऽष्टकम्, तत्रैव चतुर्णामन्तानुबन्धिकषायाणामन्यतमस्य प्रक्षेपे नवकम्, तत्रैव मिथ्यात्वप्रक्षेपे दशकम् ॥" (कर्मग्रन्थ द्वितीयविभागपत्र १६२) १० 'अदृयसत्तय" इति । ११ 'वारि-क्कारस्" इति L. D प्रती ।

- सुत पयड्ढिठाणाणि ताणि मोहरस 'होति पन्नरस ।
 वधोदयसते पुण, भगविगप्पे बहू जाण ॥सू०-१३॥ (४३) [३९]
- नव नोकसाय सोलस, कमाय दंसणत्तिगं ति अडवीसा ।
 मम्मत्तुच्चलणेणं, मिच्छे मीसे य सगवीसा ॥२८॥ (४४) [४०]
- छव्वीसा पुण दुविहा, मीसुच्चलणे अणाडमिच्छत्ते ।
 सम्म^१दिट्ठडवीसा, अण ४ कखए होइ चउवीसा । २६॥ (४५) [४१]
- मिच्छे मीमे सम्मे ३, खीणे ति-दुवीस एक्कवीसा य ।
 अट्टकसाए तेरम, नपुक्खए होइ वारसगं ॥३०॥ (४६) [४२]
- ^३थीवेयि खीणिगारस, हासाई ६ पंच चउ पुरिसखीणे ।
 कोहे माणे माया, लोभे खीणे य कमसो उ ॥३१॥ (४७) [४३]
- ^५तिग दुग एग अमंतं, मोहे पन्नरस संतठाणाणि ।
 वंधोदयसंवेहे भंगविगप्पे बहू जाण ॥३२॥ (४८) [४४]
- ठवणा-२८, २७ २६, २४ २३, २२ २१ १३. १२. ११, ७, ४ ३ २, १।
 'बंधंसुदए पडुच्चा, जइवि पुणो मोहविवरणं वुत्तं ।
 तह वि य सुहगुणत्थं सुहसुमरणहेउ एगत्थ ॥३३॥ (४९) [४५]
- मोहलीयस्य बन्धस्थानाना मङ्गः -
 छव्वावीसे चउ इगवीसे सन्नरसनेरसे दो दो ।
 नवबधए उदोत्ति उ, एक्के ^७मओ परं भगा ॥सू०-१४॥ (५०) [४६]
- वेयइजुयलोहि चरिया, भंगा छुच्चेव चउर नपुउणा ।
 जुयलोहि चउसु दो दो, सेसा एक्केक्क संभविया ॥३४॥ (५१) [४७]

ठवणा—	गुण—	१	२	३	४	५	६	७	८	९ अनिवृत्ति०				
	ठाणाणि	मि	सा	मिश्र	अवि	देश	प्र०	अप्र	अपू०	१	२	३	४	५
	वधट्टाणाणि	२०	२१	१७	१७	१३	६	६	६	५	४	३	२	१
	भगा०	६	४	२	२	२	२	१	१	१	५	५	१	१

१ 'हुत्ति' इति । २० "दिट्ठिडवी०" इति प्रती ३ "थीवेयखीणिगारस" इत्यापि । ४ "तिगदुगएग-
 असत्त" इति वा, 'तिग दुग य रुत' इति L D प्रती । ५ "बंधसगुण पडु" इति प्रती । "बधुदयगुण"
 इति L D प्रती । ६ "त्रि दुपिण ६" इति । ७ "मकारस्तलाक्षणिक्" इति सप्ततिकाटीकायाम् ।

मिच्छाद् पमत्ता जुयलगया वेयभंग उट्ठंति ।

बुच्छिन्नश्रद्धसोगा पमत्ति उवरिं तु एगेगा ॥ (५२)

^१एव गुणद्व्याणेषु बधभगा ॥२५॥ इथाणि उदयठाणा ग उदयभगड्विवरणमाह-
मोहनीयस्य बन्धस्थानेपूदयस्थानानि-

दस बावीसे नव इगर्वासे सत्ताद् उदयठाणाणि ।

छाई नव सत्तरसे तेरे पचाद् अट्टेव ॥ सूत्र ३-१५ ॥ (५३) [४८]

चत्तारि आद् नवबधएसु उक्कोस सत्त उदयसा ।

पचविह्वधए पुण, उदओ दोणहं मुणेयव्वो ॥ सूत्रम्-१६ ॥ (५४) [४९]

एत्तो चउबंधाई, एक्केकुदया हवंति सव्वे वि ।

बधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि वा होज्जा ॥ सू०-१७ ॥ (५५) [५०]

ठवणा-

बध	२२	२१	१७	१३	६	५	४	३	२	१	०
उदय	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७

मिच्छ-तिकसाय-वेयं, जुयलन्नयरेण २ सत्तगं तत्थ ।

वेयतिग-चउकसाए, जुयलन्नयरेण चउवीसा ॥३५॥ (५६) [५१]

वेएसु चउकसाया, कोहाइकमेण उदयओ होति ।

एक्केक्कम्मि चउचउरो, तिग-चउगुणिया उ वारसगं ॥३६॥ (५७) [५२]

ते हास-ईउदए, अरई-सोगपरियत्तउदए वा ।

दो मिलिया चउवीसं, उदयगया मोहणीयस्स ॥३७॥ (५८) [५३]

एव सव्वत्थ चउवीसिया चारणा ।

सत्तोदयम्मि एगा, अण-भय-कुच्छाण एगयरख्वेवे ।

अट्टुदओ तिन्नि तहिं, दुगसंजोगम्मि तह नवए ॥३८॥ (५९) [५४]

तिगपक्खेव दसेगा, चउसु वि उदएसु अट्टु चउवीसा (मिच्छे) ।

सासणमीसे तिगतिग भयकुच्छदुगेहि चउचउरो ॥३९॥ [५५]

तिगपक्खेव दसेगा चउसु वि उदएसु अट्टुचउवीसा ।

मिच्छम्मि गुणद्व्याणे सेसगुणाणं च एम कम्मो ॥ (६०)

तिगतिग उदयद्व्याणा सासणमिस्से य सत्तअडन्नवगं ।

- एगदुगएगकमसो चउरो चउरो च पत्तेअं ॥ (६१)
- छलउदयम्मी एगा भय-कुच्छा-सम्मखेवएगयरे ।
सत्तोदयम्मि तिन्नि उ, दुग-तिगपक्खेव मिच्छसमा ॥४०॥ (६२) [५६]
- पत्तेय अट्ट अट्ट उ अविरय-देसे पमत्त-अपमत्ते ।
अप्पुव्वे पुण चउरो, सव्वे वावन्नमिच्छाई ॥४१॥ (६३) [५७]
- चोचगो आह-
अणउदयरहियमिच्छो कम्मि जिए कित्तियं च से कालं ।
आह-तदुवलगसम्मदिट्ठिस्स मिच्छुदयआवलियकालं ॥४२॥ (६४) [५८]
- चउवीससंतकम्मी, मिच गओ अणंतिणो बंधे ।
मुत्तु अवाहाकालं तदु उवरिं निक्खिखे दलियं ॥४३॥ (६५) [५९]
- कहणंतबंधिउदओ आवलियाउवरि वुच्चए एवं ।
सव्वं पडिग्गहंते अन्नकसायाण मणे ॥४४॥ (६६) [६०]
- जं पढमसमयदलियं, संकंतं तं च आवलियउवरि ।
उदयंसे आगच्छइ, तम्मी से अट्ट उदओ उ ॥४५॥ (६७) [६१]
- अन्नं च तम्मि समए, उदीरणोवट्टणागयं दलियं ।
उदयम्मि खिवइ जीवो, अणंतिणो तेण आवलिआ ॥४६॥ (६८) [६२]
- तं चेव सत्तगं भय-दुगुच्छ-अणसहिय अट्टनवदसगं ।
इत्थं चउवीसा होंति तिन्नि तन्नेग जहसंखं ॥४७॥ [६३]
- चउवीसा पुव्वकमा कमेण उदएण जहसंखं ॥ (६९)
- पुव्वुत्तसत्तगा मिच्छफेडणे खेवणे यऽणंताणं ।
सत्त य सासाणे तह-ऽड नव य भयकुच्छपक्खेवे ॥४८॥ (७०) [६४]
- वेयतिकसायमीसं, जुयलन्नयरेण सत्त मीसम्मि ।
भयकुच्छाणन्नयरे, एगदुगेणं च अट्ट नव ॥४९॥ (७१) [६५]
- तिगसंपराय ३ वेयं १ जुयलन्नयरेण छच्च पयडीओ ।
भयकुच्छसम्मखेवे अविरयसत्तऽट्ट नव होंति ॥५०॥ (७२) [६६]
- ^३अजउदयठाणचउरो (व्व) देसविरए य सव्वविरए य ।
नवरं कसायहाणी एक्केक्कं जाण जहरंखं ॥५१॥ (७३) [६७]

इगसंपरायवेयं जुयलन्नयरेण चउरउदओ उ ।
 अप्पुन्वे भयकुच्छा एगदुगेणं च पण छक्कं ॥५२॥ (७४) [६८]
 इगवेयइगकसाए उदओ ^१दोण्हं तु वायरकसाए ।
 एक्कुदयवेयखीणे वायरसुहुमाण ^२दोण्हं पि ॥५३॥ (७५) [६९]
^३उदया इच्चाइ पए भणिया उवसंति तिन्नि संताओ ।
 अडचउवीसउवसमे इगवीसं खंडसेटीए ॥५४॥ (७६) [७०]
 वावन्नं ५२ चउवीसा गुणठाण पडुच्च इत्थ उट्टुविया ।
 बंधुदए पुण चत्ता ४० सामन्न पडुच्च उट्टंते ॥ (७७)

मोहनीयस्योदयस्थानाना भङ्गा —

एक्कगल्लक्केक्कारस दस चउक्कइ चेव ।
 एए चउवीसगया वारदुगिक्कम्मि एक्कारा ॥५०-१८॥ (८१) [७१]

एईए विवरण जतगाहाओ—

एगो ^४दसोदओ नवुदयचउर तह अड पंच सग छक्कं ।
 छत्तिग पण दुग चउएग हुन्ति उदएसु ठाणाइं ॥५५॥ (८२) [७२]
 दसगम्मि एग तिग पढमनवगि सेसेसु नवसु ३ एगेगं ।
 पढमे अट्टुगि तिन्नि उ दुग दुग तिग एग चउवीसा ॥५६॥ (८३) [७३]
 तिसु सत्तगेसु एगेग तिन्नी तिन्नि उ छट्टए एगा ।
^५सन्वुदए चउवीसा, तह एग तिगं तिगं छदुगे ॥५७॥ (८४) [७४]
 पणउदइ एग १ वीयम्मि, तिन्नि चउरोदयम्मि एगा उ ।
 वार दुगोदयभंगा एक्कोदय होंति एक्कारा ॥५८॥ (८५) [७५]

गुणठाणा	मि	मि	सा	मी	अवि	मि.	सा	मी.	अवि	दे.	मि.	सा	मी	अवि	दे	स
उदयठाणा	१०	६	६	६	६	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७
चउवीसिया	१	३	१	१	१	३	२	२	३	१	१	१	१	३	३	१

१-२ "दुन्ह" इति L D प्रतौ । अय पाठ J. प्रतिप्रेसकोप्यामस्ति, ३ "उदयाभावे वि वाहि-
 ज्जिते-इइ सुत्ताओ मणिया उवसते तिन्नि चेव सताओ" इति L D प्रतौ । ४ "दसोदउ नवोदय" इति
 वा । ५ "सन्वुदए छत्तिगे ॥" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । "सत्तुदए" इत्यपि वा L D. प्रतौ माति ।
 तथा J प्रतावपि स्यात् ।

अ	वि	दे	स	दे	स	स	दुगोदए भगा १२
६	६	६	५	५	४	४	एकोदए भगा ११
१	३	३	१	३	१	१	एत्र चउवीसा ४०+भगा २३

इय मोहरायसेन्ने चालीसकुडंय ४०वग्ग किल भिच्चा ।
 वग्गे वग्गे य तथा चउवीसकुडुंयिया अत्थि ॥५९॥ (५८) [७६]
 तेहि य जगडिज्जंतं सव्वजगं कलकलेड अणवरयं ।
 'मोत्तुमपमत्तसिद्धा इय एवं मोहिया जीवा ॥६०॥ (७६) [७७]
 उदयपया य कुडुंवी माणुसरंखा य इत्थ किल विदा ।
 सूरा य पयहमेया इयरि अमखा मुण्येव्वा ॥६१॥ (८०) [७८]

गुणठाणा	मिच्छ०	सासण०	मिस्स०	अविरय०	देस०
वधठाणा	२२	२१	१७	१७	१३
उदयठाणा	७ ८ ६ १०	७ ८ ६ ९	७ ८ ६	६ ७ ८ ६	५ ६ ७ ८
चउवीसिया	१ ३ ३ १	१ २ १ १	२ १	१ ३ ३ १	१ ३ ३ १
चउवीसियमखा	८	४	४	८	८

प्रमत्त०	अपमत्त०	अपुण्व०	अनिवृत्ति०	सू	उप०
६	६	६	५ ४ ३ २ १	०	०
४ ५ ६ ७	४ ५ ६ ७	४ ५ ६	२ १ १ १ १	१	०
१ ३ ३ १	१ ३ ३ १	१ २ २	१ २ ४ ३ २ १	१	
८	८	४			

^३उदयपए पयविंदसखामाह—

१ "सुत्त अ०" इति L D. प्रती । २ "उदयपयपयकुडु वी" इति L D प्रती । ३ L D प्रतावय पाठ, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

- नवतेसोयसएहि उदयविगप्पेहिँ मोहिया जीवा ।
उणहत्तरि सीयाला पयविंदसएहिँ विन्नेया ॥सू०-१६॥ (८६) [७६]
चत्ता चउवीसाणं चउवीसगुणा य होति नवसङ्का ।
तेवीसभंग मिलिया तेसीया नवसया होति ॥६२॥ (८७) [८०]
वेयतियचउकसाए अन्नयरुदएण भंगवारभंगं ।
पणवंधे दुगउदओ चउवंधार्ई उ एक्कुदया ॥६३॥ (८८) [८१]
चउवंधे चउमंगा तिगभंगाईण भंगया छक्कं ।
उवरयवंधे एगो एक्कुदएक्कारभंगाओ ॥६४॥ [८२]
जे वधइ ते वेयइ वंधे य पडुच्च इय दसगं ॥ (८६)
पयाणं सखा वुत्ता । इयाणि पयविंदाण सखा कहिज्जइ-
उवरयवंधे एगो तुरियकसायस्स सुहुमकिट्टुदए ।
संखा विवक्खिया इह एक्कुदएक्कारभंगाओ ॥ (९०)
जत्थुदए चउवीसा जत्तियसंखा स एव गुणकारो ।
चउराइदसंतुदया गुणिनियचउवीससंखाए ॥६५॥ (९१) [८३]
दस१०चउपन्न५४ङ्कासी८८सत्तरि७०वायाल४२वीसर०चउ४संखा ।
दुगउदयम्मी एगा एक्कुदइक्कारभंगाओ ॥६६॥ (९२) [८४]
चउवीसगुणा काउं पत्तेयं तेसि होइ इय संखा ।
चालीसा दोन्नि सया२४०वारस छन्नउय १२६६ तह अन्ने ॥६७॥ (९३) [८५]
वारहिया इगवीसं२११२सोलस आसी य^१६८०^५सहस अट्टहिया^१००८
चउअसिया ४८०छन्नवई९६चउवीसि२४कार११भंगा ॥६८॥ (९४) [८६]
एव सव्वविसुद्धेण ६६४७ ।
^२उणहत्तरि छत्तीसा, एक्कारसभंग मिलिय सीयाला ।
अन्ने उ चउरवंधे दुगोदयं विति किल किचि ॥६९॥ (९५) [८७]
^६नवपंचाणुसएहि उदयविगप्पेहिँ मोहिया जीवा ।
अउणत्तरि एगुत्तरि पयविंदसएहि विन्नेया ॥सूत्रम्-२०॥ (९६) [८८]
पुंवेयवंधव्रोच्छेय आवली एक्क दोणह उदओ उ ।

१-२ 'हुति' इति L D प्रती । ३ "दुन्नि" इति L D प्रती । ४ "दस य अट्टहिया १००८ । इति उ प्रतिश्रेसकोप्याम् । ५ "उणहत्तरि सीयाला पयविंदाण तु हुन्ति मोहस्स" इति L D प्रती । ६ "नवपंचाणुसएहुदय" इत्यपि ।

- तेसि मए पयवारसविंदा चउवीस 'तइ अहिया । ७१॥ (९७) [८९]
- मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि-
तिन्नेव उ बावीसे इगवीसे अडवीससत्तरसे ।
- छुच्चेव तेरनव एसु पंचेव ठाणाणि ॥सूत्रम्-२१॥ (६८) [६०]
- २ संतट्टाणा संखा बंधे बंधे पडुच्च इह भणिया ।
- तह वि य सुहगुणणत्थं गुणउदय पडुच्च संवेहो ॥७२॥ (९९) [६१]
- बंधगुणठाणगेषु उदयट्टाणाउ सुत्तभणियमवि ।
- पुणरवि सुमरणहेउं, तह उदए संतसंखाओ ॥७३॥ (१००) [६२]
- चउठाणा मिच्छत्ते सासणमिस्से य तिगतिगं जाण ।
- अजयाइ अप्पमत्तं चउचउठाणा उ उदयाण ॥७४॥ (१०१) [६३]
- सत्तोदय अडवीसा सेसेसुदएसु तिगतिगं जाण ।
- अडसत्तछक्कमहिया वीसा बावीसबंधम्मि ॥७५॥ (१०२) [६४]
- इगवीसे अडवीसा एक्का सत्ताइतिसु वि पत्तेयं ।
- मीसम्मि संतठाणा अडसगचउअहियवीसाउ ॥७६॥ [६५]
- मीसम्मि संतठाणा तिगतिग उदएसु पत्तेयं ॥ (१०३)
- अडवीसा सगवीसा सम्मुव्वलणे य मीसउदयम्मि ।
- चउवीससंतठाणं सेट्ठि उवरिं पडंतस्स ॥ (१०४)
- अजओदयम्मि पढमे अडचउइगअहियवीस २८, २४ २१, इं ।
- बीए तइए ते च्चिय तिवीसवावीसंजुत्ता २८, २४, २३, २२ २१ ॥७७॥ (१०५) [६६]
- इगवीस तुरिए २८, २४, २३, २२ जेणं सो वेयगस्स उदओ उ ।
- एवं देस-पमत्ता-ऽपमत्तयाणं च दडुव्वं ॥७८॥ [६७]
- इगवीसवज्जतुरिए २८, २४, २३, २२ चउरो ठाणा उ तत्थ संतम्मि ।
- सो वेयगदिट्ठीणं इगवीसा खवगदिट्ठीणं ॥ (१०६)
- तिगपणपणचउसंता सव्वे सत्तरसठाणसंखाए ।
- एवं देसपमत्तापमत्तयाण च दडुव्वं ॥ (१०७)
- देसविरओ य दुविहो तिरिमणुसामन्नपंचठाणाइं ।
- अडवीसा चउवीसा तिरियाणं देसविरयाणं ॥७९॥ (१०८) [९८]
- इगवीसा बावीसा तिरियाण भोगभूमि संभवड ।

१ "इत्थहिया" इति L D प्रतौ । २ 'सतसठाणसखा' इति L D प्रतौ । ३ "सुत्तभणियमवि"
इति, J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ "उदया" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् ।

मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि गुणस्थानानि प्रतीत्य बन्धोदयसत्तासवेधश्च [१५

'जत्थ न विरईभावो ते वि य मणुखवगआयाआ ॥८०॥ (१०९) [१९]

अडचउइगेण अहिया वीसा अप्पुव्वि तिसु य पत्तेयं ।

उदएसुं सत्ताओ, वायररागे अओ वोच्छं ॥८१॥ (११०) [१००]

पंचविहचउविहेसुं ललक्कसेसे जाण पंचेव ।

पत्तेयं पत्तेय चत्तारि य बंधवोच्छेए ॥सुत्रम्-२२॥ (१११) [१०१]

पणगाइ५,४,३,२,१एगु संते तह य अवंधम्मि तिन्नि पत्तेयं ।

चउरड्डक्कवीसा २४,२८, २१,उवसमसेटिं पडुच्चेए ॥८२॥ (११२) [१०२]

इगवीसा खवगम्मि वि पणगे बंधम्मि किंचि कालमिह ।

मज्झिन्नड्डकसाएक्खयतेरस १३नपुमि वारसगं १२ ॥८३॥ (११३) [१०३]

थीवेयखीणिगारस पणगे किंची चउक्कबंधेवि ।

हासाइखीणि पणगं चउरो पुरिसम्मि चउबंधे ॥८४॥ (११४) [१०४]

तियवन्धे वि य संता संजलणचउक्क आवलिदुगूणा ।

कोहे खयम्मि तिन्नि उ ते चेव दुगम्मि खणमित्तं ॥८५॥ (११५) [१०५]

माणे खयम्मि तिन्नि उ तत्थेव दुगम्मि जाव अंतपुहू ।

ते चेव एकबंधे जाव न खीणा तिजयमाया ॥८६॥ (११६) [१०६]

मायाए खीणाए लोभो बंधम्मि लोभसंता य ।

अबंधम्मि वि लोभो सन्वे तियजुत्तठाणाइं ॥८७॥ (११७) [१०७]

सत्ताठाण०	३	१	३	५	५
गुणट्टाण०	मिच्छइट्ठि	सासण०	मिस्स०	अविरय०	देसविरय०
बन्धट्टाण०	२२	२१	१७	१७	१३
उदयट्टाण०	७ ८ ९ १०	७ ८ ९	७ ८ ९	६ ७ ८ ९	५ ६ ७ ८
सत्ताठाणाणि	२५	" "	" "	" "	" "
	२७	" "	२७	" "	" "
	२६	" "	२४	" "	" "
				२१	" "
				२३	" "
				२२	" "
सन्वाणि	१०	३	६	१७	१७

१ "न" इति L D प्रती । २ "चउअट्टएक्क" इति L D प्रती । ३ "लोभे" इति L D प्रती ।

तेसि मए पयवारसविंदा चउवीस 'तइ अहिया । ७१॥	(१७)	[८९]
मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि-		
तिन्नेव उ वावीसे इगवीसे अइवीससत्तरसे ।		
छ्चवेव तेरनवबंधएसु पंचेव ठाणाणि ॥सूत्रम्-२१॥	(६८)	[६०]
२ संतट्टाणा संखा वंधे वधे पडुच्च इह भणिया ।		
तह वि य सुहगुणणत्थं गुणउदय पडुच्च संवेहो ॥७२॥	(१९)	[६१]
बंधगुणठाणणोसुं उदयट्टाणाउ ३सुत्तभणियमवि ।		
पुणरवि सुमरणहेउं, तह ४उदए संतसंखाओ ॥७३॥	(१००)	[६२]
चउठाणा मिच्छत्ते सासणमिस्से य तिगतिगं जाण ।		
अजयाइ अप्पमत्तं चउचउठाणा उ उदयाण ॥७४॥	(१०१)	[६३]
सत्तोदय अइवीसा सेसेसुदएसु तिगतिगं जाण ।		
अडसत्तछक्कमहिया वीसा वावीसबंधम्मि ॥७५॥	(१०२)	[६४]
इगवीसे अइवीसा एकका सत्ताइतिसु वि पत्तेयं ।		
मीसम्मि संतठाणा अडसगचउअहियवीसाउ ॥७६॥		[६५]
मीमम्मि संतठाणा तिगतिग उदएसु पत्तेयं ॥	(१०३)	
अइवीसा सगवीसा सम्भुव्वलणे य मीसउदयम्मि ।		
चउवीससंतठाणं सेट्ठिं उवरिं पडंतस्स ॥	(१०४)	
अजओदयम्मि पढमे अडचउइगअहियवीस २८, २४ २१, ठाणाइं ।		
वीए तइए ते च्चिय तिवीसवावीसंजुत्ता २८, २४, २३, २२ २१॥७७॥	(१०५)	[६६]
इगवीस वज्ज तुरिए २८, २४, २३, २२ जेणं सो वेयगस्स उदओ उ ।		
एवं देस-पमत्ता-ऽपमत्तयाणं च दट्टुवं ॥७८॥		[६७]
इगवीसवज्जतुरिए २८, २४, २३, २२ चउरो ठाणा उ तत्थ मंतम्मि ।		
सो वेयगदिट्ठीणं इगवीसा खवगदिट्ठीणं ॥	(१०६)	
तिगपणपणचउसंता सव्वे सत्तरसठाणसंखाए ।		
एवं देसपमत्तापमत्तयाण च दट्टुवं ॥	(१०७)	
देसविरओ य दुविहो तिरिमणुसामन्नपंचठाणाइं ।		
अइवीसा चउवीसा तिरियाण देसविरयाणं ॥७९॥	(१०८)	[९८]
इगवीसा वावीसा तिरियाणं भोगभूमि संभवइ ।		

१ "इत्थहिया" इति L D प्रतौ । २ "सत्तसठाणसंखा" इति L D प्रतौ । ३ "सुत्तभणियमवि" इति, J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ "उदया" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् ।

मोहनीयस्य बन्धस्थानेषु सत्तास्थानानि गुणस्थानानि प्रतीत्य बन्धोदयसत्तासवेधश्च [१५

'जत्थ न विरईभावो ते वि य मणुखवगआयाआ ॥८०॥ (१०९) [१९]

अडचउङ्गेण अहिया वीसा अण्णुच्चि तिसु य पत्तेयं ।

उदएसुं सत्ताओ, वायररागे अओ वोच्छं ॥८१॥ (११०) [१००]

पंचविहचउविहेसुं ऋच्छक्कसेसे जाण पचेव ।

पत्तेयं पत्तेय चत्तारि य बंधवोच्छेए ॥सत्रम्-२२॥ (१११) [१०१]

पणगाइ५,४,३,२,१एगु संते तह य अवंधम्मि तिन्नि पत्तेयं ।

चउरदुइक्कवीसा २४, २८, २१, उवसमसेहिं पडुच्चेए ॥८२॥ (११२) [१०२]

इगवीसा खवगम्मि वि पणगे बंधम्मि किंचि कालमिह ।

मज्झिन्नदुक्काएक्खयतेरस १३नपुमि वारसगं १२ ॥८३॥ (११३) [१०३]

थीवेयखीणिगारस पणगे किंची चउक्कबंधेवि ।

हासाइखीणि पणगं चउरो पुरिसम्मि चउबंधे ॥८४॥ (११४) [१०४]

तियबन्धे वि य संता संजलणचउक्क आवलिदुगूणा ।

कोहे खयम्मि तिन्नि उ ते चेव दुगम्मि खणमित्तं ॥८५॥ (११५) [१०५]

माणे खयम्मि तिन्नि उ तत्थेव दुगम्मि जाव अंतमुहू ।

ते चेव एकबंधे जाव न खीणा तिजयमाया ॥८६॥ (११६) [१०६]

मायाए खीणाए लोभो बंधम्मि लोभसंता य ।

अबबंधम्मि वि लोभो सन्वे तियजुत्तणाइं ॥८७॥ (११७) [१०७]

सत्ताठाण०	३	१	३	५	५
गुणट्टाण०	मिच्छद्विट्ठि	सासण०	मिस्स०	अविरय०	देसविरय०
बन्धट्टाण०	२२	२१	१७	१७	१३
उदयट्टाण०	७ ८ ९ १०	७ ८ ९	७ ८ ९	६ ७ ८ ९	५ ६ ७ ८
सत्ताठाणणि	२८	" "	" "	" "	" "
	२७	" "	२७	" "	" "
	२६	" "	२४	" "	" "
				२१	" "
				२३	" "
				२२	" "
सन्वाणि	१०	३	६	१७	१७

१ "तत्थ" इति L D प्रती । २ "चउअट्टएक्क" इति L D प्रती । ३ "लोभे" इति L D प्रती ।

सत्ताठाण०	५	५	३	६	६	५	५	५	४	३		
गुणट्टाण	पमत्त		अपमत्त०	अपुव्व			अनियट्टि०			सु	उ०	
वधट्टाण०	९		९	६			५	४	३	२	१	०
उदयट्टाण०	४	५	६	७	४	५	६	७	४	५	६	७
सत्ताट्टाणाणि	२५	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२४	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२५	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२३	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२२	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२१	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
	२०	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"	"
सव्वाणि	१७		१७	६			२७			४	३	१३२

गुणठाणगउदएसु संतट्टाणाण संख इय बुत्ता ।

गुणठाणगपत्तेयं, 'सव्वसंखा य इय भणिमो ॥८८॥ (११८) [१०८]

दसतिगनवमिच्छाड्सु, अजयाई पचगम्मि सगसयरी ।

छच्छक्क पणचउक्कम्मि पणपणसेसेसु चउतिग अवंधे ॥८९॥ (११९) [१०९]

'मोहे सवेहभणणा तेत्तीससय तु संतठाणाण ।

गुणठाणगे पडुच्चा वंधे पुग अट्ट^३नउई य ॥९०॥ (१२०) [११०]

दसतिगवीसा सत्तरस दुसु य पत्तेय संतठाणाडं ।

मगवीस पचगाई चउर अवंधम्मि य ठाणाइं ॥९१॥ (१२१) [१११]

सगवीस मीसगम्मी सेसा सामन्न चउसु उदएसु ।

इय अजयमीसगाणं वीसं सत्तरमवंधम्मि ॥९२॥ (१२२) [११२]

दसनवपन्नरसाई धधोदयसनपयट्टिठाणाणि ।

भणियाणि मोहणिज्जेएत्तो नाम पर वोच्छ ॥९३॥ (१२३) [११३]

१ 'सव्वसख' इति L D प्रती । २ "मोहसवे०" इति J प्रतिप्रेसकोपयाम् । ३ "नउई ॥१२०॥" इति L D प्रती ।

दसनवपण्णरसाई इच्चाई विवरियं समासेण ।

इत्तो य नामबंधा तेवीसाईणि विवरेमि ॥९२॥ (१२४) [११४]

नाम्न उत्तरप्रकृतीना बन्धस्थानानि

तेवीसपण्णवीसा छ्वी अट्टवीसगुणतीसा ।

तीसे णिसमेग बंधंटाणाई नामस्स ॥सू०-॥१२४॥ (१२५) [११५]

ठवणा-२३, २५ २६, २८ २९, ३०, ३१, १,

वन्न१रस१गंध१फासा१ तेयग१कम्मडग१अगुरु१उववायं ।

निम्मेण१-नाम-धुवया६ सेसा अडवन्नअधुवाओ ॥९३॥ (१२.) [११६]

गड४ अणुपुव्वीचउ २ छ उ मंधयणा६गी६ तसाइवीमं२०च ।

जाड५सरीरं३ गतिगं३ परवाचउ४ तित्थ विहगदुग (१२७)

^३अडवन्न अधुवाओ-

तगयणुपुव्विजाई थावरमाई उ दूमरविहूणा ।

धुववध१हुंडउरलं तेवीसअपज्जथावरए ॥९४॥ (१२८) [११७]

सासपरघायखेवे पणवीसा सुहुमवायराणं तु ।

छव्वीस आयवेण उज्जोअपरित्ति बंधत्तिगं ॥९५॥ [११८]

अपजत्तं अवणित्ता पज्जत्तगखेव पज्जपाओगा ।

सासपरघायखेवे सो बंधो पज्जपाओगो ॥९६॥ [११९]

अपजत्तं अवणित्ता पज्जत्तगखेव सा उ तेवीसा ।

सासपरघायखेवे पणवीसा होइ पगईणं ॥ (१२९)

पुढवाइवायराणं पज्जाणं सुहुमवायराणं तु ।

छव्वीस आयवेणं अहवा उज्जोयपरियत्तो ॥ (१३०)

^४वायरएणिंदिपाडग्गा एसा ॥ बंधत्तिग थावरणेय ॥

^५सेसा बंधा य इय नेया ॥

गडजाडल्लेयपुव्वी धुवबंधा हुंडउरलदुगथूलं ।

दूसररहिया अथिराड ५ तसअपज्जत्तपत्तेयं ॥९७॥ (१३१) [१२०]

वीया पणवीसेसा तसपाउग्गा तथा य सरसासे ।

विहगपरघायखेवे उणतीसा तीस उज्जोए ॥९८॥ (१३२) [१२१]

१ "एत्तो य" इति L D प्रतौ । २ "ठाणाणि" इति वा । ३-४ "अय पाठ L D प्रतावदित्ति

J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ५ "अय पाठ L D प्रतौ नास्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या चास्ति ।

पणवीम अपज्जाण उणतीसा तीस पज्जपाओगा ।
 वित्तिचउरिंदियपंचिदियाण तिरियाण वंधे उ ॥१९६॥ (१३३) [१२२]
 पणवीसा गुणतीसा तिरियसमा तीस तित्थसंजुत्ता ।
 वंधतिगं मणुजोगं नेरडयअसुद्धअडवीसा ॥१००॥ (१३४) [१२३]

सा चेय—

नरयदुगं २ परघायं १ सासं १ दुहखगड १ सयल १ हुंडं च १ ।
 धुवबधि ६ तमचउक्कं २ वेउच्चिदुगं २ च अथिराई ६ ॥१०१॥ (१३५) [१२४]
 देवदुग २ परघायं १ सासं १ सुभखगड १ सयल १ चतुरंसं १ ।
 धुवबंधी ६ तसदसगं १ वेउच्चिदुगं २ च अडवीसा । १०२॥ (१३६) [१२५]
 मा तित्थे उणतीसा ऽऽहारदुगे तीस तिसु य इगतीसा ।
 चउठाणा देवाण सेट्ठिदुगे एग जसकित्ती ॥१०३॥ (१३७) [१२६]
 षडपणव १ सोलस नव षाणवई सया उ अडयाला ।
 ईयालांतर छायालसया एककेक्क बधविही ॥सू०-२५॥ (१३८) [१२७]

ठवणा—	बधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
	भगा	४	२५	१६	६	६२/८	४६४१	४	१

वायरपत्तेगियरे भगा चत्तारि बंधतेवीसे ।
 पणवीसे पणवीसा छव्वीसे भंगसोलसग ॥१०४॥ [१२८]

ठवणा—

वा	वा	सु	सु
प०	सा	प	सा
१	२	३	४

एस गमो सव्वेसिं भगाणं चारणे होइ ॥ (१३९)
 वायर-थिर-पत्तेया सुभ-जस-पडिक्खभंगवत्तीसा ।
 साहार-सुहमि जसवज्ज वीस वारस असभविया ॥१०५॥ (१४०) [१२९]

वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर	वादर
पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	पत्तेअ	साधा	साधा	साधा	साधा	साधा	साधा	सा	सा
थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर	थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम	
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	
१	२	३	४	५	६	७	८	०	९	०	१०	०	११	०	१२	

सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहुम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम	सुहम
पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	पत्ते	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०	सा- धा०
थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर	थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	स
०	१३	०	१४	०	१५	०	१६	०	१७	०	१८	०	१९	०	२०

१साहारणस्स वा सुहमस्स वा इोण्हं वा जसेण सह बधो न भवइ ।

असमत्तमणुय [तह] वित्तिचउपणिंदितिरियाण बंधि पणवीसे ।

असुहपयडीण जेणं न तेसि परियत्ति एककेको ॥ (१४१)

असमत्तमणुयवित्तिचउपणिंदितिरि पणवीसि तह पंच ।

असुभपयडीण जेणं न तेसि परियत्ति संभवइ ॥१०६॥

[१३०]

उज्जोय—आयवेणं थि भजससेयरेहि सोल ।

उज्जोवेणं अट्ट उ आयवपरियत्ति अट्टेव ॥१०७॥ (१४२) [१३१]

ठवणा—

थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
१	२	३	४	५	६	७	८

एसा वि ठवणा इह वायरएगिदिविगलदेवाणं ।

तह तीसे मणुजोगे पत्तेयं जस्स संभविया ॥१०८॥ (१४३) [१३२]

थिरसुभजसइयरेहिं वितिचउरिंदीण अट्ट पत्तेयं ।

उणतीसतीसबंधे अडवीसे अट्ट देवाणं ॥१०९॥ (१४४) [१३३]

ठवणा—

वधठा०	२५	२८	२६	३०
वेइ०	१		८	८
तेइ०	१		८	८
चउ०	१		८	८
देव०		८		

तीसा य मणुयजोगा उणतीसा तीस एगतीसा य ।

देवाण अट्ट अट्ट य एक्केक्को भंगमेएसु ॥११०॥ (१४५) [१३४]

ठवणा—

जोग	मणु	देव०	
वधो	३०	२९	३०
भगा	८	८	१

थिरछक्कं सुभखगई सप्पडिवक्खेहि चारिया संता ।

गुणिया संघयणा-ऽऽगीहिं भंगया सयलतिरियाणं ॥१११॥ (१४६) [१३५]

१ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति । २ "संघयण तद्वागिईहिं
ति L D प्रतौ ।

य ८ ॥१४६॥"

चत्तारि सहस्सा छस्सयाउ अट्टुत्तराउ गुणतीसे ।

एवं उज्जोयतीसे मणुए उणतीसि ते चेव ॥११२॥ (१४७) [१३६]

थिर	सुम	सुभग	सुसर	आइज्ज	जस	सुभख०	सघ०	सठा	बधठा०	२५	२६	३०
ऽथिर	न्सुभ	दुभग	दूसर	भणाइज्ज	ऽजस	ऽसुभख०	१२८ ×६	७६८ ×६	तिरि०	१	४६०८	४६०८
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	७६८	४६०८	मणु०	१	४६०८	०

नारय अडवीसेगो एगो कित्तीए सेणिमासज्ज ।

तेरससहस्सनवसयपणयाला सव्वपयडीणं ॥११३॥ (१४८) [१३७]

तेवीसाईं ठाणा सवियप्पा अट्टु विवरिया बंधे ।

एत्तो य सव्वजियबंधठाण पत्तेय भंगजंतइयं ॥ (१४९)

ठवणा—

नामबंधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	सव्वसखा
बधठाणभंगा	४	२५	१६	६	६२४८	४६४१	१	१	१३६४५
एणिदिय०	४	२०	१६	०	०	०	०	०	४०
विगल्लिदिय	०	३	०	०	२४	२४	०	०	५१
प०तिरिय०	०	१	०	०	४६०८	४६०८	०	०	६२१७
मणुयपाउ०	०	१	०	०	४६०८	८	०	०	४६१७
नरयपाउ०	०	०	०	१	०	०	०	०	१
देवपाउग०	०	०	०	८	८	१	१	०	१८
अपाउग०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

एत्तो य उदयठाणा सव्वजियाणं च हुंति सामन्नं ।

ते चारस वीसाईं जाव य अट्टेव पज्जंता ॥ (१५०)

नाम्न उदयस्थानानि—

१ “उणतीसे” इति L. D. प्रती । २ “सव्वपिडेण ॥१४८॥” इति L. D. प्रती । ३ इदं यन्त्रं L. D. प्रतावस्ति ।

ठवणा—

थिर	थिर	थिर	थिर	अथिर	अथिर	अथिर	अथिर
सुम	सुम	असुम	असुम	सुम	सुम	असुम	असुम
जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
१	२	३	४	५	६	७	८

एसा वि ठावणा इह वायरएगिदिविगलदेवाणं ।

तह तीसे मणुजोगे पत्तेयं जस्स संभविया ॥१०८॥ (१४३) [१३२]

थिरसुभजसइयरेहिं वित्तिचउरिंदीण अट्ट पत्तेयं ।

उणतीसतीसबंधे अडवीसे अट्ट देवाणं ॥१०९॥ (१४४) [१३३]

ठवणा—

वधठा०	२५	२८	२६	३०
वेइ०	१		८	८
तेइ०	१		८	८
चउ०	१		८	८
देव०		८		

तीसा य मणुयजोगा उणतीसा तीस एगतीसा य ।

देवाण अट्ट अट्ट य एक्केक्को भंगमेएसु ॥११०॥ (१४५) [१३४]

ठवणा—

जोग	मणु	देव०		
वधो	३०	२९	३०	३१
भगा	८	८	१	१

थिरछक्कं सुभखगई सप्पडिवक्खेहि चारिया संता ।

गुणिया^१संघयणा-SSगीहि^२ भंगया सयलतिरियाणं ॥१११॥ (१४६) [१३५]

१ इद् यन्त्र L D प्रतावस्ति । २ "संघयण तद्वागिईहि [भंगया] (भगा य) सयलतिरियाण ॥१४६॥" ति L D प्रतौ ।

चत्वारि सहस्रा छस्सयाड अट्टुत्तराड गुणतीसे ।

एवं उज्जोयतीसे मणुए उणतीसि ते चेव ॥११२॥ (१४७) [१३६]

धिर	सुम	सुभग	सुसर	आइज्ज	जस	सुभख०	सघ०	सठा	वधठा०	२५	२६	३०
Sधिर	सुभ	दुभग	दूसर	भणाइज्ज	Sजस	Sसुभख०	१२८ X६	७६८ X६	तिरि०	१	४६०८	४६०८
२	४	८	१६	३२	६४	१२८	७६८	४६०८	मणु०	१	४६०८	०

नारय अडवीसेगो एगो किच्चीए सेणिमासज्ज ।

तेरससहस्सनवसयपणयाला सव्वपयडीणं ॥११३॥ (१४८) [१३७]

तेवीसाईं ठाणा सवियप्पा अट्टु विवरिया चंघे ।

एत्तो य सव्वजियबंधठाण पत्तेय भंगजंतडयं ॥ (१४९)

ठवणा—

नामबंधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	सव्वसखा
बधठाणभगा	४	२५	१६	६	६२४८	४६४१	१	१	१३६४५
एणिदिय०	४	२०	१६	०	०	०	०	०	४०
विगलिदिय	०	३	०	०	२४	२४	०	०	५१
प०तिरिय०	०	१	०	०	४६०८	४६०८	०	०	६२१७
मणुयपाड०	०	१	०	०	४६०८	८	०	०	४६१७
नरयपाड०	०	०	०	१	०	०	०	०	१
देवपाडग०	०	०	०	८	८	१	१	०	१८
मपाडग०	०	०	०	०	०	०	०	१	१

एत्तो य उदयठाणा सव्वजियाणं च हुंति सामन्नं ।

ते चारस वीसाईं जाव य अट्टेव पज्जंता ॥ (१५०)

नाम्न उदयस्थानानि —

१ “उणतीसे” इति L. D. प्रती । २ “सव्वपिडेण ॥१४८॥” इति L. D. प्रती । ३ इदं यन्त्रं L. D. प्रतावस्ति ।

वीसिगवीसाचउदीसगा'इ इगतीसगत्ति एगहिद्या ।

उदयद्वाणाणि भवे नवअद्दय^३ हुंति नामस्स॥सू.-२६॥ (१५१) [१३८]

तेवीसाई ठाणा सविगप्पा अद्द विवरिया बंधे ।

तह बारस उदयगया वीसाई अद्द पज्जंता ॥११४॥ [१३९]

ठवणा- २० । २१ । २४ । २५ । २६ । २७ । २८ । २९ ।

३० । ३१ । ६ । ८ ॥

उदएसुं जे सामी कित्तय उदया उ कस्म पत्तेयं ।

भंगा वि य पत्तेयं तेसि^३ संखाइयं भणिमो ॥११५॥ (१५२) [१४०]

निम्मेण^१थिरा^१ऽथिर^१तेय^१कम्म^१वन्नाइ^४अगुरु^१सुह^१मसुहं^१ ।

नामधुवोदय बारस १२ सेसा अधुवा उ पणपन्नं ॥११६॥ (१५३) [१४१]

तस^४थावराइ^४चउ चउ, तह सुभगा^४दुभग^४आगि^६संघयणा^६ ।

गइ^४अणुपुच्ची^४ य तहा, परघाचउ^४ तित्थ^१ उवघायं^१ (१५४)

जाइ^४सरीरो^३वगा^३ विहदुग^२ सच्चा वि पंचवन्नाओ^५ ।

वारुदयठाणनामे पत्तेयं पयडि विवरेमि ॥ (१५५)

तसतिग-सुभगा-ऽऽइज्जा मणुगइ-सगल-जसकित्ति^५ तह धुवया ।

वीसा उ समुग्घाए^५ सेसा उ कमेण पक्खेवा ॥११७॥ (१५६) [१४२]

ओरालियदुग^२मुसभं^१ पत्ते^१ घाय^१इयरसंठाणं^६ ।

छच्चीस सजोगिकेवलि ओरालियमीसि समुग्घाए ॥११८॥ [१४३]

ओरालियदुग^२मुसभं^१ पत्तेयु^१वघाय^१इयरसंठाणा^६ ।

वि य छक्क सत्त ए छूटे छच्चीस समुग्घाए ॥ (१५७)

परघाय-सास-विहदुग-सरदुग-एगयरखेवि तीसुदओ ।

सामन्नकेवलि^५ तिगं तित्थयरे तित्थसंजुत्ता ॥११९॥ (१५८) [१४४]

सामन्नकेवलिउदया-२०, २६, २८, २६, ३०, ८ ॥

तित्थयरउदया-२१, २७, २९, ३०, ३१, ६ ॥

सद्दनिरोहे तीसा उणतीसा सासरोहि तित्थयरे ।

१ “उ एगाहिद्या य इगतीसा” इति वा पाठ । २ ‘होति’ इति L D प्रतौ । ३ “सखा य इय” इति L D प्रतौ । ४ “धुवउदया” इति L D प्रतौ । ५ “तइए चउपचमे समए ॥१५६॥” इति L D प्रतौ । ६ “दुग” इति J प्रतिप्रसकौप्यामस्ति । किन्तु स सम्यग् न प्रतिभाति ।

- उणतीसद्वावीसा केवलि तह मयंतरेण इमं ॥१२०॥ [१४५]
 तह सच्चरोहि नवगं छद्वाणा हुन्ति उदयसु ॥ (१२९)
 उणतीसद्वावीसा केवलि तह सच्चरोहिं अडपयडी ।
 अन्ने उ अद्द उदया मयंतरेणं तु उदयसु ॥ (१६०)
^१सर-सास-परधा रोधा विहगड-पत्तेय-कमनिरोहेणं ।
 तीसुदया गुणतीसाइ जाव पणवीसउदएणं ॥१२१॥ (१६१) [१४६]
 उववाए चउवीसा ओरालदुगेण होइ वावीसा ।
^२उमभा-ऽऽगीण निरोहे वीसा धुवरोहि अट्ठेव ॥१२२॥ (१६२) [१४७]
 सेलेमी आरंभे उदयद्वाणाउ अद्द केवलिणो ।
 सेलेसी पडिवन्ने अद्दणहं पयडिउदए उ ॥१२३॥ (१६३) [१४८]
 एए सामणो केवलमि तित्थयरि तित्थजुयठाणा ।
 लिहियाउ पंचसंगह-विवरण-अप्पयरठाणाउ ॥१२४॥ (१६४) [१४९]
 गडजाइआणुपुव्वी थावरसुहुमं अपज्जधुवउदया ।
 दुभगाणाइज्जाजस विग्गहगइ पगडइगवीसा ॥१२५॥ (१६५) [१५०]
 ना आणुपुव्विरहिया अ एगिंदिसुहुमइयरणं ।
 हुंडु-वधा-पत्तेएहि ^३उरलदेहेहि चउवीसा ॥१२६॥ (१६६) [१५१]
 पणवीसा छव्वीसा सत्तावीसा य होइ सा चेव ।
 परधाय-सास-आयव क्रमेण एगिंदुदयठाणा ॥१२७॥ (१६७) [१५२]
 पइजाइआणुपुव्वी तसतिगणाइज्जाअजसदुभगं च ।
 धुवउदया सव्वे वि हु अंतरगड पगडइगवीसा ॥१२८॥ (१६८) [१५३]
 सा आणुपुव्विरहिया संघयण-तहा-ऽऽगि-एगयरखेव ।
 तह पत्ते-उवधाए ओरालदुगेण छव्वीसा ॥१२९॥ (१६९) [१५४]
^४एसा पुण छव्वीसा मणु-तिरि-विगलाण उदयपाओगा ।
 लद्धिअपजापजाण करणे नियमा अपजाण ॥१३०॥ (१७०) [१५५]
 परधाय जत्थ खेवे उदए जीवाण ते उ पजाण ।

१ "सर१सास१ परधाय विहगड" इति L D प्रतौ । २ "वज्जर्षमसधयणसमचतुरस्रस्थानयोर्नि-
 रोधे" इत्यर्थ । ३ "उरलपरदेहि" इति L D प्रतौ । ४ "हुन्ति ता" इति L D प्रतौ । ५ "एए उ दुवे
 उदया" इति L D प्रतौ ।

तणुपज्जत्ती नियमा इयरा ^१उ कमेण पज्जत्ती ॥१३१॥ (१७२) [१५६]

विहगइ-परघायजुया अट्टावीसा ससासउणतीसा ।

उज्जोएणं तीसा सरेण सा एगतीसा उ ॥१३२॥ (१७१) [१५७]

संघयणूणा सव्वे तएव तिरिओदया य देवेषु ।

पढम चिय संठाण वेउच्चिदुगं च इट्टखगइसरा ॥१३३॥ (१७३) [१५८]

एगिंदियाण पंच उ छक्क सुखविमलमगलतिरियाणं ।

मणुए उज्जोऊणा उदयट्टाणाउ ^३सव्वेवि ॥१३४॥ (१७४) [१५९]

एगिंदियाण-२१, २४, २५, २६, २७ । देवाण-२१, २५, २७, २८, २९, ३० ।

विमलसगलाण-२१, २६, २८, २९, ३०, ३१ । मणुयाण उदयटाणा-२१, २६, २८, २९, ३० ॥

इगवीसूणा पच उ तिरिजइवेउच्चिहारगाण च ।

अविस्यमणुवेउच्चिय उज्जोऊणा य चत्तारि ॥१३५॥ (१७५) [१६०]

नेरइयारणं ^३तिरिसम संघयणुज्जोयवज्ज पंचेव २५, २७, २८, २९, ३०

असुहपयडीण उदया अविवक्खा भगया पंच ॥१३६॥ (१७६) [१६१]

जे उदएसुं सामी उदयापयडीण विवरणं विहियं ।

इत्तो ^५पत्तेय इहं भंगारणं चारणं ^५भणिमो ॥१३७॥ (१७७) [१६२]

अप्पज्जसुहुमअजसा सेयरमिलिएहि^६अट्ट उ विगप्पा ।

सुहुमअपज्जे य जसं वज्जित्ता पंच सभविद्या ॥१३८॥ (१७८) [१६३]

ठवणा—

अप	अप.	अप	अप	प	प	प	प
सु	सु	वा	वा	सु	सु	वा	वा
अज	ज	अज	ज	अज	ज	अज	ज
५	०	४	०	३	०	२	१

अप्पज्जसुहुमसाहार अजसइयरेहि भंगसोलसगं ।

सुहुमअपज्जे जसउदयवज्ज छक्कं असंभवियं ॥१३९॥ (१७९) [१६४]

१ 'जै जत्थ सभविद्या ॥१७२॥' इति L. D प्रती । २ "पक्केव ॥१७४॥" इति L. D प्रती । ३ "सुरसमउज्जोऊणा य उदयपक्केव ।" इति L. D प्रती । ४ "कुणिमो" इति L. D प्रती ।

एगिदियठवणा—

ऽप	ऽर.	ऽप	ऽप	ऽप.	ऽप	ऽप.	ऽप.	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज	पञ्ज.	पञ्ज.	पञ्ज	पञ्ज.
सु.	सु	सु	सु.	बा.	बा	बा	बा	सु	सु	सु.	सु	वा.	वा.	बा	बा.
सा.	सा	प	प	सा.	सा.	प	प	सा	सा	प	प	सा	सा	प	प
ऽज	ज	ऽज.	ज	ऽज.	ज	ऽज	ज	ऽज	ज	ऽज.	ज.	ऽज	ज.	ऽज.	ज
१०	०	६	०	८	०	७	०	६	०	५	०	४	३	२	१

वायरपत्तेयजसा सप्पडिवक्खेहि अट्ट उ विगप्पा ।

सुहुमे वज्जेज्ज जसं उदए छच्चेव संभविया ॥१४०॥ (१८०) [१६५]

एगिदियपणुवीसाठवणा—

वायर	वायर	वायर	वायर	सुहुम	सुहु	रहु	सुहु.
पत्ते	पत्ते.	साहारण	साहा	पत्ते	पत्ते	साहा.	साहा.
ऽजस	जस	ऽजस	जस		जस		जस
१	२	३	४	५	०	६	०

छव्वीसा वि य तिविहा सासुज्जोए य आयवेगयरे ।

सासे छा पुब्बुत्ता पत्तेयजसेयरेहि चउजोए ॥१४१॥ (१८१) [१६६]

ठवणा—

उज्जोय	उज्जो	उज्जो	उज्जोय
पत्तेय	पत्तेय	साहा	साहा
जस	ऽजस	जस	ऽजस
१	२	३	४

आयवछव्वीसाए पत्तेयजसाजसेहिं दो चेव ।

वाए विउन्विकरणा चउवीसाइसु य एक्केक्कं ॥१४२॥ (१८२) [१६७]

सास छवीसे छूटे आयवसगवीस अहव उज्जोए ।

पुब्बुत्ता छम्भंगा पिंढे एगिदिवायाला ॥१४३॥ (१८३) [१६८]

एगिदिय उदयठवणा—

उदय०→ ↓	२१	२४	२५	२६	२७		
सामन्न०	५	१०	६	६	०	भगा	
उज्जोय०	०	०	०	४	४		
आयव०	०	०	०	२	२		
विउज्जि०	०	१	१	१	०		एव
कुलभङ्गा→	५	११	७	१३	६		४२

वेडंदिउइगवीसे पज्जत्तजसेयरेहि चत्तारि ।
 अपजत्ते जसवज्जा तिन्नि उ छव्वीसि एमेव ॥१४४॥ (१८४) [१६६]
 पज्जत्तजसजसेहि अट्ठावीसम्मि भंगया दोन्नि ।
 एव गुणतीसतीसे एककत्तीसे य ते चेव ॥१४५॥ (१८५) [१७०]
 नवरं दो अणुतीसा सासे छूढे य अहव उज्जोए ।
 तह तीसाओ तिन्नि उ सरदुगउज्जोयएगयरे ॥१४६॥ (१८६) [१७१]
 सरदुगएगयरेणं दो इगतीसाउ भंगवावीसं ।
 वेडंदिउ-तेइंदिउ-चउरिंदिउ मिलिय छावट्ठी ॥१४७॥ (१८७) [१७२]

विगलठवणा-

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	३१	एव ↓
भगा	६	९	६	१२	१८	१२	६६

सुभगाइज्जजसेहिं सप्पडिवक्खेहि अट्ठ उ विगप्पा ।
 अप्पज्जदुभगणाइज्जअजस एगो य इय नवरं ॥१४८॥ (१८८) [१७३]
 पज्जत्तसुभगाआइज्जकित्ति तह सेयराहिं सोलसगं ।
 असमत्ते य सुभतिगं वज्जिय नव होति सभविआ ॥१४९॥ [१७४]

इयाणि पचिदिउचारणाठवणा-

पज्जत्त ↓	पज्जत्त→	सुभग	सुभग	सुभग	सुभग	दुभग	दुभग	दुभग	दुभग
दुभग		आइज्ज	आइज्ज	अणाइज्ज	अणाइज्ज	आइज्ज	आइज्ज	अणाइज्ज	अणाइज्ज
अणाइज्ज		जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस
अजस ↑	→ ←भगा	२	३	४	५	६	७	८	९

इग्वीसुदयविगप्पा संघयण तहागि गुणिय छ्वीसे ।
 एग अससत्तरांगो अट्टासीया मया 'दोन्नि ॥१५०॥ (१८६) [१७५]
 विहदुगपरियत्तेणं ^२अट्टावीमम्मि सुद्वया दुगुणा ।
^३सासुज्जोउणतीसे वावन्नेक्कारस मया उ ॥१५१॥ (१६०) [१७६]
 सुरदुगउज्जोएणं ^४एगयरेण परिवत्ति तीसुदए ।
 पंचसया छावत्तर तिगुणा सत्तरस अडवीसा ॥१५२॥ (१६१) [१७७]
 सरदुगएगयरेण छूटे इगतीसि भंगया एए ।
 एक्कारसवावण्णा पणिदितिरिउदयठाणेसु ॥१५३॥ (१६२) [१७८]
 नव उणनउया दोसय छावत्तरपंच दुगुण तह तिगुणा ।
 दुगुणा इगतीसाए उणवन्न छलुत्तरा पिंडे ॥१५४॥ (१६३) [१७९]

पणिदितिरियठवणा-

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	३१	एव
भगा	६	२८६	२८८	५७६	५७६	५७६	४९०६

एवं मणुयगईए मणुयगई इत्थ होइ वत्तन्वा ।
 नवरं उज्जोयगहिया उदया पंचेव सवियप्पा ॥१५५॥ (१६४) [१८०]
 नव उणनउया दोसय छावत्तरपंच दुसु य पत्तेयं ।
^५वावण्णेक्कारमया छ्वीसदुरुत्तरा पिंडो ॥१५६॥ (१६५) [१८१]

मनुयठवणा-

उदय	२१	२६	२८	२९	३०	एव
भगा	९	२८६	२८८	५७६	५७६	२६०२

वीमोदयम्मि एगो छच्च छ्वीसे य तीसचउवीसा ।
 'विहगा सरसंठाणेहि' एगो अट्टोदए भंगो ॥१५७॥ (१९६) [१८२]
 पठमंतिमदोभंगा गहिया सेसाउ मणुयगहणेण ।
 तित्थोदय एक्कोक्को सव्वे तित्थयरि छब्भंगा ॥१५८॥ (१९७) [१८३]

१ "दुन्नि" इति L D प्रतौ । २ "छावत्तरपंच उदयभडवीसा।" इति L D प्रतौ । ३ "सासु-उज्जोयुणतीसे" इति L D प्रतौ । ४ "एगोययरपरि०" इति L D प्रतौ । ५ "वावन्ने०" इति L D प्रतौ । ६ "विह १-सर१ सठाणेहि एगो" इति L D प्रतौ ।

केवलितित्थवरठवणा—^१

उदय →	२०	२१	२६	२७	२८	२९	३०	३१	१	८	भगा ↓
केव०	१	०	(६)	(१२)	(१२)	०	(२४)	०	०	१	२(५६)
तित्थ	०	१	०	१	०	१	१	१	१	०	६

दूभगणाइज्जाजससेयरमिलिएहिँ अट्ट उ विगप्पो ।

पत्तेयं पत्तेयं उदएसुं छसु वि देवाणं ॥१५९॥ (१६८) [१८४]

ठवणा-

दूभग	दुभग	दुभग	दुभग	सुभग	सुभग	सुभग	सुभग
अणाइज्ज	अणाइज्ज	आइज्ज	आइज्ज	अणाइज्ज	भणाइज्ज	भाइज्ज	आइज्ज
अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस	अजस	जस
१	२	३	४	५	६	७	८

सासुज्जोएगयरे तह सरउज्जोएगयरसहिया ।

अट्टावीसुणातीसे दुगुणा चउसट्ठि सव्वे वि ॥१६०॥ (१९६) [१८५]

एवं विउव्वितिरिए इगवीसूणेसु भंगछप्पन्ना ।

तह मणुए वेउव्वि य उज्जोयविणा उ वत्तीसं ॥१६१॥ (२००) [१८६]

उज्जोयरहियतीसा भोत्तण चरसु उदएसु ।

ठवणा-

उदय०→	२१	२५	२७	२८	२९	३०	सव्वे ↓
देवभगा	८	८	८	१६	१६	८	६४
वेउव्वियति	०	८	८	१६	१६	८	५६
” म	०	८	८	८	८	०	३२

आहारगउदएसुं भंगा सत्तेव तिरियसारिच्छा ।

आहारदुगं खिविउं वेउव्विदुगं तु अवणेहिँ ॥१६२॥ (२०१) [१८७]

१ J प्रतिप्रेसकोप्या २७-२८ उदयस्थानद्वये केवलिसत्का मङ्गान दर्शिता । L D प्रती पुन ६-६ षड् षड् मङ्गान दर्शिता । तथा उप्यत्रा-ऽन्यतरविहायोगतेरुदयत्वाद् द्वादशाना मङ्गाना सम्भव इति हेतोर्द्वादश मङ्गान निरूपिता , तथैवा-ऽन्यत्र दर्शितत्वात् ।

तिरियसरिच्छा जेणं दुभगऽणाइज्ज अजसपयडीओ ।
 अविश्यवोच्छिन्ना ते न तेसि उदओ जईणं तु (२०२)
 एवं जइवेउन्वे नवरं उज्जोयभंगया तिण्णि ।
 सेसा उ मणुयगहणे नेरइयअसुद्वपंचेव ॥१६३॥ (२०३) [१८८]

ठवणा—

उदय	२१	२५	२७	२८	२९	३०	सन्वे
आहारग०	०	१	१	२	२	१	७
जति०	०	१	१	२	२	१	७
नारकिय०	१	१	१	१	१	०	५

नाम्न उदयस्थानाना भङ्गा -

एगवियालिक्कारस ते छ ष तेत्तीसा ।
 बारस सयाणऽहिगाणि^१ वि^२ सीईहि ॥सू.२७॥ (२०४) [१८६]
^३उणतीसे^३ रसयाणऽहिगा^३ होहिं ।
 एककेक्कगं च वीसादट्टुदयते उदयविही ॥सू.-२८॥ (२०५) [१९०]

ठवणा—

उदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८
भगा	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२६१७	३१६५	३१	१

एएसिं विवरण—

पण नव नव नव अट्टुग एगं एग इह उदयइगवीसे ।
 इगिविगलतिरियमणुए सुरनारयतित्थि वायाला ॥१६४॥ (२०६) [१६१]
 छच्चत्तारि य एगं वायरसुहुमे य पवणवेउन्वे ।
 एगिदियाण भंगा एककारस^३ होति चउवीसे ॥१६५॥ (२०७) [१६२]
 सत्तऽइ अट्टु अट्टु य एगो एग तह उदयपणवीसे ।
 एगिदिसुरविउव्वियतिरिमणुआहारनेरइए ॥१६६॥ (२०८) [१९३]
 तेरस नव इगि विगले दोसय नउय मणुय तह तिरिए ।
 छच्च सया छव्वीसे उदए भंगाण एगत्थ ॥१६७॥ (२०९) [१६४]

१ "दुपच०" इत्यपि । २ "उणतीचिक्कारस" इत्यपि । ३ "हुति" इति L. D. प्रती ।

छच्चट्ट अट्ट अट्ट य एगो एग तह एग सगवीसे ।
 एगिदिविकित्तिरिनरसुरनारयत्तिथआहारे ॥१६८॥ (२१०) [१६५]
 छक्क पणसयछावत्तराडँ दुसु तह य दुसु य सोलसगं ।
 नव दुग एग भंगा अट्टावीमम्मि उदयम्मि ॥१६९॥ (२११) [१६६]
 विगलतिग्मणुयदेवा तिरिनरवेउव्विहारनेरडए ।
 इह वारमय दुरुत्तर मिलिया एगत्थ पिडेणं ॥१७०॥ (२१२) [१६७]
 एक्कारस वावन्ना छावत्तरपंच दुसु य सोलसगं ।
 नववारमदुगभंगा इक्केक्ककमेण उणतीसे ॥१७१॥ (२१३) [१६८]
 तिरिनरदेवा तिरिनर वेउव्वियविगल्लहारगजईण ।
 तित्थे नारयकमसो मिलिया सत्तारपणसीया ॥१७२॥ (२१४) [१६९]
 सतरस मय अडवीसा अट्टारस तह इगार वावन्ना ।
 अट्टट्ट एग एग तह एगं तीसउदयम्मि ॥१७३॥ (२१५) [२००]
 तिरिविगलमणुयदेवा तिरिनरवेउव्विहारत्तिथयरे ।
 इय मिलिया भगाणं उणतीससयाउ सत्तरस ॥१७४॥ (२१६) [२०१]
 एक्कारस वावन्ना वारस एक्को य भंग इगतीसे ।
 तिरिविगलत्तिथमिलिया सव्वे पणसट्ट^५इक्कारा ॥१७५॥ (२१७) [२०२]
 वीस नव अट्ट उदएसु भंग^५मेक्केक्क ते य केवल्लिणो ।
 इय मंखा उदएसु वारमसु कमेण पत्तेयं ॥१७६॥ (२१८) [२०३]
 चायाला छावट्टी उणवणसया छलुत्तरविगप्पा ।
 इगिविगलतिरिपणिदिसु छव्वीस दुरुत्तरा मणुए ॥१७७॥ (२१९) [२०४]
 चउसट्टी पण सुरनारयाण छप्पण तिरियवेउव्वे ।
 पणतीस मणुविउव्विसु सत्तट्ट य हारकेवल्लिणो ॥१७८॥ (२२०) [२०५]
 इय सव्वुदयविगप्पा एक्काणउया सया उ सगसयरी ७७६१ ।
 एत्तो सतट्टाणा ते वारस होति नामस्स ॥१७९॥ (२२१) [२०६]

१ “दुदुसु” इति J प्रतिप्रेसकोप्या किन्तु स सम्यग न भाति । २ “विउव्वि तह विगल्ल” इति जे प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ “सत्तारा” इति L D प्रतौ । ४ “एक्कारा” इति L D प्रतौ । ५ “एक्केक्कु” इति L D प्रतौ ।

मन्वुदयविगपठवणा —

नाम उदयठाणा →	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	भग- सत्वा
उदय सन्वभगा →	१	४	११	३३	६०	३३	१२०	२	७	२९	१७	१६	१	१	७	७	७७६१
एगिदियभगा →	०	५	११	७	१३	६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	४२
विगलिदिय ,, →	०	६	०	०	९	०	६	१२	१८	२	०	०	०	०	०	०	६६
पविदियतिरिय' →	०	६	०	०	२८९	०	५७६	११५२	१७२८	११५२	०	०	०	०	०	०	४९०६
मनुज ,, →	०	९	०	०	२८६	०	५७६	५७६	११५२	०	०	०	०	०	०	०	२६०२
वेउवियतिरिय' →	०	०	०	८	०	८	१६	१६	८	०	०	०	०	०	०	०	५६
,, मणुज , →	०	०	०	८	०	८	८	८	०	०	०	०	०	०	०	०	३२
देवाण , →	०	८	०	८	०	८	१६	१६	८	०	०	०	०	०	०	०	६१
तित्थयर ,, →	०	१	०	०	०	१	०	१	१	१	१	१	०	०	०	०	६
केवलीण ,, →	१	०	०	०	(म ६)	०	(म) ६	(म) ६	(म) ६	०	०	१	०	०	०	०	२
वेउवियजइ ,,	०	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	३
आह'रग ,, ,, →	०	०	०	१	०	१	२	२	१	०	०	०	०	०	०	०	७
नारक , →	०	१	०	१	०	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	५

नाम्न मन्वास्थानानि-

तिदुणउई 'उगुणउई अडुळलसी असीइ उगुसीई ।

अडुळलपन्नतरि नव अडु य नामसताणि॥ सूत्रम्-२६॥ (२२२) [२०७]

ठवणा—६३, ६२, ८६, ८८, ८६, ८७, ७६, ७८, ७६, ७५, ६, ८।

गइ-अणुपुन्वी चउ चउ वधण-संघाय-जाइ-वन्न-रसा ५ ।

तणु ५ पत्तेयं पण पण अंगतिगं अडु फासा य ॥१८१॥ (२२३) [२०८]

छागी छसंधयणा विहदुग-दुगमंध सेयरा वीसं ।

पत्तेया अडु भवे तेणउई नामसंताओ ॥१८२॥ (२२४) [२०९]

१ "इगुनउई" इति वा, "गुणनउई । अडसी छलसी असीइ गुणसीई । अडुय०" इति वा ।

तित्थूणा बाणउई तेणउई चेवहारचउउणा ।
 सत्ताए गुणनउई अट्टासी होइ तित्थूणा ॥१८२॥ (२२५) [२१०]
 नेरइयसुरदुगाणं एगयरूव्वलणि होइ छासीई ।
 'तत्तो विउव्विचउसुरदुगाण आसीइ उव्वलणो ॥१८३॥ (२२६) [२११]
 मणुदुगउव्वलणेणं अट्टत्तारि तेउवाउमंतमिणं ।
 षट्ठमचउ । तेरस—खएण चत्तारि खवगस्स ॥१८४॥ (२२७) [२१२]
 साहारसुहुमचउजाइ थावरं आयवं च निरयदुगं ।
 तिरियदुगं उज्जोयं तेरस अनियट्टिवोच्छेए ॥१८५॥ (२२८) [२१३]
 मणुयगइजाइत ।यरं च पज्जत्तसुभगआएज्जं ।
 जसक्किती तित्थयरं अजोगि जिणसंति नव होंति ॥१८६॥ (२२९) [२१४]
 ता तित्थूणा अट्ट उ केवलिसामन्नसंतए ^३होंति ।
^३इत्तो बंधुदयाणं ^४ट्टाणाण संवेहो ॥१८७॥ (२३०) [२१५]
 बंधुदयसंतठाणा एगत्य परूविया वि सव्वत्थ ।
 न विसेमो पगईसुं कायव्वो ठाणमासज्ज ॥१८८॥ (२३१) [२१६]
 नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि-
 नव पच उदयसता तेवीसे ^५छव्वीसे ।
 अट्टचउर णिसे ^६नवसत्तुगुनीसतीसम्मि ॥सूत्रम्-३१॥ (२३२) [२१७]

ठवणा-

बन्ध०	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदय०	६	६	९	८	६	९
सत्ता	५	५	५	४	७	७

तेवीम पन्नवीसा छव्वीसुणतीसतीस^५बंधं ।
 नव नव उदयट्टाणा वीसा नव अट्ट ^६मोत्तूणं ॥१८९॥ (२३३) [२१८]
 ठवणा—२१, २४ २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१,
 इगिगिगला सविगप्पा तिरिमणु न्न तइ सवेउव्वा ।
 नियनियउदयविगप्पेहि सव्वे वधंति संभविया ॥१९०॥ (२३४) [२१९]

१ "णिसुरदुगचउविक्रियअट्टासी असीइ उव्वलणे ॥ (२२६)" इति L D प्रतौ । २ "हुति" इति L D प्रतौ । ३ "एत्तौ" इति L D-प्रतौ । ४ 'मणि गुण ती०' इत्यपि । ५ "बवेसु" इति L D प्रतौ । ६ "मुत्तूण" इति L D प्रतौ ।

नवरं इह पडिसेहो तिरिमणुयार्ण च भोगमूर्मीर्ण ।
 तणुयकसायत्तणओ अट्टावीसं च बंधति ॥१९१॥ (२३५) [२२०]
 ते पज्जत्ता एत्थ य अपज्जि गुणतीसमवि य बंधंति ।
 जम्हा ते देवेसुं न अन्नगड जंति पाएणं ॥१९२॥ (२३६) [२२१]
 तह ईसाणंतसुरा पज्जत्तेगिदियाण पाओगा ।
 बंधंति मिच्छदिट्ठी पणवीसा तह य छव्वीसा ॥१९३॥ (२३७) [२२२]
 गुणतीसतीसबंधा सव्वे देवा य तह य नेरइया ।
 नियनियउदयविगप्पेहिं 'सम्ममिच्छाइ जहजोगं ॥१९४॥ (२३८) [२२३]

ठवणा-

वधट्टाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदयट्टाणा	६	६	९	८	६	६
सन्ताट्टाणा	५	५	५	४	७	७

नव नव उदयट्टाणा बंधे बंधे य हुंति पत्तेयं ।
 'सवियप्पाई बुत्ता अट्टावीसम्मि पुण एए ॥१९५॥ (२३९) [२२४]
 अट्टावीसे बंधे उदयट्टाणा उ अट्टु नायव्वा ।
 केवलित्तिगचउवीसं चउरो 'मोत्तूण सवियप्पा ॥१९६॥ (२४०) [२२५]
 इगवीसे छव्वीसे उदए जे वट्टुमाणया जीवा ।
 खाइगवेयगदिट्ठी नियमा बंधंति न उ अन्ने ॥१९७॥ (२४१) [२२६]
 सेसेसुं उदएसुं सम्मदिट्ठि तह मिच्छदिट्ठी य ।
 अज्झत्थवसा बंधहि सुरनारयजोगनरतिरिया ॥१९८॥ (२४२) [२२७]

२८ बंधे ८ उदयट्टाणा-२१।२५।२६।२७।२८।२९।३०।३१।

उदएसुं जे जीवा वट्टुंता बंधगा उ ते भणिया ।

तेसि तु संतठाणा कित्तिय के कस्स तं भणिमो ॥१९९॥ (२४३) [२२८]

(१)इगि(२)विगल ३)सगल पंचंसिगा उ चत्तारि आइए उदया ।

(१)उणवीस(२)उट्टारस(३)दुसयअट्टनउआ उ न उ अन्ने

(सुत्तीगाहा) ॥२००॥ (२४४) [२२९]

(१)उणवीस(२)उट्टारस (३)दुसय अट्टनउया य वृन्ति भंगाणं ।

(१)इगि (२)विगल(३)सगलतिरिए पणतीसा तिन्नि सव्वे वि ३३५॥२०१॥ (२४५) [२३०

ठवणा-

उदय	२१	२४	२५	२६	सव्वे भगा		
सू० अप०	१	२			३		एगिदिय
सू० प०	१	२	१	१	५	१६	
बा अ ग०	१	२			३		
बा प०	२	४	१	१	८		
त्रि०अप०	३			३	६	१८	त्रिगल०
वि० प०	६			६	१२		
प०ति०अप०	१			१	२		पणिदित्ति०
प०ति०प०	८			२८	२६६	२६८	
सत्ताठा०	५	५	५	५	२०	३३५	

सेसा उ सव्वभंगा अट्टत्तरिसंतवज्जिया नेया ।

चउगइ जियसंभविया ७४५६ पणसंतट्टाण पुण एए ॥२०२॥ (२४६) [२३१]

वाणउई अट्टासी, अट्टत्तरि असि य होइ छासीइ ।

चउपठमेसुदएसुं अट्टत्तरिवज्ज सेसेसु ॥२०३॥ (२४७) [२३२]

इय एवं संवेहो बंधट्टाणेसु पंचसु वि भणिओ ।

नव पंच उदयसंता वुत्ता सेम च वोच्छामि ॥२०४॥ (२४८) [२३३]

नव पच उदय सनगाण २

ठवणा-

वधट्टाणा	२३	२५	२६	२६	३०
उदयट्टाणा	६	६	६	९	६
सतट्टाणा	४०	४०	४०	४०	४०

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति । J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "सेसा अट्टत्तरि सतवज्जिया भगा ७४५६ ॥ इय एव सव्वभगा अट्टत्तरिसनवज्जिया नेया" । इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "छासीया" इति L D प्रतौ । ४ "वुच्छामि" इति L D प्रतौ ।

उणतीसतीसबंधे संतडाणा उ सत्त पत्तेयं ।
 पण पण इह पुच्चुत्ता तित्थजुया दुन्नि पुण एए ॥ (२४६)
 चउवीसं इगतीसं उदए 'मोत्तु उणतीसबंधम्मि ।
 'दो दो य संतठाणा तेणउई अउणनउई य ॥२०५॥ (२५०) [२३४]
 एवं तीसे बंधे नवरं छळ्ळीस मुत्तु छडाणा ।
 इय संवेहो बुत्तो नव सत्तुगतीसतीसम्मि ॥२०६॥ (२५१) [२३५]

वधदाणा	२९	३०	दो दो संतडाणा-६३-८६
उदयदाणा	७	६	
सत्ताठाणा	१४	१२	

अट्टावीसे बंधे संवेहो अट्ट उदय चउसंता ।
 वाणउई अट्टासी छासी तह अउणनउई य ॥२०७॥ (२५२) [२३६]
 छसु आइएसु दो दो वाणउई अट्टसी य ठाणाइं ।
 तीसे चउरो ठाणा उणनउई मुत्तु इगतीसे ॥२०८॥ (२५३) [२३७]

अट्टावीसवधदाणे ठवणा-	उदयठाणाणि	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	एव १६
	सत्ताठाणाणि	१२	६२	६२	१२	६२	६२	१२	६२	
		८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	
								८८	८८	
								८८		

तीसोदय उणनउई अट्टावीसे कहं भवे बंधे ।
 आचार्यं प्राह-मणुतित्थसंतगम्मी मिच्छणए निरयमिमुहम्मि ॥२०९॥ (२५४) [२३८]
 तित्थयरसंतकम्मी सम्मदिट्ठी उ वंधए णियमा ।
 उणतीसं तित्थजुयं वैयगबंधा उ नो अन्ने ॥ (२५५)

१ "मुत्तु" इति L D प्रती । Δ पेज न० ५२ Δ एतच्चिह्नगत टिप्पणक द्रष्टव्यम् ।

(१)ङ्गि (२)विगल(३)सगलत्तिरिए पणतीसा तिन्नि सव्वे वि ३३५॥२०१॥ (२४५) [२३०

ठवणा-

उदय	२१	२४	२५	२६	सव्वे भगा		
सू० अप०	१	२			३		पदिदिय
सू० प०	१	२	१	१	५	१६	
वा अ०	१	२			३		
वा प०	२	४	१	१	८		
वि०अप०	३			३	६	१८	पिगत०
वि० प०	६			६	१२		
प०ति०अप०	१			१	२		पणिदिदि०
प०ति०प०	८			२८	०६६	२६८	
सत्ताठा०	५	५	५	५	२०	३३५	

सेसा उ सव्वभंगा अट्टत्तिसंतवज्जिया नेया ।

चउगइ जियसंभविया ७४५६ पणसंतट्ठाण पुण एए ॥२०२॥ (२४६) [२३१]

वाणउई अट्टासी, अट्टत्तिरि असि य होइ छासीइ ।

चउपढमेसुदाएसु अट्टत्तिरिवज्ज सेसेसु ॥२०३॥ (२४७) [२३२]

इय एवं संवेहो बंधट्ठाणेसु पंचसु वि भणिओ ।

नव पंच उदयसंता बुत्ता सेमं च बोच्छामि ॥२०४॥ (२४८) [२३३]

नव पंच उदय सनगाण २

ठवणा-

बधट्ठाणा	२३	२५	२६	२६	३०
उदयट्ठाणा	६	६	६	९	६
सत्तट्ठाणा	४०	४०	४०	४०	४०

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति । J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "सेसा अट्टत्तिरि सतवज्जिया भगा ७४५६ ॥ इय एव सव्वभगा अट्टत्तिसतवज्जिया नेया" । इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ३ "छासीया" इति L D प्रतौ । ४ "बुच्छामि" इति L D. प्रतौ ।

उणतीसतीसबंधे संतट्टाणा उ सत्त पत्तेयं ।
 पण पण इह पुव्वुत्ता तित्थजुया दुन्नि पुण एए ॥ (२४६)
 चउवीसं इगतीसं उदए 'भोत्तु उणतीसबंधम्मि ।
 'दो दो य संतटाणा तेणउई अउणनउई य ॥२०५॥ (२५०) [२३४]
 एव तीसे बंधे नवरं छव्वीस मुत्तु छट्टाणा ।
 इय संवेहो बुत्तो नव सत्तुगतीसतीसम्मि ॥२०६॥ (२५१) [२३५]

बधट्टाणा	२९	३०	दो दो संतट्टाणा-६३-८६
उदयट्टाणा	७	६	
सत्ताठाणा	१४	१२	

अट्टावीसे बंधे संवेहो अट्ट उदय चउसंता ।
 वाणउई अट्टासी छासी तह अउणनउई य ॥२०७॥ (२५२) [२३६]
 छसु आइएसु दो दो वाणउई अट्टसी य ठाणाइं ।
 तीसे चउरो ठाणा उणनउई मुत्तु इगतीसे ॥२०८॥ (२५३) [२३७]

अडवीसबंधट्टाणे ठवणा-	उदयठाणाणि	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	एवं	
	सत्ताठाणाणि	१२	६२	६२	१२	६२	६२	१२	६२		१६
		८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८		
								८८	८८		

तीसोदय उणनउई अट्टावीसे कहं भवे बंधे ।
 आचार्यं प्राह-मणुतित्थसंतगम्मी मिच्छगए निरयमिमुहम्मि ॥२०९॥ (२५४) [२३८]
 तित्थयरसंतकम्मी सम्मदिट्ठी उ बंधए णियमा ।
 उणतीसं तित्थजुयं वैयगबंधा उ नो अन्ने ॥ (२५५)

वेयगसम्महिद्धी गिरयाभिमुहो वमेइ सम्मत्तं ।
तेण मुहुत्तं भिन्न उणनउई मिच्छमंता उ ॥ (२५६)

सतट्टाणाण सखामाह-

आइतिए वीमसयं उणवीसा तह य होइ चउपण्णा ।
वावन्ना वि य कमसो सत्ताठाणाइं छण्हं पि ॥२१०॥ (२५७) [२३९]

ठवणा-

वधट्टाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०
उदयट्टाणा	६	६	६	८	६	६
सत्ताठाणा	४०	४०	४०	१६	५४	५२

एगेगमेगतोसे एगे एगुदय अट्ट संतम्मि ।
उवरयवधे दस दस वेयगसतमि ठाणाइ । सूत्रम् ३२॥ (२५८) [२४०]
इगतीसे वंधम्मी उदओ तीसन्ह तेणवइसत्ता ।
तह एगवंधि उदयं ३० संतट्टाणाइं तहि अट्ट ॥२११॥ [२४१]
जसकित्ति वंधु तीमन्ह उदय तह संतठाण अट्टे व ॥ (२५९)
पठमा चउरो ठाणा ते चिय पत्तेय तेरसविहूणा ।
इय अट्ट संतठाणा जसकित्तीबंधसंवेहो ॥२१२॥ (२६०) [२४२]
उवरयबंधे दस उदयठाण तह दस य संतठाणाइं ।
चउवीसा पणवीमा छलसी अट्टत्तरी मुत्तुं ॥२१३॥ (२६१) [२४३]

१ ठवणा-

वधठा०	३१	१	०
उदय०	१	१	१०
सत्ता०	१	८	१०

वीसछवीसा तीमा केवल्लिणो पुव्ववुत्त उदयाउ ।
सरसाससव्वरोहे नवअट्टयअहियवीस अट्टेव ॥२१४॥ (२६२) [२४४]
दो दो य संतठाणा उणसी पन्नत्तरी य सव्वेसु ।
अट्टोदयम्मि संतं ते चिय अट्टेव संतम्मि ॥२१५॥ (२६३) [२४५]

एए केवल्लिउदया तित्थजुया ते य छच्च तित्थयरे ।
 दो दो संतट्टाणा आसी छाहत्तरी तह य ॥२१६॥ (२६४) [२४६]
 छट्टुदए नवपयडी ते चिय संतम्मि चरिमसमयम्मि ।
 तित्थयरकेवालिरसा तइयं ठाणं तु संतम्मि ॥२१७॥ (२६५) [२४७]
 उवसंते चउ पढमा तीसे उदयम्मि तह य तित्थयरे ।
 रसणं केवल्लिनियरे उवरयबंधम्मि संवेहो ॥२१८॥ [२४८]
 तेरस तेरस भेया केवल्लितित्थयर तह य उवसंते ।
 चउ पढमा तीसुदए उवरयबंधम्मि संवेहो ॥ (२६६)

^२उवरयवधे
ठवणा—

उदयठाण०	२०	२१	२६	२७	२८	२९	३०	३१	६	८	सव्वे
सत्ताठाण०	२	२	२	२	२	४	८	०	३	३	३०

सामान्येन नाम समाप्तम् ॥

मूलुत्तरपगईसु' बंधोदयसंतठाण इय भणिया ।
 जीवगुणठाणगेसु' तह उत्तरपगईसु' भणियो ॥२१६॥ (२६७) [२४९]
 त्तिविगप्प पगइठाणेहि जीवगुणसण्णिणए ठाणे ।
 भगा पउंजियव्वा जत्थ जहासंभवो भवइ ॥सू०-३३॥ (२६८) [२५०]
 त्तिविगप्पा बोधव्वा बंधं उदयं च संतठाणत्तिगं ।
 भंगा पउंजियव्वा जियगुणठाणाण संभविया ॥२२०॥ (२६९) [२५१]
 चतुर्दशजीवस्थानेषु ज्ञानावरणान्तराययोर्बन्धोदयसत्तास्थानभङ्गा -
 तेऽससु जीवसंखेवएसु नाणान्तरायत्तिविगप्पो ।
 एककम्मि तिडुविगप्पो करणं पइ ^३एत्थ अविगप्पो ॥सू.-३४॥(२७०) [२५२]

^४नाणावरणतरायठवणा—

जीवट्टाणा	३	सण्णी
ध	५	०
उदय	५	५
सत्ता	५	५

करणं पङ्क्तिं जोगी मणमाईणि उ हवन्ति करणां ।

सन्वराओ दुण्हं पि हु करणं पङ्क्तेण अविगप्पो ॥२२१॥ (२७१) [२५३]

जीवस्थानेषु दर्शनावरणीयस्य बन्धोदयसत्तास्थानमङ्गा -

तेरे नव चउ पणगं नवसएगम्मि भग 'मेक्कारा ।

^२वेयणियाउं गोए विभज्ज मोहं पर वोच्छ ॥सू.-३५॥ (२७२) [२५४]

नवबंधं नवसंतं चउपण उदयम्मि दंसणावरणे ।

^३तेरससु आइमेसुं सण्णी पुव्वुत्त'एक्कारा ॥२२२॥ (२७३) [२५५]

^१ठवणा-

वधठाणा	९	६	६	६	४	४	४	०	०	०	०
उदयठाणा	४	५	४	५	४	५	४	४	५	४	४
सत्ताठाणा	६	६	६	६	९	६	६	६	६	६	४

जीवस्थानेषु वेदनीयगोत्रयोर्वन्धादिस्थानानां मङ्गा -

पज्जत्तगसन्नियरे अट्ट चउक्क च वेयणियभगा ।

सत्तग तिग च गोए पत्तेय जीवठाणेसु ॥ सूत्रम्-०॥ (२७४) [२५६]

ठवणा-

बधो	अ- सा०	अ- सा०	सा- य०	सा- य०	०	०	०	०
उदओ	अ- सा०	सा- य०	अ- सा०	सा- य०	अ- सा०	सा- य०	अ- सा०	सा- य०
सत्ता	०	२	२	२	२	२	१	१

पढमा दुग तह तुरिओ गोए वेयणियभंगचत्तारि ।

तेरससु आइमेसुं सन्नीपज्जत्ति पुव्वुत्ता ॥२२३॥ (२७५) [२५७]

^१तेरससु जीवठाणेसु ठवणा-

बध०	नी	नी	उच्च
उदय०	नी	नी	नी
सत्ता	नी	२	२

१ "मिक्कारा" इति L D प्रती । २ 'वेयणियाउय गोए' इति L D प्रती । ३ "तेरससु पि इमासु" इति L D प्रती । ४ इक्कारा" इति L D प्रती । ५-६-७ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रसङ्गोप्या नास्ति ।

१सन्निपजत्तगस्स ठवणा—

बंधो	नीय०	नीय०	नोय०	उच्च	उच्च	०	०
उदओ	नीय०	नीय०	उच्च०	नीय	उच्च	उच्च	उच्च
सत्ता	नीय०	२	२	२	२	२	१

सण्णिम्मि सत्त भंगा पढमो कह जेण तेउवाऊगं ।

२भण्णइ पढमु^३ववण्णे तेहितो तिरियसण्णिम्मि ॥२२४॥ (२७६) [२५८]

जीवस्थानेष्वायुषो बन्धादिस्थानभङ्गा

पज्जत्ता-ऽपज्जत्तगस्स गो पज्जत्ताअमण-सेसेसु ।

अड्ढावीसं दसग नवगं पणगं च आउस्स ॥सू.- ०॥ (२७७) [२५९]

सण्णिअपज्जमणुतिरिय मणुतिरिजोगं च आउ बंधंति ।

५एक्केक्कु बंधपुव्वे बंधु^४त्तर^४ चउर इय दसओ ॥२२५॥ (२७८) [२६०]

सन्नी पज्जे भंगा अड्ढावीसं पुव्ववुत्त आउम्मि ।

पज्जाऽमण तिरियसमा पण ५इक्कारे य ५ देवसमा ॥२२६॥ (२७९) [२६१]

१ठवणा—

११ जीवठा०	५
प० अस०	६
अप० सं०	१०
प० स०	२८

जीवस्थानेषु मोहनीयबन्धादिस्थानभङ्गा -

अड्ढसु पंचसु एगे एगदुगं दस य मोहधधगए ।

तियव्वउनवउदयगए तिग तिग पण्णरससंतम्मि ॥सू.-३६॥ (२८०) [२६२]

१-६ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति, २ 'भन्नइ' इति L D प्रतौ । ३ "ववन्ने" इति L D प्रतौ । ४ "एगो अवधपुव्वे" इति J. प्रतिप्रेसकोप्याम् । ५ "एक्कारे" इति L D प्रतौ ।

१ठवणा-

जीवठा०	८	५	१
वधठा०	१	२	१०
उदयठा०	३	४	६
सत्ताठा०	३	३	१५

अट्ट उ जीवट्टाणा सत्त अपज्जत्तसुहमपज्जो य ।
वावीसवध एगं दुबंधरपढमा भवे पणगे ॥२२७॥ (२८१) [२६३]

२ठवणा-

जीवठा०	८	५
वधठा०	२२	२१

वायरविगलअसन्नी पज्जत्ता पंच हुंति जियठाणे ।
वावीमा इगवीसा दुगबंधा मिच्छसाणाणं ॥२२८॥ (२८२) [२६४]
छब्बावीसे ३चउएगवीस [भंगं दु]बंधम्मि जे उ पुव्वुत्ता ।
इगविगलेसुं तेच्चिय जेण तिवेएसु ते जंति ॥२२९॥ (२८३) [२६५]
अडनवदसगं उदया पत्तेयं जीवठाणतेरससु ।
वावीसबंधेसुं इयरेसु नवंतसत्ताई ॥२३०॥ (२८४) [२६६]
चउवीमा चउचउरो तिगतिग उदएसु वन्निया पुवं ।
नवरं नपुंसवेइसु चउरट्ट पणिदिए * ५मोत्तुं ॥२३१॥ (२८५) [२६७]
छप्पन्नं इह अट्टा सोलस चउवीस ५गुणिअनामेहि ।
अट्टसया वत्तीसा ८३२ उदयविगप्पा ६य मोहस्स ॥२३२॥ (२८६) [२६८]

पयविदविहिमाह-

छत्तीसाणं दसगं चउरो वत्तीस तिञ्जि छत्तीसा ।
अट्टट्ट गुणायारो तह चउवीसाइ पयविदा ॥२३३॥ [२६९]

१-२ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रसकोप्या नास्ति । ३ "चउइगवीसे [भंगदु]" इति L D प्रतौ ४ पेज न० ४२ ५ एनच्चिहगत टिप्पनक द्रष्टव्यम् । ६ "मुत्तु" इति L D. प्रतौ । ५ "गुणसनामेहि" इति L D प्रतौ । ६ 'उ' इति L D प्रतौ ।

अन्ना वृत्तीसा वि य चउवीसाए गुणित्तु खिवएसु ।
 बाहत्तरिसयचउसद्धिअहियपयविंदपिडेणं ॥२३४॥ [२७०]
 उदए नपुंसवेए वंधे वावीस उदयठाणतिगं ।
 अड नव दसगं कमसो इगदुगएक्का चउवीसा ॥ (२८७)
 उदयगुणा छत्तीसा ते दस ठाणा नपुंसउदयम्मि ।
 ते अट्टा छत्तीसा दसहिं गुणा तिन्नि सय सट्टा ३६० ॥ (२८८)
 पञ्जत्तवायरविगला ४ वंधे इगवीस साणमासज्ज ।
 सत्ताइ नवंतुदया नपुंस चउरट्ट पत्तेय ॥ (२८९)
 उदयगुणा वृत्तीसा चउगुणा १२८ ते य हुंति इह अट्टा ।
 पुव्वुत्त ३६० एइ अट्टा अट्टगुणा हुन्ति पयविंदा ३९०४ ॥ (२९०)
 छत्तीसं चउवीसा तीसु वि पत्तेय मिच्छगुणठाणे १०८ ।
 सासण अमणे पज्जे वृत्तीसा विदचउवीसा १४० ॥ (२९१)
 चउरुत्तरगुणयाला ३६०४ अट्टगुणा इत्थ होति पयविंदा ।
 तेत्तीससया इह सट्टिसहिय ३३६० चउवीसगुणकारे ॥ (२९२)
 बाहत्तरि चउसट्टा ७२६४ पयविंदाणं तु मोहनीयम्मस ।
 तेरससु आइमेसुं सन्नीपज्जत्ति पुव्वुत्ता ॥ (२९३)

जीवट्टाणा	सुहुम ८	वायर ८	वेइ.८	ते ८	चउ ८	उस ८	स ८	सुहुमपज्ज
वधट्टाणा	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
वधभगा	६	६	६	६	६	६	६	६
उदयट्टाणा	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०
चउवीसियाण अट्टाण च सखा	१ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १ १ २ १							
चउवीसिया अट्टागा वा	८	८	८	८	८	४२४	४२४	८

श्रीप्रज्ञप्तौ-ते षं भते ? असन्निपचिदितिरिक्खजोणिया किं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा ? नो इत्थिवेयगा नो पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगा” इति । एतत्सिद्धान्ताभिप्रायेण च श्रीमन्मलयगिरिपादैः सप्ततिकाया पङ्क्तिशतमगाथावृत्तौ पर्याप्तासङ्गिनि नपुंसकवेद एव दर्शित, तत्रापि चूर्णिकाराभिः प्रायेण वेदत्रयम्, एव सप्ततिकामाष्यपञ्चमशतमगाथावृत्तौ श्रीमेरुतुङ्गाचार्यैरपि । तेनाकारमात्रमङ्गीकृत्य कार्मग्रन्थिकमताभिप्रायेण लब्धिपर्याप्तासङ्गिनि वेदत्रयं समवति, तथैव बहुभिरुक्तिकारैः समर्थितत्वात् । चूर्णिकारास्तु विपाकोदयापेक्षया वेदत्रयमसङ्गिनि लब्धिपर्याप्ते स्वीकुर्वन्ति, न पुनः केवलमाकारमात्रेणेति विशेष । न पुनर्लब्ध्यपर्याप्तसङ्गिसङ्गिनोरपि ।

न च “चउचउ पुमिथिवेए” इति पञ्चमसग्रहवचनम्, “पुमिथिवेए चरम चउरो ॥” इति प्राचीनपङ्गीतिवचनम्, “थीणरपणिदि चरमाचउ” इति नव्यषडशीति वचनम्, इत्यादिवचनैस्तथा श्रीरामदेवगणिनैव प्राचीनषडशीतिदशमगाथाविवरणे जीवस्थानेषु मार्गणास्थानानि दर्शयता-“असण्णिभज्जत्तगस्स उत्तरभेया । त जहा वेयतिग । सन्निपचिदियस्स अपज्जगस्स उत्तरभेया । त जहा-गइ चउक्क वेयतिगा ॥” इत्यादिना पर्याप्ता-ऽपर्याप्तसङ्गिद्वया-ऽसङ्गिद्वयलक्षणेपु चतुर्ष्वपि जीवस्थानेषु वेदत्रयं प्रतिपादितम्, अतः कथं लब्ध्यपर्याप्तसङ्गिसङ्गिनोस्तन्निपिध्यते भवतेति वाच्यम्, अभिप्राया-ऽपरिज्ञानात्, यतस्तत्र सर्वत्रा-ऽप्यपर्याप्तं करणेना-ऽपर्याप्ता विवक्षित इति न कश्चिदपि दोषः, भवत्वत्रापि करणा-ऽपर्याप्त इति चेत्, सत्यम्, तदेहाऽप्यदोष एव, किन्तु सोऽत्र विवक्षितो नास्ति, यतो लब्ध्यपर्याप्तस्यैवा-ऽत्र विवक्षितत्वेन सप्तस्वप्नपर्याप्तेषु प्रथमगुणस्थानादिकमेव दर्शितम्, अन्यथा द्वितीयगुणस्थानादिकमपि दर्शितं स्यात् ।

ननु यथा भाववेदमाश्रित्य सप्ततिकाभाष्य-५६-५७ तमगाथावृत्तौ मेरुतुङ्गाचार्यैर्विपाकोदयतो देव-नारकाणां वेदत्रयस्य समवो दर्शितं तथा च तद्ग्रन्थ-“यद्यप्याकृत्या देवानां क्लीबवेदो नारकाणां च पुंस्त्रीवेदौ न स्तस्तथा-ऽपि विपाकोदयतो वेदत्रयमपि समवति” इति । तथा लब्ध्या-ऽपर्याप्तयोः सङ्गिसङ्गिनोरपि स्यादिति चेत्, न, तत्रैव सप्ततिकाभाष्य ५५ तमगाथावृत्तौ तैरेव मेरुतुङ्गाचार्यैर्लब्धिपर्याप्त-र्यातिरिक्तानां त्रयोदशानामपि जीवभेदानां केवलस्य नपुंसकवेदस्यैवोदयस्य प्रतिपादनात्, एवमन्यत्रापि । अन्यथा यथा “उदयविगपरा जे जे उदीरणाए वि ह्योति ते ते उ । अतमुहुत्तियउदया समया-दारवम भगा य ॥३३॥” इति पञ्चसग्रहसत्कसप्ततिकागाथावृत्तौ-“युग्मेन वेदेन वा-ऽवश्यमन्तमुहुर्ता-दरत परावर्त्तितव्यम्” (पञ्चसग्रहप्रथमभागपत्र-२४३-१) इति स्ववचनमाहृत्य पञ्चसहकारैर्जीवस्थानेषु बन्धहेतून् दर्शयन्निश्चतुर्दशैवपि जीवस्थानेषु वेदत्रयं प्रतिपादितम्, (पञ्चसग्रहप्रथमभागपत्र-१७६-१८२) तथा चूर्णिकार-भाष्यवृत्तिकारादिभिरपि चतुर्दशैवपि जीवभेदेषु वेदत्रयस्य विधानं कृतं भवेत्, तुल्यन्यायत्वात्, न च तैस्तथा विहितम्, एव प्रस्तुतग्रन्थे-ऽपि, तथा श्रीमन्मलयगिरिपादैरपि ‘उदयविगपरा ” (पञ्चसग्रहसप्ततिका ३३ गाथा प्रथमभागपत्र-२४२-२) इति गाथावृत्तौ ‘युग्मेन वेदेन वाऽवश्यं मुहुत्तादारत परावर्त्तितव्यम्” इति पञ्चसग्रहकारवचनं पुरस्कृत्य भावनायां विहितत्वे-ऽपि जीवभेदेषु बन्धनिरूपणावसरे तदनादृतम्” उक्तं च तैस्तत्र-“इह सङ्गिपञ्चेन्द्रियव्यतिरिक्ता शेषाः सर्वे-ऽपि ससारिणो जीवा परमार्थिनो नपुंसकाः, केवलमसङ्गिपञ्चेन्द्रिया स्त्रीषु लिङ्गाकारमात्रमधिकृत्य पुंस्त्रीवेदे प्राप्यन्ते” (पञ्चसग्रह प्रथमभागपत्र १८३-) इति । ततो वेदत्रयपरावृत्तिमतमप्रधानं प्रतिभाति । किञ्च लब्ध्यपर्याप्तं सर्वो-ऽपि नपुंसक एवेति हेतोरत्र लब्ध्यपर्याप्तसङ्गिसङ्गिनोर्वेदत्रयस्य यत्प्रतिपादनं तद् विचारणीयम् ।

इग्वीसे ते पणरस सत्तरसयं तु बंधि वावीसे ।

बत्तीसं संतसयं सन्नी सामन्नगहणैण ॥२३९॥ (२६८) [२७५]

ठवणा—

बध०	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
उदय	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०
सत्ता	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३	३ ३ ३

२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१
८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	७ ६ ९	७ ६ ९	७ ६ ९	७ ६ ९	७ ६ ९
३	३	३	३	३	३	३	३	३

इति जीवस्थानेषु मोह समाप्त ॥

जीवस्थानेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि—

पणदुगपणगं पणचउ पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।

पणलुपपणगं लुचलुपपणगं अट्टदसगं च ॥सू.—२७॥ (२६६) [२७६]

एतद्वाधाद्वयस्य विवरणे L D प्रतौ गाथाप्रतीकानुसारेण पूर्वं सप्तम्बप्यपर्याप्तजीवभेदेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि प्रतिपाद्य तत पर्याप्तसूक्ष्मजीवभेदे, पर्याप्तवाटरजीवभेदे, पर्याप्तविकलेन्द्रियभेदत्रये पर्याप्ताऽसञ्जिजीवभेदे च क्रमेण भणितानि । J प्रतिप्रेसकोप्या पुन प्राक् त्रयोदशस्वपि जीवभेदेषु बन्धस्थानानि, तत उदयस्थानानि त्रयोदशजीवभेदेषु, तत सत्तास्थानान्यपि त्रयोदशसु जीवभेदेषु प्रतिपादितानि इति गाथाभेद गाथाक्रमभेदश्च J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया विवरणगाथा-२४१ त २८३ सन्ति । L D प्रतौ विवरणगाथा-३०१ त ३५० भवन्ति ।

तथा L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धकत्व वैक्रियोदयवता पञ्चविंशति-सप्तविंशत्युदयस्थानद्वयगताना प्रतिषिद्धम्, J प्रतिप्रेसकोप्या न निषिद्धम्, नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने एकविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयोस्त्रिनवतिसत्स्थान J प्रतिप्रेसकोप्या निषिद्धमपि L D प्रतौ न प्रतिसिद्धम् । तेन J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धस्थाने पञ्चविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक द्वे द्वे सत्तास्थाने इति चत्वारि सत्तास्थानानि न्यूनानि, एकोनत्रिंशद्बन्धस्थान एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक त्रिनवतिसत्स्थानमिति द्वे सत्कर्मस्थाने अधिके । तत पर्याप्तसञ्जिजीवभेदे बन्धाऽबन्धस्थानवर्त्युदयस्थानगतानि समुदितानि सर्वाणि सत्तास्थानानि L D प्रतौ अष्टोत्तरशतद्वयम् २०८, J प्रतिप्रेसकोप्या दशाधिकद्विशते २१० सन्तीति विशेष ।

१ “ति” इत्यपि पाठ ।

सत्तेव अपज्जत्ता सामी ^१सुहुमो व वायरो चेव ।

विगलिदिया उ तिन्नि य तह य असन्नी य सन्नी य ॥सु.-२८ । (३००)[२७७]

^२पणदुगपणगति एएसिं विवरण ॥ पणवधट्टाणा ते य इमे—

तिगर ३पणवीसर २५छवीसा २६गुणतीसार ९तीसर ३०बंधाणा उ ।

पढमम्मि जीवठाणे इय नेयं जाव तेरससु ॥२२०॥ [२७८]

पढमम्मि जीवठाणे इय णेयं जाव सत्तसु य । (३०१)

भगा इह मिच्छसमा चारणाहिट्टा उ कया ॥

चउ ४ पणवीसा २५ सोलस १६ वाणवइसया वि हुंति चालीसा ९२४०

छायालं वत्तीसा ४६३२ सत्तअपज्जेसु पत्तेयं ॥ (३०२)

अमणस्मी पज्जत्ते ^३छट्टा अडवीमवधिमागच्छे ।

सन्नी पज्जत्ते पुण अट्टेव य होंति पुव्वुत्ता ॥२४१॥ [२७९]

भंगा इह पुव्वुत्ता सव्वत्थ वि जीवठाणवधेसु ।

पत्तेयं जोइज्जा जे जत्थ व होति संभविया ॥२४२॥ [२८०]

इगचउवीसेगिंदिसु २१।२४ छवीसइगवीस २६।२१ पंचसु तसेसु ।

दो दो उदयअपज्जे[सु] भंगा सव्वे वि ^४पंचंसा ॥२४३॥ (३०३) [२८१]

इगवीसे दो भंगा वायरसुहुमेहि ^५एक्कइक्केण ।

^६वायरपत्तेगियरे चउरो चउवीसि अजसेण ॥२४४॥ (३०४) [२८२]

अप्पज्जपणतसाणं सव्वासुभपगइमिलिय^७मेक्केक्कं ।

इगवीसे छव्वीसे पण पण पत्तेयं ^८दुणहं पि ॥२४५॥ (३०५) [२८३]

नवर मणुयअपज्जे भगा चउ चउरसंतकम्मंसा ।

अट्टत्तरी न तेसि सेसा चत्तारि संभविया ॥२४६॥ (३०६) [२८४]

एत्थ अपज्जत्ताणं असन्निसन्नीण भंगया दो दो ।

इगवीसे छव्वीसे मणुजोगे चउरए हुंति ॥२४७॥ [२८५]

पणचउपणगं सुहुमे बंधे भंगा अपज्जसमसव्वे ।

उदएसु^९ पुण भंगा चउसु वि उदएसु पत्तेयं ॥ (३१०)

१ "तह सुहमवायरा चेव" इत्यपि, 'सुहमा य वायरा चेव' इत्यपि, "सुहुमो य वायरो चेव" इत्यपि, वा पाठ । २ अय पाठ L D. प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ३ "छट्टा" इति वा । ४ "पणसना ॥ (३०३)" इति L D प्रतौ । ५ "एक्कमेक्केण" इति L D प्रतौ । ६ "तह पत्तेगियरेहिं दो दो" इति L D प्रतौ । ७ "एक्कोक्को" इति L D प्रतौ । ८ "भगा उ" इति L D प्रतौ ।

इगवीसे ते पणरस सत्तरसयं तु वंधि वावीसे ।

वत्तीसं संतसयं सन्नी सामन्नगहणेण ॥२३९॥ (२६८) [२७५]

ठवणा—

वध०	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२२
उदय	८ ६ १०	८ ९ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ९ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०
सत्ता	२७ ३ ३	६	६	९	६	६	६	९	६

२२	२२	२२	२२	२१	२१	२१	२१	२१
८ ६ १०	८ ६ १०	८ ६ १०	८ ९ १०	७ ८ ९	७ ८ ६	७ ८ ९	७ ८ ९	७ ८ ९
६	९	९	६	३	३	३	३	३

इति जीवस्थानेषु सोह समाप्त ॥

जीवस्थानेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि—

पणदुगपणगं पणचउ पणगं पणगा ह्वंति तिन्नेव ।

पणलुपणग लुलुपणगं अट्टदसगं च ॥सू.—२७॥ (२६६) [२७६]

एतद्गाथाद्वयस्य विवरणे L D प्रतौ गाथाप्रतीकानुसारेण पूर्वं सप्तस्वप्यपर्याप्तजीवभेदेषु नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानानि प्रतिपाद्य तत पर्याप्तसूक्ष्मजीवभेदे, पर्याप्तवाटरजीवभेदे, पर्याप्तविकलेन्द्रियभेदत्रये पर्याप्ताऽसञ्ज्ञिजीवभेदे च क्रमेण भणितानि । J प्रतिप्रेसकोप्या पुन प्राक् त्रयोदशस्वपि जीवभेदेषु बन्धस्थानानि, तत उदयस्थानानि त्रयोदशजीवभेदेषु, तत सत्तास्थानान्यपि त्रयोदशसु जीवभेदेषु प्रतिपादितानि इति गाथाभेद गाथाक्रमभेदश्च J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया विवरणगाथा-२४१ त २८३ सन्ति । L D प्रतौ विवरणगाथा-३०१ त ३५० भवन्ति ।

तथा L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धकत्व वैक्रियोदयवता पञ्चविंशति-सप्तविंशत्युदयस्थानद्वयगताना प्रतिषिद्धम्, J प्रतिप्रेसकोप्या न निषिद्धम्, नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने एकविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयोस्त्रिनवतिसत्स्थान J प्रतिप्रेसकोप्या निषिद्धमपि L D प्रतौ न प्रतिषिद्धम् । तेन J प्रतिप्रेसकोप्यपेक्षया L D प्रतौ त्रयोविंशतिबन्धस्थाने पञ्चविंशतिषड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक द्वे द्वे सत्तास्थाने इति चत्वारि सत्तास्थानानि न्यूनानि, एकोनत्रिंशद्बन्धस्थान एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानयो प्रत्येक त्रिनवतिसत्स्थानमिति द्वे सत्कर्मस्थाने अधिके । तत पर्याप्तसञ्ज्ञिजीवभेदे बन्धाऽबन्धस्थानवर्त्युदयस्थानगतानि समुदितानि सर्वाणि सत्तास्थानानि L, D प्रतौ अष्टोत्तरशतद्वयम् २०८, J प्रतिप्रेसकोप्या दशाधिकद्विशते २१० सन्तीति विशेष ।

१ “ति” इत्यपि पाठ ।

सत्तेव अपञ्जत्ता सामी सुहुमो व वायरो चेव ।

विगलिदिघाउ तिल्लि य तह य असन्नी य सन्नी य ॥सू.-२८। (३००)[२७७]

२पणदुगपणगति एएसि विवरण ॥ पणबंधट्टाणा ते य इमे-

तिगर ३पणवीस २५छवीसा २६गुणतीसार ९तीस ३०बंधठाणा उ ।

पढमम्मि जीवठाणे इय नेयं जाव तेरससु ॥२२०॥ [२७८]

पढमम्मि जीवठाणे इय णेयं जाव सत्तसु य । (३०१)

भगा इह मिच्छसमा चारणाहिट्टा उ कया ॥

चउ ४ पणवीसा २५ सोलस १६ वाणवइसया वि हुंति चालीसा ९२४०

छायालं वत्तीसा ४६३२ सत्तअपज्जेसु पत्तेयं ॥ (३०२)

अमणम्मी पज्जत्ते ३छट्टा अडवीमवधिमागच्छे ।

सन्नी पज्जत्ते पुण अट्टेव य होंति पुव्वुत्ता ॥२४१॥ [२७९]

भंगा इह पुव्वुत्ता सव्वत्थ वि जीवठाणवधेसु ।

पत्तेयं जोइज्जा जे जत्थ व होति संभविया ॥२४२॥ [२८०]

इगचउवीसेगिंदिसु २१२४ छवीसइगवीस २६।२१ पंचसु तसेसु ।

दो दो उदयअपज्जे[सु] भंगा सव्वे वि ५पंचंसा ॥२४३॥ (३०३) [२८१]

इगवीसे दो भंगा वायरसुहुमेहि ५एक्कइवकेण ।

६वायरपत्तेगियरे चउरो चउवीसि अजसेण ॥२४४॥ (३०४) [२८२]

अप्पज्जपणतसाणं सव्वासुभपगइमलिय ७मेक्केक्कं ।

इगवीसे छवीसे पण पण पत्तेय ८दुण्हं पि ॥२४५॥ (३०५) [२८३]

नवर मणुयअपज्जे भगा चउ चउरसंतकम्मंसा ।

अट्टत्तरी न तेसि सेसा चत्तारि संभविया ॥२४६॥ (३०६) [२८४]

एत्थ अपज्जत्ताणं असन्निसन्नीण भंगया दो दो ।

इगवीसे छवीसे मणुजोगे चउरए हुंति ॥२४७॥ [२८५]

पणचउपणगं सुहमे बंधे भंगा अपज्जसमसव्वे ।

उदएसुं पुण भंगा चउसु वि उदएसु पत्तेयं ॥ (३१०)

१ "तह सुहमवायरा चेव" इत्यपि, 'सुहमा य वायरा चेव' इत्यपि, "सुहुमो य वायरो चेव" इत्यपि, वा पाठ । २ अथ पाठ L D. प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । ३ "छट्टा" इति वा । ४ "पणसना ॥ (३०३)" इति L D प्रतौ । ५ "एक्कमेक्केण" इति L D प्रतौ । ६ "तह पत्तेगियरेहिं दो दो" इति L D प्रतौ । ७ "एक्कोको" इति L D प्रतौ । ८ "भगा उ" इति L D प्रतौ ।

पञ्जत्त^१सुहुम एगो इगवीसे दुगदुगं च इयरेसुं ।
 साहारणइयरेहि भंगा पण पंचसंतंसा ॥२४८॥ (३११) [२८६]
 इगवीसे चउवीसे इग दुग पणसंतभंगया तिन्नि ।
 तह पणवीसछवीसे इक्केक्को अजसउदएणं ॥२४९॥ [२८७]
 पणवीसे छवीसे इक्केक्को पंच सतंसो ॥ (३१२)
^३दो इह भगा अन्ने साहारणि ^५पणवीस छवीसे ।
 अट्टत्तरी न तेसिं तेऊवाऊण संभवइ ॥२५०॥ (३१३) [२८८]
 सुहमे पज्जे उदया चउरो पत्तेय पंच संतंसा ।
 चउ पंचा इह वीसं वधे वंधे य पत्तेयं ॥ (३१४)
^५सुहमेगिंदियपज्जत्तठवणाजतइय-

सुहुमे पज्जे पणचउपणग ति पणवधा चउउदया पणसता					वधठाणा	वधभगा	उदय- भगा	सत्ता- ठाणा
उदयठा०	२१	२४	२५	२६	२३	४	७	२०
पणसता	१	२	प्र १	प्र १	२५	२५	७	२०
चउसता	०	०	सा १	सा १	२६	१६	७	२०
सत्तठाणा-	९२	९२	९२	९२	२६	६२४०	७	२०
पणसता	८८	८८	८८	८८	३०	४६३२	७	२०
चउभगा,	८६	८६	८६	८६	सव्वे-	१३६१७	३५	१००
चउसता	८०	८०	८०	८०				
दुन्निभगा।	७८	७८	७८	७८	सुहुमपज्जत्तवधभगसखा १३६१७			

पणगा तिन्नेव त्ति ।

तिविगप्प वायराणं वंधोदयसंतं पणग पत्तेयं ।

बंधा उ अपज्जसमा उदया पंचेव पुण एए ॥ (३१५)

वायरइगवीसाए दो भंग जसेयरेहि पणसंता ।

जसपत्तेइयरेहिं चउरो चउवीसि तह चेव ॥२५१॥ (३१६) [२८९]

१ 'सुहुमि' इति L D प्रतौ । २ "वरेण्यं" इति L D प्रतौ । ३ "दो भगा इह" इति ।
 ४ 'पञ्जवीसि' इति च L D. प्रतौ । ५ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

ते पणवीसछवीसे चउरो चउरो य एसि 'दुगभंगा ।

पत्तेयअजसचरिया पण संता २हुंति नायव्वा ॥२५२॥ (३१७) [२९०]

एगिदिअपज्जाणं छव्भंगा सुहमि पज्जि पंचेव ।

अड वायरपज्जत्ते सव्वे उणवीस ३पंचंसा ॥२५३॥ (३१६) [२६१]

४सेसा उज्जोयचरिया चउरो दो आयवेण भंगा उ ।

छव्वीसे सगवीसे तिगत्राउविउव्वि पुव्वुत्ता ॥२५४॥ (३१८) [२९२]

पंचेव उदयठाणा चउरो पणसंत एगु पणसंतो ।

चउवीससंतभेया वंधे वंधे य पत्तेयं ॥ (३२०)

उणवीसं पणसत्ता सेसा तेवीस चउरसंता उ ।

वायालीसविगप्पा एगिदियसयलउदएसुं ॥२५५॥ [२९३]

पज्जत्तजसजसेहिं ५दो दो इगवीसि तह य छव्वीसे ।

वेइंदियतियचउरिंदियाण पण पण संतंस पत्तेयं ॥२५६॥ [२६४]

विगलअपज्जत्ताणं तिगतिग इगवीसि तह य छव्वीसे ।

पुव्वुत्ता भंगा वारस पुण एए (त्ति) अट्टारा ॥२५७॥ [२६५]

सूभगआएज्जजसेयरेहिं अट्टेव पज्जइगवीसे ।

संधयणागिइ भणिया उदए छव्वीसए भंगा ॥२५८॥ [२९६]

इय सन्निअसन्नीणं तिरियाणं पंच अंसिया नेया ५७६ ।

सेसा उ सव्वभंगा अट्टत्तरिवज्ज संभविया ॥२५९॥ [२६७]

नामे इह संवेहे जीवठाणेसु वंधसंखाओ ।

बंधेसु उदयसंखा उदएसु य संतसंखा उ ॥२६०॥ (३०९) [२९८]

१ "एक्केक्के" इति L D प्रती । २ "सेसचउसता" इति L D प्रती । ३ "पणसता" इति L D प्रती । ४ "अन्ने" इति L D प्रती । ५ "दुत्सु वि उदएसु दुन्नि पत्तेय" इति L D प्रती ।

सत्तअपज्जेसु ठवणा -

सत्तअपज्जेसु पण दुग पणग ति, पण वधठाणा, दो उदयठाणा, पण सत्ताणा ।														
जीवठाणा	सुहु० अ०	वाद० अ०	वेह० अ०	तेह० अ०	चउ० अ०	अस० अ०	स० अ०							
उदयठाणा	२१	२४	२१	२४	२१	२६	२१	२६	२१	२६	२१	२६	२१	२६
उदयभगा	१	२	१	२	१	१	१	१	१	१	ति १ म १	ति १ म १	ति १ म १	ति १ म १
सत्ताठाणा	६२	६२	६२	६२	९२	९२	६२	६२	६२	६२	६२	६२	९२	९२
पचसत्ता	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८
	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६
	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५०
	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८	७८

वधठाणा	वधभगा	उदय-ठाणा	उदय-भगा	सत्ता-ठाणा
२३	४	२	१६	७०
२५	२५	२	१६	७०
२६	१६	२	१६	७०
२६	६२४०	२	१६	७०
३०	४६३२	२	१६	७०
सव्वे →	१३९७		५०	३५०

सत्तअपज्जेसु पत्तेयवधभगा १३९९७

तिगपणवीसछवीसे उणतीसे तीसबंधठाणेषु ।

नव नव उदयठाणा केवलिए उदय मुत्तूर्णं ॥२६१॥

[२६६]

इगिचित्तिचउरपणिदियतिरिमणुसविउध्व पाय बंधंति ।

नियनियउदयविगप्पे सव्वे जे जस्स संभविया ॥२६२॥

[३००]

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रनिप्रेसकोप्या नास्ति ।

एगिदितिरितसेसु'

तेज्वाऊणंतरूप्यन्त्रा ।

पञ्जत्तीअसमत्ता

अट्टत्तरिसंत

केसिं वि

॥२६३॥ (३२१) [३०१]

'पञ्जत्तवायरेगिदियठवणा जतइय—

वायरपञ्जे पणगा हवति तिन्नेव पण वधा, पण उदया, पण सता ।						वधठाणा	वधभगा	उदय- भंगा	सत्ता- ठाणा
उदयठाणा	२१	२४	२५	२६	२७	२३	५	२६	२४
पणसतभगा	२	४	१	१	०	२५	२५	२६	२४
चउसतभगा	०	१	४	१०	६	२६	१६	२६	२४
सत्ताठाणा	५	५	५	५	४	२९	६२४०	२६	२४
अट्टभगा पणसता अट्टारस चउसता, वेउठिवभगा ३ तिभता						३०	४६३२	२६	२४
						(सव्वे →	१३६१७	१४५	१२०)
						वायरएगिदियपञ्जत्तवधभगा ॥१३९१७॥			

पण छप्पण विगलाणं तिधिगप्पा एसि हुंति पत्तेयं ।

पण वंध अपञ्जसमा उदया छच्चेव पुञ्चुत्ता ॥ (३२२)

पञ्जत्तजसजसेहिं दुस्सु वि उदएसु दुन्नि पत्तेयं ।

नवरं दो उणतीसा सासुज्जोयाण एगयरे ॥ (३२३)

तह तीसाओ तिन्नि उ सरदुगउज्जोयएगयरेखेवे ।

सुरदुगएगयरेणं इगतीसा दुन्नि उदएसु ॥ (३२४)

छद्दुगुणा वारसग दो गुणतीसे य चउर तीसुदए ।

दो इगतीसे अहिया सव्वे विगलाण सट्टि त्ति ॥ (३२५)

वित्तिचउरिंदियपञ्जे दो दो पत्तेय भंग छच्छ ।

इगवीसे छव्वीसे पणसंता सेसचउसंता ॥ (३२६)

एए वित्तिचउरिंदिय उदया सव्वे वि हुंति पत्तेयं ।

दो पढमा पणसंता चउरुदया चउरसंता उ ॥ (३२७)

बंधेसुं जे भंगा उदया भंगा उ जे उ वंधम्मि ।

उदएसुं जे सत्ता पत्तेयं मग्गणा होइ ॥ (३२८)

१ ठवणा-	पण छप्पण विगलाण ति । पण वधा छ उदया पणसतठाणा विगलेसु						वधठाणा	बंधभगा	उदय- भगा	सत्ता- ठाणा
	उदयठा०	२१	२६	२८	२९	३०				
	२	२	०	०	०	०	२३	४	२०	२६
पणसता	०	०	२	४	६	४	२५	२५	२०	२६
चउसंता	०	०	२	४	६	४	२६	१६	२०	२६
विगलभगा	६	६	६	१२	१८	१२	२६	९२४०	२०	२६
सत्ताठाणा	५	५	४	४	४	४	३०	४६३२	२०	२६
एव वेइदिय-तेइदिय-चउदियाण पज्जाण पत्तेय							(सठवे→	१३९१७	१००	१३०)
							वधे पत्तेयविगलभगा ॥१३९१७॥			

छ छप्पणग ति ॥

पज्जामण विगलसमा उदयविगप्पा उ सन्निसारिच्छा ।
 वंधेसु संतसंखा विगलाण व तस्स तीससयं (३२६)
 तह अडवीसा अन्ना सवियप्पा वंध अमणाणं ।
 देवनिरयगइज्जुगा अंतिल्लेहिं दोहि उदएहि ॥ (३३०)
 अट्टासी वाणउई सत्ताठाणा उ दोन्नि पुव्वुत्ता ।
 छासीई होइ तहि दोसु वि उदएसु छस्संता (३३१)

२ ठवणा-	छछप्पणग ति छ वधा, (छ) उदया (पण)सत्ताठाणा उ अमणपज्जे						वधठाणा	वधभगा	उदयभगा	सतठाणा
	उदयठाणा→	२१	२६	२८	२९	३०				
	८	२८	०	०	०	०	२३	४	४६०४	२६
पणसतभगा→	०	०	५७६	११५२	१७२८	११५२	२५	२५	४६०४	२६
चउसतभगा→	०	०	५७६	११५२	१७२८	११५२	२६	१६	४६०४	२६
सत्ताठाणा→	५	५	४	४	४	४	२८	६	२८८०	६
							२९	९२४०	४६०४	२६
							३०	४६३२	४६०४	२६
							(सठवे→	१३६२६	७७४००	१३६)

- अप्यज्जे पणवंधा दुग्दुग् उदयाउ पंच'सत्तंसा ।
 पंचुदया दसठाणा वंधे वंधे य पत्तेय ॥२६४॥ (३०७) [३०२]
 पंचगुणा पंचासा सत्त अपज्जत्त 'तेहि गुणकारो ।
 तिन्नि सया ^३पन्नासा संतट्टाणाण उदएसु' ॥२६५॥ (३०८) [३०३]
 सुहुमेयर पज्जाणं ठाणा चउ १००पंच१२०उदयसखाए ।
 चउ चउ पणसंतंसा एगे चउसंतकम्मंसो ॥२६६॥ [३०४]
 वेइंदियाइपज्जत्तयाण छच्छुदयठाण जा अमणा ।
 आइमदुग् पणसंता अट्टत्तरि वज्जिया सेसा ॥२६७॥ [३०५]
 दुसु दस चउ सोलसगं वंधे वंधे य मिलिय तीससयं ।
 वेइंदियाइ अमणे मिलिया सयपंच वीसहिया ॥२६८॥ [३०६]
 तह अट्टवीसबंधे अमणाणं दुन्नि उदयअंतिल्ला ।
 वाणउई अट्टासी छलसी पत्तेय दोसु छट्टाणा ॥२६९॥ [३०७]
 तिण्णि सया पंचासा सयमेगं तह सयं च वीसहियं ।
 अप्पज्जसुहुमवारे विगलामण पंचछव्वीसा ॥२७०॥ [३०८]
 छन्नउय सहस्सेगं सतट्टाणाणि जीवठाणेसु' ।
 तेरससु आइमेसु' अट्टट्टदसगाण ई भणिमो ॥२७१॥ [३०९]
 पुच्चुत्तबंधठाणा अट्ट उ उदया उ चउर मुत्तूण ।
 केवलित्तिगचउवीसं 'दस सता अट्ट नव मुत्तु ॥२७२॥ (३३२) [३१०]
 एगिदियवायाला विगले छावट्टि केवलीणट्ट ।
 चउरो य अपज्जाणं भोत्तु' सेसा उ ७६७१ सण्णिस्स ॥२७३॥ (३३३) [३११]
 विगलसमा सन्नीसु' छस्सु वि उदएसु संतठाणाइं ।
 पणवीसे सगवीसे दुग् दुग् । १२ । ८८ । एए विउव्वीणं ॥२७४॥ (३३४) [३१२]

^४ठवणा-

उदय- ठाणा →	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सखा ↓
उदयभगा →	२५	२६	५७६	२६	११६६	१७७२	२८६८	११५२	७६७१
सत्ताठाणा →	५	२	५	२	४	४	४	४	३०

१ "सतसा" इति L. D. प्रती । २ "तेहि" इति L. D. प्रती । ३ "पंचासा" इति L. D. प्रती ।
 ४ 'सता दस' इति L. D. प्रती । ५ इदं यन्त्र L. D. प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

तेवीसबंधगाणं छव्वीसा हुंति संतठाणाणि ।
पणसगवीसे वज्जिय सेसा उदया जओ तेसिं ॥ (३३५)
तेवीसे छव्वीसं तीसं बंधेसु चउसु पत्तेयं ।

ठवणा-

वधठाणा	२३	२५	२६	२६	३०	एव सत्ता ॥१४६॥
वधभगा	४	२५	१६	१२४८	४६४१ (१३९३४)	
सत्ताठाणा	२६	३०	३०	३०	३०	(१४६)

उणवीसा पुव्वुत्ता सत्ताठाणा उ अडवीसे ॥ (३३६)

तीसं तु संतठाणा पंचसु बंधेसु होंति पत्तेयं ।

१५० उणवीसा पुव्वुत्ता १९ सत्ताठाणा उ अडवीसे ॥७५॥ [३१३]

तह उणतीसे बंधे सत्त उ उदया उ मणुयमासज्ज ।

तेणवई उणनवई पत्तेयं संतठाणाइं ॥२७६॥ (३३७) [३१४]

मणुतित्थसंतियाणं सत्तसु उदएसु वट्टमाणाणं ।

उणतीस बंधठाणं पंचसु दो । ६३ ८६ । Δदोसु उणनवई ॥२७७॥ [३१५]

१ इद् यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

Δ नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने मनुष्याणामेव २५-२७-२८-२९-३० प्रकृत्यात्मकेषु पञ्चस्वेवोदय-स्थानेषु वर्तमानानां त्रिनवतिसत्तास्थानस्थानं प्राप्यते, नेतरोदयस्थानेषु वर्तमानानाम्, यतो नार-केषु जिननामा-ऽऽहारकसप्तकोभययुगपत्सकर्मकाभावात्तिर्यञ्चु जिननामसत्ताया एवाऽऽभावाद्देवेषु नाम्नस्त्रिनवतिसत्कर्मणामेकोनत्रिंशद्बन्धस्थानस्या-ऽभावान्मनुष्या-ऽतिरिक्तगतित्रयगतानां जीवानां नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने नाम्नस्त्रिनवतिसत्कर्मस्थानं नाऽवाप्यते, चतुर्विंशत्युदयस्थानस्य केवला-नामेकेन्द्रियाणामेव प्रायोग्यत्वेन मनुष्यप्रायोग्याण्युदयस्थानान्येकादश, तत्राऽष्टनव विंशत्ये-कत्रिंशत्प्रकृ-त्यात्मकोदयस्थानचतुष्कस्य केवलनामेव सम्भवान्नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने वा त्रिनवतिसत्कर्मणि वा तद्दुदयस्थानचतुष्कं नैव प्राप्यते, ततो नाम्न एकोनत्रिंशद्बन्धस्थाने २१, २५, २६, २७, २८, २९, ३० प्रकृत्यात्मकानि सप्तैवोदयस्थानानि, सन्ति, तत्रा-ऽपि २१-२६, एकविंशति पड्विंशतिप्रकृत्यात्मकवजेशेषेषु पञ्चस्वेवोदयस्थानेषु नाम्नस्त्रिनवतिसत्ता प्राप्यते, २१-२६ एकविंशति पड्विंशतिप्रकृत्यात्मकोदय-स्थानद्वये त्रिनवतिसत्कर्मता कथं न प्राप्यते इति चेत् उच्यते-जिननामा-ऽऽहारकसप्तकोभयसत्कर्मणा मनुष्याणां नियमतो वैमानिकदेवेष्वेवोत्पादोऽस्ति । तेषाञ्च सम्यग्दृष्टित्वेन जघन्यतोऽपि साधिक-पत्त्योपमस्थितिःकेष्वेवोत्पादस्य सम्भवेन वैमानिकभयस्थितेरपि जघन्यत पत्त्योपमपमाणत्वेन च पत्त्यो-पमतो न्यूनस्थितेरनुत्पादादा-“ऽऽहारकसप्तकोद्वलनं कृत्वैव” पुनर्मनुष्येषूत्पादो भवति, तेन तदानीम-पर्याप्ताऽवस्थायामेकविंशति-पड्विंशतिप्रकृत्यात्मकोदयस्थानयोर्वर्तमानानां मनुष्याणामेकोनत्रिंशद्बन्ध-स्थाने त्रिनवतिसत्ता नामकर्मणो नैव भवति, आहारकसप्तको जिननामोभयसत्कर्मताया अभावात्, आहा-रकसप्तकस्य जिननाम्नो वा नूतनबन्धस्य तत्राऽसद्भावाच्च ।

देवगईपाउगं उणातीमं वंधमाणणं ॥ (३३८)

^१सत्ता सव्वेसु दो दो १३, ८६ ॥
ठवणा—

२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०
२	२	२	२	२	२	२

एवं तीसे वंधे नवर सुग मणुयजोग वंधंति ।

छसु निएसु उदएसु वारसठाणाई संतस्स १२ ॥२७८॥ (३३६) [३१६]

^२ठवणा—

बदयठाणा	२१	२५	२७	२८	२९	३०
सत्ताठाणा	२	२	२	२	२	२

बंधम्मि एगतीसे उदओ ^३तीसाइ तिणवई ^४संता ।

तह एगबंधि उदओ सत्ताठाणाइं अट्टेव ॥२७९॥ (३४०) [३१७]

छायालं सयमेगं छव्वीसुणवीस तह य नव ठाणा ।

अव्वंधि अट्ट सन्निसु दो सय अडुत्तरा सव्वे २०८ ॥ (३४१)

^४ठवणा—

वधठाणा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	०
उदयठाणा	८	८	८	८	८	८	१	१	१
सत्ताठाणा	२६	३०	३०	१९	३०	३०	१	८	८ (२०८)

छव्वीस केवलीणं तिगतिग सत्ता नवऽट्ट उदएसु ।

तित्था-ऽतित्थगराणं दो दो सेसेसु सव्वेसु ॥ (३४२)

मतान्तरेण सिद्धान्ता-ऽभिप्रायेण पुन सम्यग्दृष्टीना पत्त्योपमाऽसङ्ख्येयभागादिन्यूनस्थितेष्वपि भवनपत्यादिदेवेपूर्वादोऽस्ति, ततस्तत्रा-ऽऽहारकसप्तकजिननामोभयसत्कर्मा मनुष्यउत्पत्त्या-ऽऽहारकसप्तकेऽ-नुद्वलिते सत्येव पुनर्मनुष्यो भवति, तदा तस्य नाम्न एकोनत्रिंशद्वन्धे एकविंशति-षड्विंशत्युदयस्थानद्वये त्रिनवतिसत्कर्मता लभ्यते, एतदभिप्रायेणैव सप्ततिकामूल-चूर्णि वृत्तिपु तथा-ऽत्रैव ग्रन्थे प्राग् ॥२०६॥ दयस्थानद्वये (२५०) तमगाथायामनन्तर ॥२७६॥ तमगाथायाञ्च नाम्न एकोनत्रिंशद्वन्धस्थाने सप्तोदय-स्थानेषु त्रिनवतिसत्कर्मता प्रतिपादितेति सम्भाव्यते । L D प्रतौ पुनरत्राऽपि-त्रिनवतिसत्कर्मता एकविंशति षड्विंशत्युदयस्थानद्वये निषिद्धा । १ २-५ इद यन्त्र L D प्रतौ । ३ “तीसन्ह” इति L D प्रतौ । ४ “सत” इति L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रसक्तोप्या नास्ति ।

'ठवणा—

अद्वयदसग ति, अद्वयवधटाणा अद्वयउदयट्टाणा सत्ताठाणा दम सन्निसि								वधटाणा	वधभगा	उदय भगा	सत्ता ठाणा	
उदयटाणा	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	२३	४	७५६२	२६
सन्नितिरिभगा	८	०	२८	०	५७६	११५२	७२८	११५२	२५	२५	७६५६	३०
मणुयभगा	८	०	२८	०	५७६	५७६	११५२	०	२६	१६	७६५६	३०
धिविधिविभगा	०	८	०	८	१६	१६	८	०	८	६	४१२३	१६
आहारकभगा	०	१	०	१	२	२	१	०	२६	६२४८	७६७१	४४
देवाण भगा	८	८	०	८	१६	१६	८	०	३०	४६४१	७६६७	४२
नारकाण भगा	१	१	०	१	१	१	०	०	३१	१	(१४४)	१
धिविधिवमणु,	०	८	०	८	१	६	१	०	१	१	७२	८
सत्ताठाणा	५	२	५	२	४	४	४	४	(सन्धे →	१३७४५	४२- ५८१	२००)
सतिस्थयररुता	६३	९३	६३	९३	६३	६३	६३		सामन्नितिरिमणुयचउसु उदयसु भगा सुत्रीएन भणियन्ति न लिहिया			
	८६	८९	८६	८६	८६	८६	८६					

अड्वावीसं वंधं वंधहि तिरिमणुय निययउदएहि ।

सुरनिरगडपाउग्गं विसुद्व तह किस्समाणा उ । (३४३)

करणि अपज्जत्ता उण आइमचउउदय वट्टमाणा उ ।

सुद्विगया अड्वावीसं इयरा उणतीस वंधंति ॥ (३४४)

इह आडम चउउदया इगवीसछवीस तह य अड्वावीसा ।

उणतीसा विय कमसो वियप्प जै जस्स संभविआ ॥ (३४५)

१ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रोसकोप्या नास्ति । अत्र L D प्रती "उदयद्व" इति पाठो दृश्यते किन्तु सम्यग् न ज्ञायते इति क्लृप्ता-ऽस्माभिरेकत्रिंशद्वन्धसत्कमेक त्रिंशत्प्रकृत्यास्म कसुदयस्थानमाश्रित्य मङ्गा १४४ दशिता इति ज्ञेयम् । यदि केषाञ्चिदाचार्याणामभिप्रायेण पुनरुत्तरवैक्रियमनुष्या आहारकमणुष्याश्चापि प्रकृतवन्धकतया विवक्ष्यन्ते तदेहैकोनत्रिंशदुदयस्थानमप्यधिकतया लभ्येत, तथैकोनत्रिंशदुदयस्थानसत्कमङ्गद्वय त्रिंशदुदयस्थानसन्बन्धिमङ्गद्विकमिति चतुर्णां मङ्गानामधिकतया तान्मात्सर्व उदयमङ्गा १४८ स्युः ।

न य विवरियं पुढो इह भंगा अडवीमि उदयगंभविया ।
 चुन्निदुगे वि हु लहुए अहवा न हु अवगया सम्भं ॥ (३४६)
 तेण न भंगपमाणं अडवीसम्मि चउउदयसंभवियं ।
 तिरिमणुसामन्नाणं इयरुदएसुं च पुण एए ॥ (३४७)
 पणतीसमणुविउव्विसु छप्पन्नं तह तिरिक्खभगा ।
 तीसिगतीसे उदए तिरिमणुसामन्न जे भंगा ॥ (३४८)
 पणतीसं छप्पना चालीससया उ अहिय चत्तीसा ।
 ४०३२ भंगाणं तु पमाणं विउव्विदुगउदयअंतेसु ॥ (३४९)

अट्टावीसवधजतइय-

१ ठवणा-

उदय- ठाणा	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	भग- मत्वा
माणुम०	०	०	०	०	०	०	११५२	०	(११५२)
तिरिय०	०	०	०	०	०	०	१७२८	११५२	(२८८०)
मणुवे- उव्विय०	०	८	०	८	६	६	१	०	(३५)
तिरिवे- उव्विय०	०	८	०	८	१६	१६	८	०	(५६)

सामन्नमणुयतिरियभगा सम्यग् न ज्ञा(य)ते चउसु उदएसु ॥
 जीवस्थानेषु नाम समाप्तम् ॥

चउपढमट्टाणाइं ४ तेरसहीणाइं ४ नाव पत्तेयं । [३१८]

एवं उवरयबंधे सन्नीपज्जत्तसंवेहो ॥२८०॥

पंचासं सयमेगं चउवीसणुवीस तहय सत्तरस ।

दुन्नि सया य दहोत्तर सन्नीपज्जत्तठाणाणि । ॥२८१॥ [३१९]

भणियाउ ३ जीवठाणे वंधोदयसंतविवरणं किचि ।

गुणठाणगेषु ३ तं चिय भणामि किचि समासेणं ॥२८२॥ (३५०) [३२०]

गुणस्थानकेषु ज्ञानावरणा-ऽन्तराययोर्दर्शनावरणस्य वन्धोदयसत्तास्थानाना भङ्गा-
 नाणंतरायतिविहमवि दससु दो ५ होंति दोसु ठाणेषु ।

५ मिच्छासाणे वोए नव चउ पण नव य संतंसा ॥इ.-३६॥ (३५१) [३२१]

१ इद यन्त्र L. D. प्रतावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "जीवठाणेषु" इति J प्रतिप्रेस-
 कोप्याम् । ३ "तेच्चिय" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । ४ 'हुति' इति L. D. प्रतौ । ५ "मिच्छासाणा"
 इति L. D. प्रतौ ।

'मीग्वाहनियद्वीओ छच्चउ पण नव य सन्तकम्मंसा ।

चउबंधतिगे चउपणनवस दुसु जुयल छस्संता ॥सू.-४०॥ (३५२) [३२२]

उवसते चउपणनव खीणे चउरुदय छच्च चउसता ।

वेयणियाउयगोए विभज्ज ेह पर वोच्छ ॥सू.-४१॥ (३५३) [३२३]

नाणतरायगाहातिगस्स विवरण पुब्बुत्त ॥

दुसु जुयले छस्संता एएण पएण सुइया खवगा ।

तेसि विसेसं विवरे किची गाहानुसारेण ॥२८३॥ (३५४) [३२४]

अच्चंतविसुदूत्ता निहाउदओ न खवगसेठीए ।

अप्पुव्वाई चउबंधगेसु चउरोदओ तेण ॥२८४॥ (३५५) [३२५]

अप्पुव्वपढमभागे छक्कं उवरि तु चउरबंधुदए ।

जा सुहुमो सत्ताए वायरसंखंस नवसंता ॥२८५॥ (३५६) [३२६]

थीणतिगखविय उवरि छस्संता जाव सुहुमरागंतो ।

बंधोवरमे चउरुदय खीणि संता उ छच्चउरो ॥२८६॥ (३५७) [३२७]

गुणस्थानकेपु वेदनीयगोत्रयोर्वन्धस्थानादिमङ्गा

चउ छस्सु दोन्नि सत्तसु एगे चउ गुणिसु वेयणियभंगा ।

गोए पणचउ दो तिसु एगट्ठसु दोन्नि एगम्मि ॥सू.-०॥ (३५८) [३२८]

छसु आइमेसु पढमा चउरो बंधे य अंतिमा दो दो ।

वेयणिए इय सत्तसु बंधोवरमे चउर एगे ॥२८७॥ (३५९) [३२९]

बंधोवरमि अजोगे सायासायाण उदउ को कस्स ।

जाव दुचरिमो दो दो चरिमे एक्केक्क संताओ ॥२८८॥ (३६०) [३३०]

सायं बंधं तह उदय साय तह सायबंधि दुक्खुदओ ।

दो दो संता दोसु वि इय भंगा सत्तसु गुणेषु ॥२८९॥ (३६१) [३३१]

पढमम्मि पढम पंच उ वीए पढमं विवज्जिया चउरो ।

उच्चं बंधं नीचुच्च उदय दो संत भंगदुगं ॥२९०॥ (३६२) [३३२]

एगेसि मयं नीय वयगहणे नेव होइ उदयम्मि ।

नीया वि हु जइजाई तह वि य ते उच्च वेयति ॥२९१॥ (३६३) [३३३]

१ "मिस्ताइ०" इति L. D प्रतौ । २ "अतरिउ" इति L. D प्रतौ । ३ "चमे" इति L. D प्रतौ ।

संजयपमत्तठाणाउ जा चरिमो सुहुमरागगमओ उ ।

^१वधोदयम्मि उच्चं मता दुम उच्चनीयाणं ॥२९२॥ (३६३) [३३४]

उवरयवधे उच्च उदए ^२मंताड दो वि जाजोगी ।

अज्जोगि ^३चरममए 'उदए मता य उच्चम्म ॥२९३॥ (३६४) [३३५]

गुणस्थानकष्वायुषो वन्वादिस्थानमङ्गा -

अट्ठच्छाहिगवीसा सोलस वीस च वार छदोसु ।

दांचउसु तोसु एककमिच्छाइसुआउगे भग्गा ॥सू-०॥ (३६६) [३३६]

अट्ठावीसं २८ पढमे २६ वीए नरयाउ नरतिरि न वंधे ।

तइए बंधविवज्जा १६ चउत्थए वीस इय ^४होति ॥२९४॥ (३६७) [३३७]

अविरयसम्मा जीवा तिरिमणु देवाउ[एक]मेव वधति ।

^५नारयसुर मणुयाउं अट्ठ उ मगा अमंभविया ॥२९५॥ (३६८) [३३८]

^६नरतिरियदेसविरया देवाउ एकमेव वधंति ।

^७पुव्वुत्ता दम जुत्ता भगविगप्पा उ वारस उ ॥२९६॥ (३६९) [३३९]

^८मणुसरिस पमदत्तियरे ६ उवरि मणुउदयमणुयमंताओ ।

खवगे पडुच्च एगं वि य सेढी चउसु सुरसंता ॥२९७॥ (३७०) [३४०]

^१ठवण -

गुणठाणा		मि०	सा०	मी०	अ०	दे०	प०	उप०
नानावरण० अतराय०	वध	५	५	५	५	५	५	५
	उदय	५	५	५	५	५	५	५
	सत्ता	५	५	५	५	५	५	५
दसणारण०	वध	६	६	६	६	६	६	६
	उदय	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५	४/५
	मत्ता	६	९	६	६	६	६	६
वेदनीय०	भगा	४	४	४	४	४	४	२
गोत्र०	भगा	५	४	२	२	२	१	१
आउय०	भगा	२८	२६	१६	२०	१२	६	६

१ "वधे उदए" इति L D प्रती । २ "दो" इति L D प्रती । ३ "सत्ताए" इति L D प्रती । ४ "चरिम०" इति L D प्रती । ५ "उदओ" इति L D प्रती । ६ "वन्धाभावा" इति L D प्रती । ७ "हुति" इति L D प्रती । ८ "अविरयसम्मा [जीवा] तिरिमणु देवाउ एगमेव" इति L D प्रती । ९ "पुव्वुत्तदस जुत्त" इति L D प्रती । १० "मणुभग" इति L D प्रती । ११ इदं यन्त्र L D प्रतावत्ति, J प्रनिप्रेसकोप्या नास्ति ।

नि०	ऽनि०	सु०	उ०	खी०	स०	अजो.	०
५	५	५	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
६/४	४	४	०	०	०	०	०
४/५	४/५	४/५	४/५	४	०	०	०
६	९/६	९/६	६	६/४	०	०	०
२	२	२	२	२	२	४	०
१	१	१	१	१	१	२	०
२	२	२	२	१	१	१	०

गुणस्थानकेषु मोहनीयस्य बन्धस्थानानि-

गु णगेषु अ सु एक्केक्क मोहबंधठाणं तु ।

पचानियद्धि णं बंधोवरमो परं तत्तो ॥सूत्रम्-४२॥ (३७१) [३४१]

गुणस्थानकेषु मोहनीयोदयस्थानानि-

सन्नाइ दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा ।

छाई नच उ अविरए देसे पचाइ अट्टेव ॥सूत्रम्-४३॥ (३७२) [३४२]

विरए खओवसमिए चउराई सत्त ऽपुच्चम्मि ।

अनिअट्टिवायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंसा ॥सू-४४॥ (३७३) [३४३]

एग सुहुमस्सरागो वेएइ अवेयगा भवे सेसा ।

भगाणं च पन्नाणं पुव्वुद्धिट्ठेण नायव्व ॥सूत्रम् ४५॥ (३७४) [३४४]

“गुणठाणोसु अट्टसु” इचाइगाहाचउक्कस्स विवरण पुव्वं व दट्टव्व ॥

जइ वि इह मोहविवरण गुणठाण पडुच्च हिट्टुओ भणियं ।

संपड पुण कम्मपत्तं तस्सऽणुसारेण जंतइयं ॥ (३७५)

ठवणा-

गुणठाणा	मिच्छदिट्टि	सासादन	मीस	अविरयसम्म	देसवि.	पमत्त.
वधट्टाणा	२२	२१	१७	१७	१३	६
वधभगा	६	४	२	२	२	२
उदयट्टाणा	७ ८ ९ १० ७ ८ ९ ७ ८ ९ ७ ८ ९ ६ ७ ८ ९ ५ ६ ७ ८ ९ ६ ७					
चउवीसिया	१ ३ ३ १ १ २ १ १ २ १ १ ३ ३ १ १ ३ ३ १ १ ३ ३ १ १ ३ ३ १					
उदयपद	१९२	६६	९६	१६२	१९२	१६२

ठवणा-

अपमत्त	अपुव्व०	अनियट्टिवायर०	सु. ०
६	९	५ ४ ३ २ १	० ०
१	१	१ १ १ १ १	० ०
४ ५ ६ ७ ४ ५ ६ २ १ १ १ १ १			०
१ ३ ३ १ १ २ १ १ २ १ १ १ १ १			०
१६२	६६	१२	१००

मोहिया जीवा

मिच्छाइ गुणट्टाणोसु उदयसखामाह-

ठवणा-

उदय- ठाणा	चउ- वीसि	मि०	सा०	मी०	डवि०	दे०	प०	डप०	नि०	डनि०	सु०
१०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	६	३	१	१	१	०	०	०	०	०	०
८	११	३	२	२	३	१	०	०	०	०	०
७	११	१	१	१	३	३	१	१	०	०	०
६	११	०	०	०	१	३	३	३	१	०	०
५	६	०	०	०	०	१	३	३	२	०	०
४	३	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०
२	१२भ	एव वावन्न चउवीसिया॥ उदयपया चउवीस-							दुगोदयभ० १२		
१	५	गुणा १२४८ ॥ दुगोदयएगोदयपया १॥							एगोदयभ० ५		

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J, प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

नि०	ऽनि०	सु०	उ०	खी०	स०	अजो.	०
५	५	५	०	०	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
५	५	५	५	५	०	०	०
६/४	४	४	०	०	०	०	०
४/५	४/५	४/५	४/५	४	०	०	०
६	९/६	९/६	६	६/४	०	०	०
२	२	२	२	२	२	४	०
१	१	१	१	१	१	२	०
२	२	२	२	१	१	१	०

गुणस्थानकेषु मोहनीयस्य बन्धस्थानानि-

गुणठाणगेषु अ सु एकैकक मोहबंधठाणं तु ।

पचानियद्वि णं बधोवरमो परं तत्तो ॥सूत्रम्-४२॥ (३७१) [३४१]

गुणस्थानकेषु मोहनीयोदयस्थानानि-

सन्नाड दस उ मिच्छे सासायणमीसए नवुक्कोसा ।

छाई नव उ अविरए देसे पचाह अट्ठेव ॥सूत्रम्-४३॥ (३७२) [३४२]

विरए खओवसमिए चउराई सत्त ऽपुवम्मि ।

अनिअद्विबायरे पुण एक्को व दुवे व उदयंसा ॥सू.-४४॥ (३७३) [३४३]

एगं सुहुमसरागो वेएइ अवेयगा भवे सेसा ।

भगाणं च पम्माणं पुव्वुद्धिठेण नायव्व ॥सूत्रम् ४५॥ (३७४) [३४४]

“गुणठाणगेषु अट्ठसु” इत्थाइगाहाचउक्कस्स विवरणं पुव्वं व दट्ठव्व ॥

जड वि इह मोहविवरण गुणठाण पडुच्च हिट्ठओ भणियं ।

सपड पुण कम्मपत्तं तस्सऽणुसारेण जंतइयं ॥ (३७५)

ठवणा-	गुणठाणा	मिच्छदिट्टि	सासादन	मीस	अविरयसम्म	देसवि.	पमत्त.
	वधट्टाणा	२२	२१	१७	१७	१३	६
	वधभगा	६	४	२	२	२	२
	उदयट्टाणा	७	८	१०	७	८	७
	चउवीसिया	१	३	३	१	१	२
	उदयपद	१९२	६६	९६	१६२	१९२	१६२

ठवणा-

अपमत्त	अपुत्तव०	अनियट्टिवायर०	सु०
६	९	५ ४ ३ २ १ ० ०	
१	१	१ १ १ १ १ ० ०	
४	५	६ ७ ४ ५ ६ २ १ १ १ १ १ ०	
१	३	३ १ १ २ १ १ २ १ १ १ १ १ ०	
१६२	६६	१२	मोहिया जीवा

मिच्छाइ गुणट्टाणोसु उदयसखामाह-

ठवणा-

उदय- ठाणा	चउ- वीसि	मि०	सा०	मी०	डवि०	दे०	प०	डप०	नि०	डनि०	सु०
१०	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	६	३	१	१	१	०	०	०	०	०	०
८	११	३	२	२	३	१	०	०	०	०	०
७	११	१	१	१	३	३	१	१	०	०	०
६	११	०	०	०	१	३	३	३	१	०	०
५	६	०	०	०	०	१	३	३	२	०	०
४	३	०	०	०	०	०	१	१	१	०	०
२	१२भ	एवं वावन्न चउवीसिया॥ उदयपथा चउवीस-							दुगोदयभ० १२		
१	५	गुणा १२४८ ॥ दुगोदयएगोदयपथा १०॥							एगोदयभ० ५		

१ इद यन्त्र L D प्रतावस्ति, J, प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति ।

पत्तये गुणठाणे पडुच्च मोहोदयपयविदसखासाह—

१ ठवणा—

गुणठाणा	मिच्छ	सा मा०	मीस०	ऽवि रत्त०	देम- वि०	पमत्त	ऽपम०	निय	ऽनियट्टि०				सु०	
मोहोदय	१६२	६६	१६	१६२	१६२	११२	१६२	६६	१२	१	१	१	१	१
पयविद चउवीसिया	६८	३२	३२	६०	५२	४४	४४	२०	१	भ १	भ १	भ १	भ १	भ १
पयविदा	१६३२	७६८	७६८	१४४०	१२४८	१०५६	१०५६	४८०						१

एव मोहोदय १२६५॥ एव पयविदचउवीसिया ३५२॥ पयविदा २६॥ एव सव्वे पयविदा ८४७७॥

ठवणा-

गुणठाणा	मिच्छ०	सा०	मी०	ऽविरय०	देमवि०	पमत्त०	ऽपम०
पदचउवीसिया	८	४	४	८	८	८	८
पदविदचउ- वीसिया	६८	३२	३२	६०	५२	४४	४४
पदविदा	१६३२	७६८	७६८	१४४०	१२४८	१०५६	१०५६
सत्ताठाणा	२८,२७,२६	२८	२८,२७	२८,२४	२८,२४	२८,२४	२८,२४
			२४	२३,२२,२१	२३,२२,२१	२३,२२,२१	२३,२२,२५

२ ठवणा—

नि०	अनियट्टि०						सु	उ	
४	१२	१	१	१	१	१	०	०	उदयपया १२६५॥
२०	भ २४	१	१	१	१	१	१	०	पयविदचउवीसिया ३५२, भगा २६॥
४८०	२४	१	१	१	१	१	१	०	पयविदा ८४७७॥
२८,२४	२८,२४, २१,	१३,	१३,११,	५	२८	२८	२४	२४	
२१	४, ३, २, १				२१	२१	२१	२१	

१ इद यन्त्र L-D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेसकोप्या नारित । २ इद यन्त्र J प्रतिप्रेसकोप्यामस्ति,
L D. प्रतौ नास्ति ।

मोहनीयस्योदयस्थानभङ्गा -

एक^१छडेकारेका^२सेव इकारसेव नवनित्रि ।
 एए चउवीसगया वारदुणे पच^३एगम्मि ॥सूत्रम्-४६॥ (३७६) [३४५]
 वारसपण^३सद्विसया उदयविगप्पेहि मोहिया जीवा ।
^४चुलसीयसत्तसत्तरिपयविदसएहि विन्नेया ॥सू-०॥ (३७७) [३४६]

गुणस्थानेषु मोहनीयोदयस्थानभङ्गा -

अट्टगचउच्चउचउरट्टगा य चउरो य^१होनि चउवीसा ।
 मिच्छाइ अपुच्चंता वारसपणग च अनियट्ठी ॥सू-०॥ (३७८) [३४७]
 दसगम्मि एग मिच्छे तिग तिग नवअट्टगम्मि सत्तेगा ।
 एगदुग एग साणे नवअट्टगसत्तेगे कमसो ॥२६८॥ (३७९) [३४८]
 तह मीसगम्मि एवं अविरयसम्मे छडेग चउवीसा ।
 तिगतिग सत्तेग अट्टग एगा नवगम्मि बोधव्वा ॥२९९॥ (३८०) [३४९]
 पचोदयम्मि एगा तिगतिग छस्सत्तेगे य अट्ठेया ।
 देसविरयम्मि एग अट्टग चउवीस उदएसु ॥३००॥ (३८१) [३५०]
 चउरोदयम्मि एगा तिग तिग पणछक्कगम्मि सत्तेगा ।
 संजयपमत्तउदए अपमत्ते तह य एवं तु ॥३०१॥ (३८२) [३५१]
 अप्पुव्वे चउरेगा पणगे दो छक्कगम्मि एका उ ।
 मिच्छाइ अपुच्चंते वावन्ना सन्वचउवीसा ॥३०२॥ (३८३) [३५२]
 चउवीसगुणा एए वारस अडयाल हुंति मोहुदया ।
 दुग एग उदयभंगा नवमे ते जाण सोलसगं ॥३०३॥ (३८४) [३५३]
 बंधोवरमे सुहुमे एगुदओ लोभसुहुमकिट्ठीणं ।
 इय सन्वुदयविगप्पा वारसपणसट्ट मोहरस ॥३०४॥ (३८५) [३५४]
 आह कह एक उदए^१हेट्टा एकारभंग नणु बुत्ता ।
 इह पुण पंचेव कहं पुच्चिं वंधो इहं उदओ ॥३०५॥ (३८६) [३५५]
 जे बंधड ते वेयड बंधविवक्खाड भगएकारा ।
 उदयविवक्खाइ पुणो एक्कुदए पंच भंगा उ ॥ (३८७)

ठवणा-पेज न० ५६ ॥

१ “०छडिक्का०” इति L D प्रती । २ “एकम्मि” इति L D प्रती । ३ “सट्ट०” इति L D प्रती । ४ “चुलसीइ सत्तुत्तरिपय०” इति । ५ “हुति” इति वा । ६ “उवरिं” इति L D प्रती ।

अदृष्टो वत्तीसा वत्तीसा सद्धिमेव धावन्ना ।
 चोयाल दोसु वीसा मिच्छामाई सामन्ने ॥सू.-०॥ (३८८) [३५६]
 मिच्छे जो चउवीसा उदयगुणा ते उ मिलिय अदृष्टी ।
 वत्तीसाइ कमेणं एस गमो जा अपुव्वते ॥३०६॥ (३८९) [३५७]
 १ए सव्वेगट्ठा चउवीसाए गुणित्तु कयरासी ।
 उणतीसभंगसहिया चुलसी सतहत्तरा एवं ॥३०७॥ (३९०) [३५८]
 ठवणा-पेज न० ६० ॥

जोगोवओगलेसाइएहि गुणिया हवति कायव्वा ।
 जे जत्थ गुणट्ठाणे हवन्ति ते तत्थ गुणकारा ॥सू.-४७॥ (३९१) [३५९]

१मोहुदयजोगपयविंदाण च विवरणमाह—

मोहुदयपयविगप्पा गुणि(आ) गुणठाणजोगसंखाए ।
 सामन्नं नव जोगा सव्वेसि अहिय केसिचि ॥३०८॥ (३९२) [३६०]
 नव गुणिया उदयपया इक्कारसहस्स तिन्नि पणसीया ११३८५ ।
 अन्ने वि चउर जोगा मिच्छे साणे य सम्मम्मि ॥३०९॥ (३९३) [३६१]
 तह मीसपमत्तेसुं एगो दो जोगअहियया कमसो ।
 इत्थ वि लद्धविगप्पा खेप्पिज्जा पुव्वरासिम्मि ॥३१०॥ (३९४) [३६२]
 वेउव्विय तह वेउव्विमीसओरालमीसकम्मइया ।
 मिच्छम्मि सासणम्मि य अविरयसम्मम्मि ए अहिया ॥३११॥ (३९५) [३६३]
 अडचउवीसा वेउव्वियम्मि चउचउरसेसतिगमिच्छे ।
 अणउदयरहियउदया न १होन्ति सत्ताइनवगेसुं ॥३१२॥ (३९६) [३६४]
 ॥जओ १वुत्त॥

अणउदयरहियमिच्छे जोगा दस कुणइ जं न सो कालं ।
 अणणुदओ पुण तदुवल्लग सम्मदिट्ठिस्स मिच्छुदए ॥३१३॥ (३९७) [३६५]
 सासणमीसे चउरो वेउव्वियजोगि दुसु य पत्तेयं ।
 तह उरलमीमकम्मणि सासणभावम्मि चउचउरो ॥३१४॥ (३९८) [३६६]
 वेउव्विमीसनरए अहोमुहो नेव सामणो गच्छे ।
 देवा न संठवेया विउव्विमीसम्मि नपुऊणा ॥३१५॥ (३९९) [३६७]

१ “वत्तीस वत्तीस” इति । २ “वीसा वि अमिच्छामा०” इति । ३ “एमव्वे एगत्था” इति L. D प्रतौ J प्रतिप्रेसकोप्यामपि । ४ “अय पाठ J प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति, किन्तु L D प्रतावस्ति । ५ ‘हुन्ति’ इति L D प्रतौ । ६ ‘वोत्त’ इति L D. प्रतौ ।

सोलह्या तेण चत्तारि ॥

अविरयसम्मे अट्ट उ वेउव्वियकायजोगि चउवीसा ।
 तह मीसकम्मणेसुं नवरं थीवेयपडिसेहो ॥३१६॥ (४००) [३६८]
 इह सम्मदिट्ठिजीवो न थीसु उववज्जइत्ति ववहारे ।
 अच्छेरउत्ति होज्जा अहवा सुत्तस्स वाहुल्ला ॥३१७॥ (४०१) [३६९]
 नपुवेय कहं भन्नइ वेयगरहियाउ जेण तिन्नुदया ।
 तह वेयगेण तिन्नि उ नरएसुववज्जमाणार्णं ॥३१८॥ (४०२) [३७०]
 इत्थ य नपुंसवेओ इयरगईउ पुमवेय संभविया ।
 संभावयामि इत्थं नपुंसथीवेयपडिसेहो ॥३१९॥ (४०३) [३७१]
 ओरालमीसि सम्मे पुरिसवेएण चेव उववाओ ।
 अह तित्थं थीवेए इत्थं वि अच्छेरसंभवओ ॥३२०॥ (४०४) [३७२]
 अट्टइ य सोलह्या वेउव्वियमीसकम्मइगजोगे ।
 ओरालमीसि चउरो वेउव्विय अट्ट चउवीसा ॥३२१॥ (४०५) [३७३]
 आहारयदुगजोगे सोलह्या अट्टअट्टउदएसु ।
 जम्हा पुव्वधरी वा विक्कियलद्धी य नो इत्थी ॥३२२॥ (४०६) [३७४]
 इय वीसं २० तह वारस १२ चउरो अट्टे व ^१मिलिय चउवीसा ।
 मिच्छाइ अविरयंते तह सासणि चउर सोलहिया ॥३२३॥ (४०७) [३७५]
 अविरयसम्मे वीसं पमत्तविरियम्मि सोलसोल ह्या ।
 चउवीसमोलहेहिं गुणिया खिव पुव्वरासिम्मि ॥३२४॥ (४०८) [३७६]
 तेरससहस्स तह इक्कसी य जोग^३पयसव्वपिडेण ।
 (१३०८१) इय अणुमारा विंदा गुणिज्ज इह सव्वजत्तेणं ॥३२५॥ (४०९) [३७७]
 पुव्वं व जोगगुणिया पयविंदा ते हवंति इह दंडा ।
 तेणउया ^२दोन्नि सया सहस्सछावत्तरी नवहि (७६२६३) ॥३२६॥ (४१०) [३७८]
 वेउव्वियअट्टइ वत्तीसा इयरजोग पत्तेयं ।
 छावत्तरसयमेगं चउवीसियमिच्छदिट्ठिम्मि ॥३२७॥ (४११) [३७९]
 सासायण वेउव्वियओरालियमीसकम्मइगजोगे ।
 वत्तीसं पत्तेयं वेउव्वियमीस सोलह्या ॥ (४१३)

१ "व" इति L D प्रती । २ "मेलि" इति L. D. प्रती । ३ "मय०" इति L D. प्रती । ४ "दुन्नि" इति L D प्रती ।

मीसे विउन्विजोगे वृत्तीं ह्येति विदचउवीसा ।
 अविरयसम्मे सङ्गी वेउन्वियकायजोगम्भि ॥ (४१३)
 तह मीसकम्पणेषु सोलहया सङ्घि होति पत्तेयं ।
 ओरालियमीसम्मी तसङ्घी अट्टया जाण ॥ (४१४)
 आहारग तह आहारमीस सजयपमत्तउट्टयम्भि ।
 चोयालं पत्तेयं सोलहया दोसु जोगेषु ॥ (४१५)
 एए गुणित्तु सव्वे नियनियठणेहि पुव्वरासिम्भि ।
 पक्खिवसु समुवत्तो मपुन्ना जेण सा रासी ॥ (४१६)
 मोहोदयपयविदा गुणजोगवियारणाअ उवत्तो ।
 संखा पुण उणनवई महस्स तह तिन्नि उणपन्ना ॥ (८६३५६) (४ ७)

† ठवणा —

गुणठाणा→	मि०	सा	मी	अवि	देस	मत्त	पम	पुव्व	निय	सु	
जोगठाणा→	१३	१३	१०	१३	९	११	९	९	९/१६	६/१	(सव्वे) ↓
जोगपया→	२००	१२१६	६६०	०२४०	१७८	१६८४	१७२८	८६४	१४४	६	१३०८१
जोगपयविदा	१८ ६१२	६७२८	७६८०	१६- ८००	११२- ३०	१०६- १२	६५०४	४३००	२५२	६	८९३४६

मोहोदयपयविदा गुणजोगवियारणा तडयमखा ।

जाया सहस्स उणनवई तिण्णि सया अउणपण्णा य ८६३४६ ॥३२८॥ [३८०]

मणिया जोगपयदडमग्णा, इयाणि उवओगपयदडमग्णा २ मण्णइ-

पठमे वीए पंच उ तइए चउ पंचमे व छच्च भवे ।

सेसे सत्तुवओगा मोहुदएहि गुणित्तुजाहि ॥३२६॥ (४१८) [३८१]

मिच्छे जा चउवीसा उवओगगुणा ह्वति तेस पया ।

नवमयसङ्घा ९६० सव्वे सेनेसु य एस होइ कमो ३३० । (४१६) [३८२]

जइवि चउवीसमंखा गुणिया उवओग इत्थ पयवुत्ता ।

तहवि य चउवीसगुणा मोहपया एत्थ दडुवा ३३१ । (४२०) [३८३]

१ इदं यत्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिश्रेमकोप्या नास्ति । २ 'मन्त्रइ' इति L D प्रतौ । ३ 'सेस-
गुणाण च एस कमो । ४ "पुव्वुत्ता" इति L D प्रतौ । ५ 'इत्थ' इति L D प्रतौ ।

साणे चउसयसीया ४८० मीसे छावत्तरा य पंच भवे ५७६ ।

अविरयमम्मे ११५२ देसे ११५२ ककारसवावण इक्केक्के ॥३३२॥ (४२१) [३८४]

उवओगपय पमत्ते तेरस चोयाल १३४४ तहय इयरे य १३४४ ।

छव्वावत्तरपुन्वे ६७२ अनियड्डिसय तु चारहियं ११२ ॥३३३॥ (४२२) [३८५]

सुहमे वंधोवरमे एक्कुदए सत्त हुंति उवओगा ।

सव्वे सत्त सहस्सा नवनउया होति सत्तसया (७७९९) ॥ (२३)

अड्डुट्टी वत्तीसा इय अणुसारेण सेसचउवीसा ।

नियउवओगगुणा ते पयदंडा हुंति सव्वे वि ॥ (४२४)

चउवीस पंचभगा सत्तगुणा ते वि खिवसु रासिम्मि ।

एक्कावन्नसहस्सा तेसीया हुंति सव्वे वि ॥ (५१०८३) (४२५)

उपयोगपयदंडा—

गुणठाणा →	मि-	सा	मी	अवि०	देस	प	अप	अपु	अनि	सु	
उवओगा →	५/८ चो	५/४	६/४	६/८	६/८	७/८	७/८	७/४	७/१६३	७/१ भ०	(सव्वे) ↓
उपओगपया →	६६०	४८०	५७६	११५२	११५२	१३४४	१३४४	६७२	११२	७	७७६६
उपओगपय- विंदा →	८१६०	३८४०	४६०८	८६४०	७४८८	७३६२	७३९२	३३६०	१६६	७	५१०८३

इयाणि लेसपथा लेसदंडा य भन्नति-

पठमचउवके छक्क उवरि तिगे तिन्नि होति लेसाओ ।

सेसेसु सुक्कलेसा मोहुदएहि गुणिज्जाहि ॥ (४२६)

मिच्छम्मि लेसउदया इक्कारसया ह्वंति वावन्ना ११५२ ।

अविरयसम्मे तेच्चिय लेसगुणा होति ते उदया ११५२ ॥३३४॥ (४२७) [३८६]

सामण ५७६ मीसे ५७६ देसे इयरे य होति लेसुदया ।

छावत्तरपचसया ५७६ पत्तेय पुत्वि छन्नउई ६६ ॥३३५॥ (४२८) [३८७]

सोलस १६ अनियड्डिम्मी सुहुमे एक्को य संखसव्वे वि ।

नउया वावन्नसया सत्त उ भगा उ पिंढेण ५२६७ ॥३३६॥ (४२९) [३८८]

अड्डुट्टी इच्चाई गुणिया सव्वे वि लेसदंडाओ ।

अड्डुत्तीससहस्सा दोन्नि सया सत्ततीसाउ ३८२३७ ॥३३७॥ (४३०) [३८९]

१ इद यन्त्र L D प्रवावस्ति, J. प्रतिप्रेसकोप्या नास्ति । २ "तिच्चिय" L D इति प्रवौ ।

ठवणा—

गुणठाणा →	मि	सा.	मी	अवि	द्वेस
लेसा →	६	६	६	६	३
लेसापया →	११५२	५७६	५७६	११५२	५७६
लेसापयदडा →	१७९२	४६०८	४६०८	८६४०	३७४४
स ठा.सख्या।	३	१	३	५	५
सत्ताठाणा →	२८,२७,२६	२८	२८,२७,२५	२८,२४,२३ २१,२१	२८,२४,२३ २२,२१,

पमत्त	अप०	अपु०	अति०	सु	उ
३	३	१	१	१	१
५७६	५७६	९६	९६	१	मठप्रमख० ↓ → (१२९७)
३१९८	३१६८	४८०	२८	१	→ ३८२३७
५	५	३	११	१	३
२८,२४,२३ २२,२१,	२८,२५,२३ २२,२१	२८,२४ २१	२८,२४,२१ १३,१०,११ ५४,३,२,	२८,२४ २१,१	२८,२४,२१

गुणस्थानकेषु मोहनीयसत्तास्थानानि

१ गुणठाणागेषु सत्तासवामाह—

तिन्नेगे एगेग तिगमिःसे पच चउसु तिगपुव्वे ।

एक्कारबायरम्मो सुहुमे चउ तिन्नि उवसतं ॥सू.-४८॥ (४३१) [३९०]

तिन्नेगे एगेग गाहा पुव्वभणिया सत्तट्टाणा उ ३ मोहे गुणठाणमासज्ज—

इयाणि नामस्स भन्नइ—

गुणस्थानकेषु नाम्नो बन्धोदयमत्तास्थानानि—

वल्लक, तिगसत्तदुग दुगनिगदुग, तिगदुचउ

दुगलच्चउ दुगपणचउ चउदुगचउ पणगएगचउ ॥सू.-४९॥ (४३२) [३९१]

एगेगमदु एगेगमदु लउमन्थकेवल्लिजिणार्ण ।

एगं चउ एगं चउ भदु चउ दुल्लकमुदयसा ॥सू.-५०॥ (४३३) [३९२]

एएसिं विवरण भण्णइ—

१ इदं यन्त्र L D प्रतावस्ति, J प्रतिप्रेषवाप्या नास्ति । २ अथ तत्र J प्रतिप्रेषकोप्या नास्ति ।
३ "मोहमासज्ज" इति L D प्रती । ४ "चउइय" इति L D प्रती ।

ठवणा—

गुणठाणा→	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बंधट्टाणा→	६	३	२	३	२	२	४	५	१	१	०	०	०	०
उदयठाणा→	६	७	३	८	६	५	२	१	१	१	१	१	८	२
सत्तट्टाणा→	६	२	२	४	४	४	४	४	८	८	४	४	४	६

तीसंत छच्च बंधा उदया नव केवलीण मोत्तूण ।

पणसंता पुवुत्ता उणनवई मिच्छदिट्ठिस्स ॥३३८॥ (४३४) [३९३]

बंधभगा—

षड पणवीसा सोलस नव वाणउई म्मगा य चत्ताला ।

बत्तीसुत्तरछायालसया मिच्छस्स बंधविही ॥सू.-०॥ (४३५) [३९४]

बंधभगा १३९२६॥

सत्तट्टहारकेवलि ^३भंगतिगं जह विउच्चि संभविया ।

^३मोत्तूण सेस सव्वे मिच्छदिट्ठिस्स संभविया ॥३३६॥ (४३६) [३९५]

संवेहो उदएसु^४ वंधे वधे य संतचालीसा ।

नवर उणतीसवधे ^५नेरइय पडुच्च उणनउइ ॥३४०॥ (४३७) [३९६]

इगवीसे पणवीसे सगवीसे अट्टवीसउणतीसे ।

उणतीसबंधगा ए पंचसु उदएसु नेरइया ॥ (४३८)

तित्थयरमंतकम्मी नरए बंधाउ अंतरसुहुत्तं ।

मिच्छत्तवेयगो सो पंचसु नेरइयउदएसु ॥३४१॥ (४३९) [३९७]

अट्टवीसे वंधे अंतिल्ला दोन्नि उदय मिच्छस्स ।

चउतिगसत्ताठाणा पुवुत्ता सत्त सव्वेवि ॥३४२॥ (४४०) [३९८]

अडवीसे सत्त पंच उणतीसे ।

दोषि

ढाणाई मिच्छम्मि ॥३४३॥ (४४१) [३९९]

बंध०	२४	२५	२६	२७	२८	३०	२१२ ।
सत्ता०	४०	४०	४०	७	१०/५	४०	
उदय०	६	९	९	८	६	६	

(छन्नवच्छक्क ति गय ॥१॥ इति प्रथमगुणस्थानके)

१ "वीस अट्ट नव सुद्ध ।" इति L D, प्रती । २ 'भगा तिग' इति L D प्रती । ३ "मुत्तूण" इति L D प्रती । ४ "अहिया उणनवइ पणभेया ॥४३७॥" इति L D प्रती ।

अडवीसुगुतीसतीसा वंधा साणम्मि वंधभंगा उ ।

अड चउसड्डिसयाइं वत्तीससयाइं कममो उ ॥३४४॥ (४४२) [४००]

वधट्टाणा	२८	२६	३०
भगा	८	६४००	३२००

छेवट्टहुंड मुत्तं पणपणणेणं गुणिज्ज थिरगाई ॥२८॥

जम्हा न सासणम्मी हुंड छेवट्ट वज्झंति ॥३४५॥ (४४३) [४०१]

तेण उणतीसवधे चउसड्डिसया उ मणुयतिरिएसु ।

उज्जोयतीसि भगा वत्तीससया उ तिरियाणं ॥३४६॥ (४४४) [४०२]

चउपढम तिन्नि चरिमा मिच्छगनवगाउ सासणे सत्त ।

अट्टासी वाणउई सत्ताट्टाणा उ साणम्मि ॥३४७॥ (४४५) [४०३]

पढमा उ चउरउदया इगिदिगलपणिदिलद्धिपज्जाणं ।

पुव्वभवायायाणं करणि अपज्जाण संभविआ ॥३४८॥ (४४६) [४०४]

चउ पढमा एगिदिसु चउवीमं मुत्तु ते च्चिय तसेसु ।

णवरि पणवीसउदओ सुरेसु पुव्वुत्त एगिंदी ॥ (४४७)

तिण्णुदया जे चरिमा उवसमसम्मम्मि अणउदय भणिया ।

पज्जत्तचउगईसुं जे जरस य केइ संभविआ ॥३४९॥ (४४८) [४०५]

भगा उदएसु के कस्स तं भन्नइ-

वत्तीस ३दोन्नि अट्ट य वासी य सया य पच नव उदया ।

वारहिगा तेवीस बावन्नेकारस ३सया य ॥सूत्रम्-०॥ (४४९) [४०६]

दो २ छक्क ६ अट्ट ८ अट्टग ८ तह अट्टग ८ सासणम्मि इगवीसे ।

इगि १ विगल २ सगल ३ मणु ४ सुर ५ पज्जत्ताणं च संभविआ

॥३५०॥ (४५०) [४०७]

वायरपत्तेयवणे पज्जत्तजसाजसेहि दो भंगा ।

इगवीसे चउवीसे २४ अट्टय ८ पणवीसि देवाणं ॥३५१॥ (४५१) [४०८]

१ “उज्जोयतीसवधे” इति L. D प्रतौ । २ “दुन्निअट्ट य वासीइ” इत्यपि । ३ “सयाइ” ॥
L D प्रतौ ।

दोसय अट्टामीया मणु तह तिरियाण छच्च विगलाणं ।
 पंचमया वासीया ५८२ उदए छव्वीसि सव्वे वि ॥३५२॥ (४५२) [४०६]
 एगो य अट्टभगा नारयदेवाण उदइ उणतीसे ।
 तीसुदइ तिरियमणुसुर तेवीससया उ वारहिया ॥३५३॥ (४५३) [४१०]
 उज्जोयतीसि अट्ट उ कारसवावन्न ते य सरतीसे ।
 देव तह तिरिय भंगा ते च्चिय मणुयाण तिरियसमा ॥३५४॥ (४५४) [४११]
 उज्जोयतीसउदओ मिच्छदिट्ठिस्स न उण साणस्स ।
 उज्जोयएगतीसा सासणभावम्मि कह एवं ॥३५५॥ (४५५) [४१२]
 जं मिच्छदिट्ठिभणियं 'सामणुतीसम्मि तस्स पक्खेवा ।
 अपजत्ति संभवो तहि साणं भासाइपज्जत्ते ॥३५६॥ (४५६) [४१३]
 इगतीसा तिरिउदए सासणभावम्मिकार 'वावणणा ।
 चउसहससत्तनवई ४०९७ सासणगुणसव्व पिडेण ॥३५७॥ (४५७) [४१४]
 संवेहो य इयाणि सासणभावम्मि बंधि अडवीसे ।
 दो उदया अतिल्ला तिगसंत न तिरिय वाणउई ॥३५८॥ (४५८) [४१५]
 मणुतीसुदए सत्ता वाणवई जेण कोइ सेढोओ ।
 चुयहारगकम्मंसी सासणभावम्मि गच्छेज्जा ॥३५९॥ (४५९) [४१६]
 अडसी तिरिमणुयाणं नियनियउदएसु बट्टमाणणं ।
 अडवीसबंधगाणं तिगठाणा संत संवेहो ॥३६०॥ (४६०) [४१७]
 उव्वलियसेमहारगउवसमसम्मं लहित्तु जेसि मयं ।
 तत्तो सासणभावं वाणवई तिरिय न विरोहो ॥३६१॥ (४६१) [४१८]
 कह भन्नइ —
 जो गंठि ता पढमो गंठि समईअओ भवे वीयं ।
 अनियट्ठीकरणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ (४६२)
 'तस्स य अते उवसमसम्मं तिगपुंज कुणइ मिच्छस्स । (४६३)
 वेयगसम्मदिट्ठी अणंतरं सव्वविरइ लहिउण ।
 तत्तो विसुज्झमाणो आहारचऊ समज्जेइ ॥ (४६४)
 अडवीससंतकम्मी मोहे वाणवड नाम संतंसी ।

१ 'सासुणती०' इति L D प्रतौ । २ "०वावन्ना" इति L. D प्रतौ । ३ "एषा गाथा-ऽवूर्णा लेखकदोषात् L D प्रतावस्तीति सम्भाव्यते । एतद्वायोत्तरार्थम्— "तव्वडिओ पुण गच्छइ सम्मे मीसाइ मिच्छे वा ॥ (४६३)" इत्येवविध स्यादन्यथा वेत्यपि सभावना क्रियते ।

अडवीसुगुतीसतीसा वंधा साणम्मि वंधभंगा उ ।

अड चउसट्टिसयाइं वत्तीससयाइं कममो उ ॥३४४॥ (४४२) [४००]

वधट्टाणा	२८	२६	३०
भगा	८	६४००	३२००

छेवट्टहुंड मुत्तं पणपणगेणं गुणिज्ज थिरगाई ॥३२८॥

जम्हा न सासणम्मी हुंडं छेवट्ट वज्झंति ॥३४५॥ (४४३) [४०१]

तेण उणतीसवधे चउसट्टिसया उ मणुयतिरिएसु ।

उज्जोयतीसि भगा वत्तीससया उ तिरियाणं ॥३४६॥ (४४४) [४०२]

चउपढम तिन्नि चरिमा मिच्छगनवगाउ सासणे सत्त ।

अट्टासी वाणउई सत्ताट्टाणा उ साणम्मि ॥३४७॥ (४४५) [४०३]

पढमा उ चउरउदया इगिविगलपणिंदिलद्विपज्जाणं ।

पुव्वभवायायाणं करणि अपज्जाण संभविया ॥३४८॥ (४४६) [४०४]

चउ पढमा एगिदिसु चउवीसं मुत्तु ते च्चिय तसेसु ।

णवरि पणवीसउदओ सुरेसु पुव्वुत्त एगिंदी ॥ (४४७)

तिण्णुदया जे चरिमा उवसमसम्मम्मि अणउदय भणिया ।

पज्जत्तचउगईसुं जे जस्स य केइ संभविया ॥३४९॥ (४४८) [४०५]

भगा उदएसु के कस्स तं भन्नइ-

वत्तीस^३दोन्निअट्ट य वासी य सया य पच नव उदया ।

बारहिगा तेवीस बावन्नेकारस^३सया य ॥सूत्रम्-०॥ (४४९) [४०६]

दो २ छक्क ६ अट्ट ८ अट्टग ८ तह अट्टग ८ सासणम्मि इगवीसे ।

इगि १ विगल २ सगल ३ मणु ४ सुर ५ पज्जत्ताणं च संभविया

॥३५०॥ (४५०) [४०७]

वायरपत्तेयवणे पज्जत्तजसाजसेहि दो भगा ।

इगवीसे चउवीसे २४ अट्टय ८ पणवीसि देवाणं ॥३५१॥ (४५१) [४०८]

१ “उज्जोयतीसवधे” इति L. D प्रती । २ “दुन्निअट्ट य वासीइ” इत्यपि । ३ “सयाइ” ॥
L D प्रती ।

दोसय अट्टाभीया मणु तह तिरियाण छच्च विगलाणं ।
 पंचमया वासीया ५८२ उदए छव्वीसि सव्वे वि ॥३५२॥ (४५२) [४०६]
 एगो य अट्टभंगा नारयदेवाण उदइ उणतीसे ।
 तीसुदइ तिरियमणुसुर तेवीससया उ वारहिया ॥३५३॥ (४५३) [४१०]
 उज्जोयतीसि अट्ट उ कारसवावन्न ते य सरतीसे ।
 देव तह तिरिय भंगा ते च्चिय मणुयाण तिरियसमा ॥३५४॥ (४५४) [४११]
 उज्जोयतीसउदओ मिच्छदिट्ठिस्स न उण साणस्स ।
 उज्जोयएगतीसा सासणभावम्मि कह एवं ॥३५५॥ (४५५) [४१२]
 जं मिच्छदिट्ठिभणियं सासणतीमम्मि तस्स पक्खेवा ।
 अपजत्ति संभवो तहि साणं भासाइपज्जत्ते ॥३५६॥ (४५६) [४१३]
 इगतीसा तिरिउदए सासणभावम्मिकार वावण्णा ।
 चउसहससत्तनवई ४०९७ सासणगुणसव्व पिंडेण ॥३५७॥ (४५७) [४१४]
 संवेहो य इयाणि सासणभावम्मि बंधि अडवीसे ।
 दो उदया अतिल्ला तिगसंत न तिरिय वाणउई ॥३५८॥ (४५८) [४१५]
 मणुतीसुदए सत्ता वाणवई जेण कोइ सेट्ठीओ ।
 चुयहारगकम्मंसी सासणभावम्मि गच्छेज्जा ॥३५९॥ (४५९) [४१६]
 अडसी तिरिमणुयाणं नियनियउदएसु वट्टमाण्णं ।
 अडवीसबंधगाणं तिगठाणा संत संवेहो ॥३६०॥ (४६०) [४१७]
 उव्वलियसेमहारगउवसमसम्मं लहित्तु जेसि मयं ।
 तत्तो सासणभावं वाणवई तिरिय न विरोहो ॥३६१॥ (४६१) [४१८]
 कह भन्नइ —
 जो गंठिं ता पढमो गंठि समईअओ भवे वीयं ।
 अनियट्ठीकरणं पुण सम्मत्तपुरक्खडे जीवे ॥ (४६२)
 तस्स य अते उव्वसमसम्मं तिगपुंज कुणइ मिच्छस्स । (४६३)
 वेयगसम्मदिट्ठी अणंतरं सव्वविरइ लहिऊण ।
 तत्तो विसुज्झमाणो आहारचऊ समज्जेइ ॥ (४६४)
 अडवीससंतकम्मी मोहे वाणवड नाम संतंसी ।

१ 'सासुणती०' इति L D प्रती । २ 'वावन्ना' इति L D प्रती । ३ 'एषा गाथा-उत्पूर्णा
 लेखकदोषात् L D प्रतावस्तीति सम्भाव्यते । एतद्वाथोत्तरार्थम्- 'तव्वडिओ पुण गच्छइ सम्मे मीसाइ
 मिच्छे वा ॥ (४६३)' इत्येवविध स्यादन्यथा चेत्यपि सम्भावना क्रियते ।

परिवडिउं मिच्छत्तं तह गच्छड चउसु वि गईसु ॥ (४६५)
 मिच्छत्तगओ तिन्नि वि सम्मं मीसं च हारचउपयडी ।
 उव्वलिउं आढवई उव्वलइ च संखपल्लंसे ॥ (४६६)
 छव्वीससंतकम्मी पुण स च करणेहिं उवसमं पावे ।
 तस्संते अणउदए सासायणभाव गच्छेज्जा ॥ (४६७)
 आहारचउव्वलिए अट्टासी संतकम्म णामस्स ।
 अहवा वि पढमसम्मे अते साणो व अट्टासी ॥ (४६८)
 अन्नेसि मयं तिन्निवि उव्वलियं आढवेइ समकालं ।
 उव्वलइ कमेण तहा पल्लासंखंसभागेण ॥ (४६९)
 उव्वलिए दिट्ठिदुगे हारगसंतम्मि उव्वलियपाए ।
 इत्थंतरम्मि उवसमकरणेहिं उवसमइ पावं ॥ (४७०)
 तस्संते अणउदए पढमं साणो व बुच्चए सो च ।
 बाणवडसंतकम्मं साणे तिरियाण न विरोहो ॥ (४७१)
 जे उणतीसं बंधहि सासायणमणुयतिरियपाउगं ।
 अडसीइमंतठाण सत्तसु उदएसु तह तीसे ॥३६२॥ (४७२) [४१६]
 नवं तिरिपाउगं उज्जोयसहियं तु बधमाणं ।
 तिगअट्टअट्टाणा सव्वे उणवीस पिडेण ॥३६३॥ (४७३) [४२०]
 उणतीसतीसबंधे नियनियउदएसु संत बाणउई ।
 पुव्वं व भणियविहिणा तिरिमणुय मयंतरेणेह ॥३६४॥ (४७४) [४२१]
 तिगसत्तदुग ति गय ॥ २॥ (इति द्वितीयगुणस्थानके)
 उणतीसअट्टवीसा बंधे उदएसु तीसउणतीसा ।
 तह एगतीस उदए दो ठाप्पा सत मीसस्स ॥३६५॥ (४७५) [४२२]
 उदएसु भंगसो उदए चउतीस ॥३६६॥
 भंगा उदए चउतीस ॥३६६॥ (४७६) [४२३]
 एगं अट्ट य मारयदेवाण ।
 तेवीसं चउरुत्तर २३०४ नरतिरियाण च तीसुदए ॥३६७॥ (४७७) [४२४]
 इगतीसा तिरियाणं तिरिय विगप्पा इकार वावन्ना । ११५२।
 एवं चउतीससया पणसट्टा मिस्सभंगाणं ॥३६८॥ (४७८) [४२५]

सवेहो बंधेषु उदयं उदयं पडुच्च दो ठाणा १२९९ ।
अडवीसि दुअंतिल्ला इयरे उणतीसउदओ उ ॥३६६॥ (४७९) [४२६]

एव सतट्टाणा^२ ६ ॥ दुगतिगदुग ति गय ॥३॥ (इति तृतीयगुणस्थानके)
तिगबंधठाण अजए अडवीसु गुतीसु तह य तीसा य ।
थिरसुभजसइयरेहि भंगा अडुट्ट पत्तेयं ॥३७०॥ (४८०) ४२७]
अडु उ उदयट्टाणा जे पुव्वुत्ता उ बंधि अडवीसे ।
उदयविगप्पा सच्चे जे जेसिं हुंति संभविया ॥३७१॥ (४८१) [४२८]

चउगई उ पडुक्क संतठाणसामित्तसमवमाह-

संतट्टाणा चउरो पढमा तेणवइ मणुयदेवाणं ।
अपमत्तसंजओ बंधिऊण अजसो मणुस्सदेवो वा ॥३७२॥ (४८२) [४२६]
तं च कहं अपमत्तो अपुव्वकरणो य बंधि इगतीसं ।
थरिवडिऊण अमंजय मणुओ देवो व मरिउ उववन्नो ॥३७३॥ (४८३) [४३०]
चाणउइ संतकम्मी आहारग बंधिऊण चउगइया ।
ते उव्वलिति अजया अणउव्वलिए य चाणउई ॥३७४॥ (४८४) [४३१]
उणनवड देवमणुए नेरइयाण च सम्मदिट्ठीणं ।
तिरिए न तिन्यमंता निरिमणुमिच्छाण अंतमुहू ॥३७५॥ (४८५) [४३२]
अडमीड संतठाणं चउसुं वि गईसुं सम्ममिच्छाणं ।
मणुतिरियाणं सेसा जा जम्स य होइ संभविया ॥३७६॥ [४३३]
तेग्गहीणा चउरो पढमाइकमेण खवगाणं ॥ (४८६)
नव तित्थि अडु केवलि सत्ता पयडी अजोगिगुणठाणे ।
छासी तह सीई तिरिमणु अडुत्तरि गइत्ताणं च ॥ (४८७)

अडवीसे बंधे अडु उ उदया उ संत दोठणा ।
अडवीसी वाणउई दुग दुग पत्तेय उदएसु १६ ॥३७७॥ (४८८) [४३४]
उणनीसबंधगाणं सामन्नेण तु सत्त उदया उ ।
इगतीसं वड्जेत्ता तिरियाण न मणुयपाउग्गा ॥३७८॥ (४८९) [४३५]
दुविहोणनीसबंधो मणुगडपाउग्ग तह सुराणं च ।
देवगईपाउग्गं मणुया बंधंति तित्थजुयं ॥३७९॥ (४९०) [४३६]

१ "तिन्नेव" उन्ना उ" इति J प्रतिप्रेसकोप्याम् । २ "अ" इति J. प्रतिप्रेसकोप्याम् ।

इह पंचसु उदएसु तेणउई ६३ तहय होइ उणनवई ।
 इगवीसे १ छव्वीसे १ उणनवई संतएगाउ ॥३८०॥ (४६१) [४३७]
 कह भन्नइ ॥

इह आहारचउक्कं अविरड[ए]पत्तो य उव्वलेमाणो ।
 उव्वलइ कमेण तहा पलियासंखंसभागेण ॥३८१॥ (४६२) [४३८]
 तित्थयरसं म्मी देवा मणुएसु चविउ उववण्णा ।
 नाहारसंतकम्मं बंधाभावाउ इह तेसिं ॥३८२॥ (४६३) [४३९]
 इगवीसा छव्वीसा दुन्नि उ उदया सरीरअसमत्ते ।
 उणतीसबंधगाणं सम्मदिट्ठीण मणुयाणं ॥३८३॥ (४६४) [४४०]
 मणुयगईपाउगं सुरनेरइया य सम्मदिट्ठी य ।
 अट्टासी वाणउई नियनियउदएसु दो ठाणा १२ ॥३८४॥ (४६४) [४४१]
 एवं सुरनेरइया तित्थजुया तीसठाण वधंति ।
 तित्थाहारगसंता जेणं बंधि त्ति उववन्ना ॥३८५॥ (४६५) [४४२]
 मणुगइजोगं तीमं सुरनेरइया उ तित्थजुयबंधे ।
 तित्थाहारगसंता जेणं बंधे त्ति उववन्ना ॥ (४६५)
 तेणवई उणनवई उदयं उदयं पडुच्च देवाण १३॥
 निरये नोभयसंता तेणं उणनवइ उदएसुं ॥३८६॥ (४६६) [४४३]
 सोलस तह चउवीसा वारसठाणा उ तीसु वि कमेण ।
 वावन्न संतठाणा अविरयसम्मस्स बंधेसुं ॥३८७॥ (४६७) [४४४]
 तिअट्टचउ त्ति गय ॥४॥ (इति चतुर्थगुणस्थानके)
 अडवीसा उणतीसा बंधा उदया उ चउर वेउव्वे ।
 इगतीसतीसउदया सामन्नं देसविरयाणं ॥३८८॥ (४६८) [४४५]
 पुव्वुत्तबंधभंगा उदयविगप्पा उ सरखगइ चरिया ।
 संधयेणतहागिहया चोयालसयं तु पत्तेयं ॥३८९॥ (४६९) [४४६]
 तीसोदयम्मि । तिरिमणु
 १पणुउदयतिरिविउच्चिय ५,

ठवणा—

उदयठाणा →	२५	२७	२८	२९	३०	३१
उच्चित्तिरि →	१	१	१	१	१	०
वेउच्चिमणु° →	१	१	१	१	०	०
सा. त्तिरि →	०	०	०	०	१४४	१४४
सा मणु →	०	०	०	०	४४४	४४४

इय सवेहो भन्नइ अट्टावीसा य त्तिविह वंधंति ।
 मणुत्तिरियकम्मभूमग पलिभागिय देसविरया य ॥३९१॥ (५०१) [४४८]
 छच्चेव उदय इत्थं दो दो ठाणाडसी य चाणउई ।
 इगतीम न मणुएसुं चारस ठाणा उ उदएसु ॥३९२॥ (५०२) [४४९]
 तह देसविरयमणुया अट्टावीसा त्तिथसहिय उणतीसा ।
 तेणवई उणनवई पंचसु उदएसु पत्तेयं ॥ (५०३)
 चारस तह दस सत्ता सव्वे चावीस देसविरयाणं ।

दुग छच्चउ त्ति गय ॥५॥ (इति पञ्चमगुणस्थानके)

अन्नो उदयविसेसो सत्तय वेउच्चि तह य आहारे ।
 चोयालसय तेरम अट्टावन्नं सयं १५८ संखा ॥ (५०५)
 दुगपणचउ त्ति गय ॥६॥ (इति षष्ठगुणस्थानके)
 चउवधा अपमत्ते अट्टावीसाइ जाव इगतीसा ।
 १ इक्केक्कभंगमेसिं दो उदया तीसउणतीसा ॥३९३॥ (५०६) [४५०]
 २ इक्केक्कं च विउच्चिसु तह ३ इक्केक्कं च हारगजईणं ।
 चोयालसयं तीसे अडयालसयं तु पिडेणं ॥३९४॥ (५०७) [४५१]
 संवेहमंतसंखा दो दो उदया उ वंधि पत्तेयं ।
 ४ इक्केक्क संतठाण सव्वे अट्टेव उदएसुं ॥३९५॥ (५०८) [४५२]
 त्तिथाहारगसंता ५ हेउसभावा तमेव वंधंति ।
 सम्मअपमत्तसंजय इक्केक्कं तेण उदएसु ॥३९६॥ (५०९) [४५३]

ठवणा—

वधठाणा →	२८		२९		३०		३१	
उदयठाणा →	२९	३०	२९	३०	२९	३०	२९	३०
सत्ताठाणा →	५५	५८	५९	५९	६२	९२	६३	६३

चउदुगचउत्ति गय ॥७॥ (इति सप्तमगुणस्थानके)

बंधा जहाऽपमत्ते अपुव्वकरणि जसकित्तिपंचमिया ।

तीसुदओ तह भंगा ७२ पढमत्तिसंधयणसंभविया ॥३९७॥ (५१०) [४५४]

एगयरे सठाणे सरदुगसगईहिं होइ चउवीमा ।

पढमत्तिसंधयणहया वाहत्तरि भंग सव्वे ॥ (५११)

चउपढम संतठाणा अपुव्वकरणस्स एकउदयम्मि ।

एत्तो य नवरि वोच्छं जसकीत्ती बंधउदएसुं ॥३९८॥ (५१२) [४५५]

जसकित्तीए धंधे उदओ तीसन्ह चउर सत्ताओ ।

एवं सत्ताठाणा अट्ठेव अपुव्वकरणम्मि ॥ (५१३)

एगएगचउत्ति गय ॥८॥ (इत्यष्टमगुणस्थानके)

एगेगमट्ठ एयं वायरसुहुमाण दुण्ह पत्तेयं ।

जसकित्तिवधु तीसण्ह उदउ तह संतठाणाइं ॥३९९॥ (५१४) [४५६]

चउपढमा उवमामग खवगा य पडुच्च वायरकसाए ।

तह तेरस खविएहि चउरो खवगाण अट्ठइ । ४००॥ (५१५) [४५७]

एगेगमट्ठत्ति गय ॥९-१०॥ (इति नवम दशमगुणस्थानकयो)

बंधोवरमे उवमत खीण तीसण्ह उदय पत्तेयं ।

चउचउरसंतठाणा उवममखीणम्मि पुव्वुत्ता ॥४०१॥ (५१६) [४५८]

सरखगडविषखेहिं चउरो चउपीस आगिई गुणिया ।

ते संधयणात्तणेण वाहत्तरि होति उवमंते ॥४०२॥ (५१७) [४५९]

सरखगडविष खेहिं चउरो चउवीम आगिई गुणिया ।

खीणम्मि नेया पढमम्मि संधयणे ॥ (५१८)

(एग चउत्ति ॥११-१२॥ इत्येकादश-द्वादशगुणस्थानकयो)

केवल्लिमजोवेत्तेसु अट्ठ उ दो उदयठाण जहमंखं ।

दो दो षण्णा तिस्थानिस्थान जोगिरम ॥४०३॥ (५१९) [४६०]

जे चउरं षण्णा आमी छावत्तरी य दो तिन्नि ।

सामन्नकेवलदुगं उणसी 'पणत्तरी दुन्नि ॥४०४॥ (५२०) [४६१]
 पण पण उदएसु इहं संतट्टाणाइ वीस जोगिस्स ।
 अज्जोगिकेवलिम्मी पगई नव अट्ट उदओ उ ॥४०५॥ (५२१) [४६२]
 नवउदए दो संता तित्थजुया नव य संत इइ तिन्नि ।
 अट्टोदयम्मि एए तित्थविहूणा य इय (६) छच्च ॥४०६॥ (५२२) [४६३]
 (अट्ट चउ त्ति दुल्लक्क ति य गय ॥१३-१५॥ इति त्रयोदश-चतुर्दशगुणस्थानकयो)
 चउतीससंतठाणा उवरयबंधम्मि सच्चउदएसु ।
 भणियाउ विवरणा इह गुणठाणगगाहदुगनामे ॥४०७॥ (५२३) [४६४]
 दोल्लक्कट्टचउक्कं इच्चाई मग्गणा उ चोदस वि ।
 सइ[य] इह सत्थयारेण तेसिं पि करेज्ज अणुसारा ॥४०८॥ (५२४) [४६५]
 दोल्लक्कट्टचउक्कं पणनवए रल्लक्क बधुदया ।
 नेरइयाइ संता ति पच एक्कारस चउक्कं ॥सूत्रम्-५१॥ (५२५)

ठवणा—

जीवभेदा →	निरि	तिरि	मणु	देव
वधठाणा →	२	६	८	४
उदयठाणा →	५	६	११	६
सत्ताठाणा →	३	५	११	४

निरयगइ दुन्नि बंधा उणतीसा तीस तिरियमणुजोग्गा ।
 भंगा इह पुव्वुत्ता संघयणतहागिगुणियाउ ॥ (५२६)
 अट्टुत्तर छायाला उणतीसे दुन्ह तीसि जोयजुये ।
 तह तीसे तित्थजुये मणुजोगे अट्ट भंगा उ ॥ (५२७)

ठवणा—

वधठाणा →	२६	३०	(सक्के) ↓
तिरिजोग्गा भ	४६०८	४६०८	(६२१६)
मणु जोग्गा भ०	४६०८	८	(४६१६)
			(१३८३२)

तिरियगई छब्बन्धा तेवीसाई य तीसपज्जंता ।

भंगा इह मिच्छसमा मणुगड अट्टेव ओघुत्ता ॥ (५२८)

ठवणा—

वधट्टाणा→	२३	२४	२६	२८	२९	३०	३१	१	(सत्त्वे)
तिरियवधठाणम	४	२५	१६	६	६०४०	४६३२	०	०	(१३६२६)
मणुयवधठाणम	४	२५	१६	६	६०४८	४६३३	१	१	(१३६३७)

पणवीसा छब्बीसा उणतीसा तीस चउर सुरबंधा ।

आइदुगिगिदिवायरइयरे मणुतिरियपाउग्गा ॥ (५२९)

पणवीसे अड भंगा छब्बीसे दुगुण आयवुज्जोए ।

वायरएग्गिदिगया दोसु य नरयव्व उट्ठंति ॥ (५३०)

ठवणा—

वधट्टाणा	२५	२६	२६	३०	सत्त्वे ↓
तिरियजोगम	८	१६	४६०८	४६०८	(६२४०)
मणुयजोगम	०	०	४६०८	८	(४६१६)
					(१३८५६)

दोळ्ळकट्टुचउक्क ति गय ॥ (इति नरकादिगतित्तुष्के नाम्ने बन्धस्थानानि)

इगवीसा पणवीसा सगवीमा अट्टुवीस उणतीसा ।

नेरइय पंच उदया एक्केको भंगमेएसु ॥ (५३१)

ठवणा—

उदयठाणा→	२१	२५	२७	२८	२९
भगा →	१	१	१	१	१

पण उदया एग्गिदिसु विगले सगले य छच्च पत्तयं ।

सामन्नतिरि विउच्चिय देवुदया पंच न य पढमो ॥ (५३२)

वायाला छावट्टी इगविगले निययनिययउदएसुं ।

सगलेसुं छच्चुदया उणपन्न छलुत्तरा पिडे ॥ (५३३)

छप्पन्न तिरिविउच्चिसु पिडे पणसहससयरिजुयउदया ।

तिरियगइ सच्चभंगा ठावणसित्तं तु जंतइयं ॥ (५३४)

ठवणा—	उदयठाणा →	२१	२२	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	(सर्वे) ↓
	एगिदिभ →	५	११	७	१३	६	०	०	०	०	४२
	विगलभ →	६	०	०	९	०	६	६	१८	१०	६६
	सगलतिरिभ	६	०	०	२८	०	५७	५७	५७	५७	४६०
	वेडवितिरि	०	०	८	०	८	१६	१	८	०	५६

सामन्नमणुयउदया इगवीस छवीस तह य अडवीसा ।
 उणतीसा तीसा तह छवीस दुउत्तरा पिडे ॥ (५३५)
 सेसा उ छच्च ठाणा केवलिआहार तह विउव्वाणं ।
 अड चा पणतीसा भंगा पुव्वुत्त मणुउदए ॥ (५३६)

ठवणा—

उदयठाणा →	२०	२१	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	६	८	सर्व भगा ↓
मणुभग० →	०	६	०	२८	०	५७	५७	११५	०	०	०	२६०२
आहारभग० →	०	०	१	०	१	२	२	१	०	०	०	७
सामन्नके० →	१	०	०	म. ६	०	म. १२	म. १२	म. २४	०	०	१	शेष० २
तिथयर० →	०	१	०	०	१	०	१	१	१	१	०	६
वेडविव०	०	०	८	०	८	१	१	१	०	०	०	३५

इगवीसा पणवीसा सत्तावीसाइ जाव तीसुदओ ।
 छच्चुदया देवेसुं भंगा चउसट्टि सव्वेवि ॥ (५३७)

ठवणा—

उदयठाणा →	२१	२५	२७	२८	२९	३०
उदयभंगा →	८	८	८	१६	१६	८
सर्वभगा	६४॥					

पण नव एकार छक त्ति गय ॥ (इति नरकादिगतिचतुष्के नाम्न उदयस्थानानि)
बाणउई अट्टासी उणनवई निरय तिन्नि संताओ ।

तिरियगइ पंच संता सामन्नेणं तु इय एवं ॥ (५३८)

बाणउई अट्टासी छलसी अट्टत्तरी य चत्तारि ।

तह पंचमिया आसी अट्टत्तरिवज्ज मणुएसु ॥ (५३९)

मणुयसत्ताठाणा— ६३, ६२, ८६, ८८ ८६, ८०, ७६, ७५, ७५, ६, ८ ।

देवगइ चउर संता तिणवड बाणवइ तह य अट्टासी ॥

उणनवई संत भवे इओ(त्तो) संवेहु एसु ॥ (५४०)

(तिपचएक्कारसचउक्क ति गय ॥ इति गतिचतुष्के नाम्न सत्तास्थानानि)

(अथ गतिमार्गणाचतुष्के नाम्नो बन्धोदयसत्तास्थानसवेध)

उणतीसे बंधम्मी पंचसु उदएसु निरय दुगसंतं ।

बाणवई अट्टासी तिरिजुग्गे संतया दस उ ॥ (५४१)

तह तीमे उज्जोए उणतीसे तह य मणुयजुग्गम्मि ।

दस दस संतट्टाणा उणनवई दोसु पणपणगं ॥ (५४२)

तित्थयरसंतकम्मी मिच्छहिट्ठी उ अंतमुहुकालं ।

उणतीसबंध संतं उणनवइ नेरइयउदएसुं ॥ (५४३)

तह तीसबंध एवं सम्महिट्ठी उ निरयबंधेसुं ।

आयमचउअंतमुहु चरिमे निरयाइयं संतं ॥ (५४४)

इय संवेहो बुत्तो नारयबंधुदयसंत चालीसं ।

तिरियगई संवेहो इय अणुसारेण वोच्छामि ॥ (५४५)

ठवणा—

बधठाणे २६, उदएसु सतठाणा तु एव सव्वा २५॥	बधठाणे ३०, उदएसु सतठाणा									
उदयठाणा	२१	२५	२७	२८	२६	२१	२५	२७	२८	२६
सगलतिरिजुग्गे	६२	६२	९२	६२	६२	९२	६२	६२	६२	९२
	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८	८८
मणुयगइजुग्गे	२	२	२	२	२	८९	८६	८९	८६	८६
तित्थयरसतकम्मी	१	१	१	१	१	एव सव्वेवि १५॥				

तिरियगइसवेहो भज्जइ-

पणवधा हिट्टसमा बंधे बंधे य नव उदयठाणा ।

आइमचउ पणसंता चरिमा नियमा उ चउसंता ॥ (५४६)

चालीमसंतठाणा बंधे बंधे य होंति पत्तेयं ।
 दुन्निसय संतभेया अट्टावीसम्मि पुण एए ॥ (५४७)
 अट्टावीसे बंधे उदयट्टाणा उ अट्ट पुव्वुत्ता ।
 इह कम्मभोगभूमियवेउव्वियतिरियमासज्ज ॥ (५४८)
 दो दो संतट्टाणा अट्टसु उदएसु होंति पत्तेयं ।
 नवरं दोअंतिल्लिसु छलसी अट्टार सव्वेवि ॥ (५४९)

मणुयगइसवेहमाह-

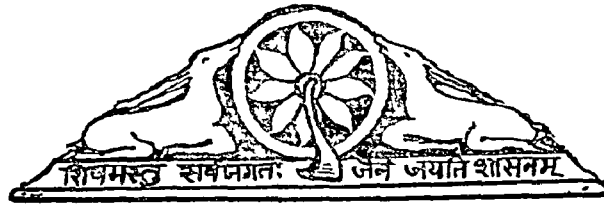
मणुउदया पुण सत्त उ उदए उदए य चउर संताउ ।
 चाणवई अट्टानी छलसी तहऽसीइ तुरिया उ ॥ (५५०)
 नवरं दो वेउव्विय दो दो पढमाउ संतभेया उ ।
 चाणउई अट्टासी पणवीसे तह य सगवीसे ॥ (५५१)
 संवेहो बंधेसुं बंधे बंधे य सत्त सव्वुदया ।
 चउवीस संतठाणा पंचसु बंधेसु पत्तेयं ॥ (५५२)
 पढमतिगवंडु मिच्छे उणतीसा तीस सम्म तह मिच्छे ।
 सव्वेसु संतठाणा चउवीसे पंच गुणिया उ ॥ (५५३)
 तित्थयरसंतियाणं तिणवइ उणनवइ दुन्नि उदएसु ।
 उणतीस बंधठाणे सत्तसु उदएसु पत्तेयं ॥ (५५४)
 अट्टावीसे बंधे सत्तसु उदएसु संतसोलसगं ।
 तीसे तह इगतीसे चाणउई तह य तेणउई ॥ (५५५)
 जसक्किच्चिबंध अट्ट उ उवरयबंधम्मि तीस पुव्वुत्ता ।
 नउयसयमंतसखा मणुयगई नामसंवेहो ॥ (५५६)

(देवगइसवेहमाह-)

देवगई मवेहो बंधे बंधे य सव्वुदयठाणा ।
 चाणउई अट्टासी दो दो संता उ उदएसुं ॥ (५५७)
 तित्थयरसंतिया जे मणुयगईजोगतीस बंधंता ।
 तेणउई उणनवई छसुं वि उदएसु पत्तेयं ॥ (५५८)
 तेणवइमंतकम्मं पलियासंखंसआउव्वोलीणे ।
 न घडइ देवगईए आहारचउक्क उव्वलइ ॥ (५५९)
 केसिंचि मए एवं आहारुव्वलिय सचरमखंडस्स ।
 संता अहिया विहु तेणवई तेण बहुकालं ॥ (५६०)

दे छकट्टचउक्कं इच्चाड्डाण गइचउक्कस्स ।
 बंधोदयसवियप्पा संतट्टाणा य इय वुत्ता ॥ (५६१)
 इय अणुसारेण तहा नेया इह मग्गणाण तेरससु ।
 बंधोदयसंतगया भेयवियप्पाउ सच्चत्थ ॥ (५६२)
 इय एउ सुमरणत्थ टिप्पणमित्तं पि किंचि उद्धरियं ।
 लक्खणछंदवियारो न य कायव्वो य को वि इहं ॥ (५६३) [४६६]
 इत्थ य सुत्तविचन्नं मइमोहा किंचि उद्धरिय होज्जा ।
 सोहिंतु जाणमाणा मज्झ य मिच्छुकडं होउ ॥ (५६४) [४६७]
 सिरिजिणवल्लहसूरी आसी सूरुव्व भुवणविकस्खाओ ।
 तस्सेव विण्णोएणं उद्धरियं रामदेवेणं ॥ (५६५)

॥ इति श्रीरामदेवगणिकृत सप्ततिकाटिप्पनक समाप्तम् ॥



इगिविगलिदिय सगले पणपच य अट्ट बंधठाणाणि ।

पण छवकेकारुदया पण पण बारसगसंताणि ॥सूत्रम्-५२॥

इय कम्मपगळिठाणाणि सुट्टु वधुदयसतकम्मसा ।

गहआइएहि अट्टसु चउप्पगारेण नेयाणि ॥सूत्रम्-५३॥

गह १इदिए २य काए ३जोए ४वेए ५कसाय ६ नाणे य ।

संजम ८ दसण ९ लेसा १० भव ११ सम्मे १२ सन्नि

१३ आहारे १४ ॥सूत्रम्-०॥

सतपयपरूवणया १ दव्वपमाणं च २ खेत्त ३ फुसणा य ।

काल ५ तर च ६ भावो ७ अप्पावहुयं च ८ दाराइ ॥सूत्रम्-०॥

× उदयस्सुदीरणस्स य सामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।

मुत्तूणं ईयाल सेसाणं सव्वपयडोणं ॥सूत्रम्-५४॥

× नाणंतरायदसगं १० दंतण नव ९ वेयणिज्ज मिच्छत्तं ।

सम्मत्त १ भ १ वेया ३ उयाणि ४ नवनाम ९ उच्चं १ च ॥सूत्रम्-०॥

मणुयगइजाइतसबायरं च पज्जत्त भगमाइज्ज ।

जसकित्ती तित्थगर नामस्स हवंति नव एया ॥सूत्रम्-०॥

तित्थयराहारगविरहिया उ अज्जेइ सव्वपयडोओ ।

मिच्छत्तवेयगो सासणो वि उगवीससेसाओ ॥सूत्रम्-५६॥

छायालसेस मीसो अविरयसम्मो तियालपरिसेसं ।

तंवल्ल देसविरओ विरओ सगवल्लसेसाओ ॥सूत्रम्-५७॥

उगुसट्टिमप्पमतो व गइ देवाउगस्स इयरो वि ।

अट्टावल्लमणुवो छप्पन्न वावि छव्वीस ॥सूत्रम्-५८॥

वावीसा एगूणं बंधइ अट्टारसत्ति अनियट्टी ।

सत्तर सुहुमसरागो, सायममोहो सजोगि त्ति ॥सूत्रम्-५९॥

× उदयस्सु गाहा ॥ नाणतरायगाहा ॥ निहापणगाण सरीरपज्जत्तीए पज्जयाण बीयसमयाउ आढ-
वित्तु उदओ हवइ, उदीरणाए विणा ताव जाव इदियपज्जत्तीए पज्जत्तगु त्ति तओ बीयसमयपभिइ दोवि
हुत्ति त्ति ॥ मिच्छत्तस्स पढमसम्मत्तमुप्पइतेण अतरकरण कय तत्थ पढमठिईअ आवलियसेसाए
उदीरणा नत्थि उदओ चेव ॥ सम्मत्तस्स वावीससतकम्मे आवलियसेसे उदओ चेव ॥ अहवा
उवसमसेट्ठि पडिवज्जतस्स अतरकरणे कए पढमठिईए आवलियसेसाए उदओ चेव ॥ तिण्ह वेयाण
जेण वेपण सेट्ठि पडिवत्तस्स अतरकरणे कए पढमठिईए आवलियासेसाए उदओ चेव ॥

एसो उ बंधसामित्तोधो गइयाइए वि तहेव ।
 ओहाओ साहिजा जत्थ जहा पयडिसवभावो ॥सूत्रम्-६०॥
 तित्थयरदेवनिरयाउयं च तिसु तिसु गईसु बोधव्व ।
 अवसेसा पयडोओ हवंति सव्वासु वि गईसु ॥सूत्रम्-६१॥
 पढमकसायचउक्कं दसणतिगसत्तया वि उवसता ।
 अविरयसम्मत्ताओ जावऽनियट्टित्ति नायव्वा ॥सूत्रम्-६२॥
 सत्तइ नव य पन्नरस सोलस अट्टारसेव इगुवीसा ।
 एगाहिदुचउवीसा पणवीसा वायरे जाण ॥सूत्रम्-०॥
 सत्तावीसं सुहुमे अट्टावीस वि मोहपयडोओ ।
 उवसंतवीयरागे उवसता ह्मिति नायव्वा ॥सूत्रम्-०॥
 पढम ायचउक्कं एत्तो मिच्छत्तमोससम्मत्तं ।
 अविरयसम्ममे देसे 'पमत्तअपमत्त खीयति ॥सूत्रम्-६३॥
 अनियट्टिवायरे थोणगिद्धित्तिगनिरयतिरियनामाउ ।
 सखिज्जइमे सेसे तप्पाओगा उ खीयति ॥सूत्रम्-०॥
 एत्तो हणइ कसायद्वगं पि पच्छा णपुसग इत्थो ।
 तो णोकसायल्लक्क पि छुहइ सजलणकोहम्मि ॥सूत्रम्-०॥
 पुरिसं कोहे कोह माणे माणं च छुहइ मायाए ।
 मायं च छुहइ लोभे लोभ सुहुम पि तो हणइ ॥सूत्रम्-६४॥
 खीणकसायदुचरिमे निद पयल च हणइ छउमत्थो ।
 आवरणमंतराए छउमत्थो चरिमसमयम्मि ॥सूत्रम्-०॥
 संभिन्नं पासंतो लोगमलोगं य सव्वओ सव्वं ।
 तं नत्थि ज न पासइ भूयं भव्वं भविस्सं य ॥सूत्रम्-०॥
 देवगइसहगयाओ दुचरिमस भवियम्मि खीयति ।
 सविवागेयरनामा नोयागोयपि तत्थेव ॥सूत्रम्-६५॥
 अन्नयरवेयणिज्जं मणुयाऊ उच्चगोय नामे य ।
 वेएइ अजोगिज्जिणो उक्कोस जहन्न एक्कार ॥सूत्रम्-६६॥
 मणुयगइजाइतसवायरं च त्तसुभगमाएज्ज ।
 जसदि तित्थयर नामस्स हवति नव एया ॥सूत्रम्-६७॥

तच्चाणुपुव्विसहिया तेरस भवसिद्धियस्स चरिमम्मि ।
 सन्तंसगमुक्कोसं जहन्नयं धारस हवन्ति ॥सूत्रम्-६८॥
 मणुयगइसहगयाओ भवत्तित्तविवागजीववागत्ति ।
 वेयणिअन्नयरुच्च च चरिमसमयम्मि खीयति ॥सूत्रम्-६९॥
 अह सुच्चिरसयलजयसिहरमरुयनिरुवमसहावसिद्धिसुह ।
 अणिहणमव्वावाह तिरयणसारं अणुहवति ॥सूत्रम्-७०॥
 दुरहिगमणिउण परसत्थरुइलवहुभगदिद्धिवायाओ ।
 अत्था अणुसरियव्वा बधोदयसतकम्माणं ॥सूत्रम्-७१॥
 जो जत्थ अपडिपुत्तो अत्थो अप्पागमेण बड्ढोत्ति ।
 तं खमिऊण बहुसुया पूरेऊणं परिकहितु ॥सूत्रम्-७२॥
 गाहगं सयरीए चदमहत्तरयथाणुसारीए ।
 टीकाएँ नियमियाणं एगूणा होइ नउईओ ॥सूत्रम्-०॥

॥ सप्ततिका समाप्ता ॥



* सप्ततिकाभिधः षष्ठः कर्मग्रन्थः

हिसद्वपएहि महत्थं, बंधोदयमंत ^१पयडिठःणाणं ।
^२चुळ्ळं सुण संखेवं, ^३नीमंदं दिड्ढिवायस्म ॥ १ ॥
 कइ बंधंतो वेयइ, कइ कइ वा ^४संतपयडिठणाणि ।
 झूलुत्तर ^५पगईसुं, भंगविगप्पा ^६उ वोद्धव्वा ॥ २ ॥
 अट्टविहसत्तछब्बंध ^७एसु, अट्टेव उदय ^८संतंसा ।
 एगविहे तिविगप्पो, एगविगप्पो अवंधंमि ॥ ३ ॥
 सत्तट्टवंध अट्टुदय-मंत तेरससु जीवठाणोसु ।
 एगंमि पंच भंगा, दो भंगा ^९हुंति केवलिणो ॥ ४ ॥
 अट्टसु एगविगप्पो, छरसु वि गुणसन्निएसु दुविगप्पो ।
 पत्तेअं पत्तेअं, बंधोदयमंतकम्माण ॥ ५ ॥
 पंच नव ^{१०}दुन्नि अट्टा-वीसा चउरो तहेव वायाला ।
^{११}दुन्नि ^{१२}अ पंच य भणिया, पयडीओ आणुपुव्वीए ॥ ६ ॥
 (प्रक्षेपगाथा)
 बंधोदयसंतंसा, नाणावरणंतराडए पंच ।
 बंधोवरमेवि ^{१३}उदय, संतंसा हुंति पंचेव ॥ ६ ॥ ७ ॥

* सप्ततिकाख्यस्य षष्ठस्य कर्मग्रन्थस्य मूलगाथा सप्ततिकाचूर्णावैकसप्ततिसङ्ख्याका गृहीता-
 सन्ति । ताश्चात्रा-ऽङ्कतो दर्शिता तथा ऽन्या अपि प्रक्षिप्तगाथा मुद्रितपुस्तकेपूपलभ्यन्ते ता अध्यत्र
 सगृहीता, ताभिः प्रक्षिप्तगाथाभिः सह मूलगाथानां क्रमाद् एकनवतिसङ्ख्यान्त प्रदर्शितं स च मुद्रित-
 पुस्तकेषु दृश्यते । हस्तलिखितप्रतौ पुनरेकनवतिगाथां क्रमानुसारेण ६६-६७ तमगाथयोर्मध्ये द्वे गाथे
 अधिकतया स्त, ६२ तमगाथा नास्ति, ६८-६९ तमगाथयोर्मध्येऽधिकतयैकगाथा-ऽस्ति, तेन हस्तलिखित
 प्रतौ सर्वा गाथास्त्रिनवतिर्भवति । मुद्रितपुस्तकापेक्षया हस्तलिखितप्रतौ २१-२२ तमगाथयोः, २७-२८
 तमगाथयोः, ५५-५६ तमगाथयोश्च क्रमव्यत्ययोऽस्ति । ८६ तमगाथा च भिन्नैवास्ति । तथा श्रीमन्म-
 ल्यगिरिपादकृतवृत्तावपि चूर्णिवन्मूलगाथा सन्ति, केवलं तत्र २४-२५ तमगाथयोर्मध्ये भाष्यसत्का-
 ऽशीतितमा गाथा २५ तमगाथातयाऽधिका प्रक्षिप्ता विद्यते, तेन तत्र सर्वा गाथा द्वामप्रतिर्भवति ।

१ “पगइ” इति वा “पगडि” इति वा । २ “वोच्छ” इत्यपि । ३ “निस्सद” इत्यपि । ४ “सति
 पयडिठणाणि” इति वा, “पयडिसतठाणाणि” इति वा “पयइठाणकम्मसा” इति वा “पयडिठाणसतसा”
 इति वा पाठः । ५. “पयडीसु” इति वा, “पयडीणे” इति वा पाठः । ६ “उवोधव्वा” इति वा “मुणोयव्वा”
 इति वा पाठः । ७ “ओसु” इति वा । ८ “सताइ” इत्यपि । ९ “होति” इत्यपि । १०-११ “दोन्नि”
 इत्यपि । १२ “य” इत्यपि । १३ तथा उद-सता होति पंचेव ॥६॥” इति वा, “तथा उदसता हुति
 पञ्चेव ॥६॥” इति वा, “पुणो पञ्चेव य उदयसतसा ।७। इति वा ।

बंधस्स य संतस्स य, ^१पगड्डाणाइँ तिणिण तुल्लाईं ।
^२उदयट्टाणाइँ दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥ ८ ॥
 बीआवरणे नवबंध^३एसु, चउपंचउदय नवसंता ।
 छच्चउबंधे चैवं, चउबंधुदए छलंमा य ॥ ८ ॥ ९ ॥
 उवरयबंधे चउ ^४पण, नवंस चउरुदय ^५छच्च चउ संता ।
 वेअणिआउयगोए, विभज्ज मोहं परं ^६वुच्छं ॥ ९ ॥ १० ॥
 गोअंमि सत्त भंगा, अट्ट य भंगा हवंति वेअणिए ।
 पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो ^७उ ॥ ११ ॥ (प्र०)
 बावीस ^८इक्कवीसा, ^९सत्तरसं तेरसेव नव पंच ।
 चउ तिग दुगं च ^{१०}इक्कं, वधट्टाणाणि मोहस्स ॥ १० ॥ १२ ॥
^{११}एगं व दो व चउरो, एत्तो ^{१२}एगाहिआ दसुक्कोमा ।
 ओहेण मोह ^{१३}णिज्जे, उदय ^{१४}ट्टाणाणि नव हुंति ॥ ११ ॥ १३ ॥
^{१५}अट्टय-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग-^{१६}एगाहिआ भवेवीसा ।
 तेरस ^{१७}वारिक्कारस, ^{१८}इत्तो पंचाड ^{१९}एगूणा ॥ १२ ॥ १४ ॥
 संतस्स ^{२०}पयडिठाणाणि, ताणि मोहस्स ^{२१}हुंति पन्नरस ।
 बंधोदयसंते पुण, भंग ^{२२}विगप्पा ^{२३}बहु जाण ॥ १३ ॥ १५ ॥
 छव्वावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो ।
^{२४}नवबंधगे वि ^{२५}दुणिण उ, ^{२६}इक्किक्कमओ पर भंगा ॥ १४ ॥ १६ ॥
 दस बावीसे नव ^{२७}इगवीसे, सत्ताड उदय ^{२८}कम्मंसा ।
 छाई नव सत्तरसे, तेरे पंचाड अट्टेव ॥ १५ ॥ १७ ॥

१ “पगड्डाणाणि तिन्नि तुल्लाणि” इति वा, “पगडिटाणाणि तिन्नि सरिसाणि ।” इति वा । २
 “उदयट्टाणाणि” इति वा । ३ “ओसु” इति वा । ४ “पच उदय नवसत्त छच्च चउजुयल ।” इत्यपि
 पाठ । ५ “छ चउसताइ” इत्यपि । ६ “वोच्छ” इति वा । ७ “य” इत्यपि । ८ “एक्कवीसा” इत्यपि ।
 ९ “सत्तरसा” इत्यपि । १० “एक्क” इति वा ‘एग’ इति वा । ११ “एक्क” इति वा, ‘एक्को’ इति वा,
 “एक्को” इति वा, “एग च दो य चउरो” इति वा । १२ “एक्काहिया” इत्यपि । १३ “णिज्जा” इति वा ।
 १४ “ट्टाणा नव हवंति” इत्यपि । १५ “अट्टयसत्तग” इति । १६ “एक्का” इत्यपि । १७ “वारिक्कारस”
 इति वा “वारिक्कारा” इति वा । १८ “एत्तो” इति वा । १९ “एक्कूणा” इत्यपि, “एक्कूणा” इत्यपि वा ।
 २० “पगडि” इति वा, “पगड्ड” इति वा, “पगड्डाणाइँ” इति वा । २१ “होनि” इति वा । २२
 “विगप्पे” इति वा । २३ “बहु” इत्यपि । २४ “णत्र” इत्यपि । २५ “दोन्नि” इत्यपि । २६ “एक्के-
 क्क” इत्यपि । २७ “इक्करोस” इति वा “इगवीस” इति वा । २८ “ठाणाणि” इति वा “ठाणाइ” इति वा ।

चत्तारि ^१आड ^२नवबंध ^३एसु ^४उक्त्तोम सत्तमुदयसा ।
 पंचविहबंधगे पुण, उदओ ^५दुण्हं मुणेअच्चो ॥१६॥१८॥
^६इत्तो चउ ^७वधाई, ^८इक्कक्कुदया हवंति सच्चेवि ।
 बंधोवरमे वि तहा, उदयाभावे वि ^९वा ^{१०}हुज्जा ॥१७॥१९॥
^{११}इक्कग छक्कक्कारस, दस सत्त चउक्क ^{१२}इक्कगं चैव ।
 एए चउवीसगया, ^{१३}चउवीस दुगेकमेकारा ॥१८॥२०॥
^{१४}नवत्तेसीडसएहिं, उदय ^{१५}विगप्पेहि मोहिआ जीवा ।
^{१६}अउणत्तरिमीआला, पय ^{१७}विंदसएहिं विन्नेआ ॥२०॥२१॥
 नवपंचा ^{१८}णउअसए, उदयविगप्पेहिं ^{१९}मोहिआ जीवा ।
^{२०}अउणत्तरि एगुत्तरि, पयविंदसएहिं विन्नेआ ॥१६॥२२॥
^{२१}तिन्नेव य वावीसे इगवीसे अट्टवीस ^{२२}सत्तरसे ।
 छच्चेव तेर ^{२३}नव-बंध ^{२४}एसु पंचेव ^{२५}ठाणाणि ॥२१॥२३॥
 पंचविहचउविहेसुं, छक्कक्क सेसेसु जाण पंचेव ।
^{२६}पत्तेअ, पत्तेअं चत्तारि ^{२७}अ बंध ^{२८}वुच्छेए ॥२२॥२४॥
 दसनवपन्नरसाइं. बंधोदयसंतं ^{२९}पयडिठाणाणि ।
^{३०}भणिआणि मोहणिज्जे, ^{३१}इत्तो ^{३२}नामं परं ^{३३}वुच्छं ॥२३॥२५॥

१ “आड” इति वा । २ “णव०” इति वा । ३ “ओसु” इति वा । ४ “सत्तुक्कमेण उदयसा” इति वा । “उक्कोससत्त उदयसा” इति वा । ५ “दोण्हं” इति वा । ६ “एत्तो” इति वा । ७ “वधादी” इत्यपि । ८ “एक्कक्कु” इत्यपि, “इक्कक्कु” इत्यपि वा । ९ “ता होज्जा ॥१६॥” इति वा । १० “होज्जा” इत्यपि । ११ “एक्कग छक्कक्कारस” इत्यपि । १२ “एक्कग” इति वा, “एक्कग” इति वा । १३ “चउवीसदुगेकमिक्कारा ॥१८॥” इत्यपि, “चउवीस दुगिक्कमिक्कारा ॥२०॥” इत्यपि वा, “वार दुगिक्कमि इक्कारा ॥२०॥” इत्यपि वा । १४ इयं गाथा हस्तलिखितग्रन्थौ द्वाविंशतितमी द्वाविंशतितमी चैकविंशतितमीति न्यत्यय । १५ “विगप्पेहिं मोहिया” इत्यपि । १६ “अउणत्तरिमीआला” इत्यपि । १७ “वद०” इत्यपि । १८ “णउअसए” इति वा, “णउअसएहुदसु” इति वा, “णउअसएहिं” इति वा । १९ “मोहिया” इत्यपि । २० “अउणत्तरि” इति वा, “अउणत्तरि एगुत्तरि” इति वा । २१ “तिण्णव उ” इति वा, “तिन्नेव उ” इति वा । २२ “कम्मसा । सत्तरसे छत्सते तेरस नवबंधे पच ॥२३॥” इति हस्तलिखितग्रन्थौ । २३ “णव०” इति वा । २४ “ओसु” इति वा । २५ “ठाणाइ ॥२१॥” इति वा । २६ “पत्तेय पत्तेय” इत्यपि । २७ “य” इति वा, “उ” इति वा । २८ “वुच्छेए” इत्यपि । २९ “वपगइ०” इति वा “वपयइ०” इत्यपि वा । ३० “भणियाइ” इति वा । ३१ “एत्तो” इति वा । ३२ “णाम” इति वा । ३३ “वुच्छं” इत्यपि ।

बंधस्स य संतस्स य, ^१पगइठाणाइं तिणिण तुल्लाइं ।
^२उदयट्टाणाइं दुवे, चउ पणगं दंसणावरणे ॥ ७ ॥ ८ ॥
 बीआवरणे नवबंध^३एसु, चउपंचउदय नमसंता ।
 छच्चउबंधे चेंवं, चउबंधुदए छलंमा य ॥ ८ ॥ ९ ॥
 उवरयबंधे चउ ^४पण, नवंस चउरुदय ^५छच्च चउ मंता ।
 वेअणिआउयगोए, विभज्ज भोहं परं ^६बुच्छं ॥ ९ ॥ १० ॥
 गोअंमि सत्त भंगा, अट्ट य भंगा हवंति वेअणिए ।
 पण नव नव पण भंगा, आउचउक्के वि कमसो ^७उ ॥ ११ ॥ (प्र०)
 बावीस ^८इक्कवीसा, ^९सत्तरसं तेरसेव नव पंच ।
 चउ तिग दुगं च ^{१०}इक्कं, बंधट्टाणाणि मोहस्स ॥ १० ॥ १२ ॥
^{११}एगं व दो व चउरो, एत्तो ^{१२}एगाहिआ दसुक्कोमा ।
 ओहेण मोह^{१३}णिज्जे, उदय ^{१४}ट्टाणाणि नव हुंति ॥ ११ ॥ १३ ॥
^{१५}अट्टय-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग-^{१६}एगाहिआ भवेवीसा ।
 तेरस ^{१७}वारिक्कारस, ^{१८}इत्तो पंचाइ ^{१९}एगूणा ॥ १२ ॥ १४ ॥
 संतस्स^{२०}पयडिठाणाणि, ताणि मोहस्स^{२१}हुंति पन्नरस ।
 बंधोदयसंते पुण, भंग^{२२}विगप्पा ^{२३}वहु जाण ॥ १३ ॥ १५ ॥
 छव्वावीसे चउ इगवीसे, सत्तरस तेरसे दो दो ।
^{२४}नवबंधेगे वि^{२५}दुणिण उ, ^{२६}इक्किक्रमओ परं भंगा ॥ १४ ॥ १६ ॥
 दस बावीसे नव ^{२७}इगवीसे, सत्ताइ उदय^{२८}कम्मंसा ।
 छाई नव सत्तरसे, तेरे पंचाइ अट्टेव ॥ १५ ॥ १७ ॥

१ "पगइठाणाणि तिन्नि तुल्लाणि" इति वा, "पगइठ्ठाणाणि तिन्नि सरिसाणि ।" इति वा । २
 "उदयट्टाणाणि" इति वा । ३ "ओसु" इति वा । ४ "पच उदय नवसत छच्च चउजुयल ।" इत्यपि
 पाठ । ५ "छ चउसताइ" इत्यपि । ६ "बोच्छ" इति वा । ७ "य" इत्यपि । ८ "एक्कवीसा" इत्यपि ।
 ९ "सत्तरसा" इत्यपि । १० "एक्क" इति वा "एग" इति वा । ११ "एक्क" इति वा, "एक्को" इति वा,
 "एक्को" इति वा, "एग च दो य चउरो" इति वा । १२ "एक्काहिआ" इत्यपि । १३ "णिज्जा" इति वा ।
 १४ "अट्टाणा नव हवति" इत्यपि । १५ "अट्टयसत्तय" इति । १६ "एक्का" इत्यपि । १७ "वारिक्कारस"
 इति वा "वारिक्कारा" इति वा । १८ "एत्तो" इति वा । १९ "एक्कूणा" इत्यपि, "एक्कूणा" इत्यपि वा ।
 २० "पयडिठ्ठा" इति वा, "पयडिठ्ठा" इति वा, "पगइठाणाइं" इति वा । २१ "हुंति" इति वा । २२
 "विगप्पे" इति वा । २३ "वहु" इत्यपि । २४ "पञ्च" इत्यपि । २५ "दोन्नि" इत्यपि । २६ "एक्के-
 क्क" इत्यपि । २७ "इक्कवीस" इति वा "इगवीस" इति वा । २८ "ठाणाणि" इति वा "ठ्ठाणाइ" इति वा ।

चत्तारि ^१आड ^२नवबंध ^३एसु ^४उक्त्रोम सत्तमुदयसा ।
 पंचविहबंधगे पुण, उदओ ^५दुण्हं मुणेअच्चो ॥१६॥१८॥
^६इत्तो चउ^७बंधाई, ^८इक्कक्कुदया हवंति सच्चवेवि ।
 बंधोवरमे वि तथा, उदयाभावे वि ^९वा^{१०}हुज्जा ॥१७॥१९॥
^{११}इक्कग छक्किक्कारस, दस सत्त चउक्क^{१२}इक्कगं चैव ।
 एए चउवीसगया, ^{१३}चउवीस दुगेक्कमेकारा ॥१८॥२०॥
^{१४}नवत्तेमीइसएहिं, उदय^{१५}विगप्पेहि मोहिआ जीवा ।
^{१६}अउणुत्तरिमीआला, पय^{१७}विदसएहिं विन्नेआ ॥२०॥२१॥
 नवपंचा^{१८}णउअसए, उदयविगप्पेहिं ^{१९}मोहिआ जीवा ।
^{२०}अउणुत्तरि एगुत्तरि, पयविदसएहिं विन्नेआ ॥१६॥२२॥
^{२१}तिन्नेव य वावीसे इगवीसे अट्टवीस ^{२२}सत्तरसे ।
 छच्चैव तेर^{२३}नव-बंध^{२४}एसु पंचेव ^{२५}ठाणाणि ॥२१॥२३॥
 पंचविहचउविहेसुं, छक्कक्क सेसेसु जाण पंचेव ।
^{२६}पत्तेअ, पत्तेअं चत्तारि ^{२७}अ बंध^{२८}वुच्छेए ॥२२॥२४॥
 दमनवपन्नरसाइं. बंधोदयसंतं ^{२९}पयडिठाणाणि ।
^{३०}भणिआणि मोहणिज्जे, ^{३१}इत्तो ^{३२}नामं परं ^{३३}वुच्छं ॥२३॥२५॥

१ "आड" इति वा । २ "णव०" इति वा । ३ "ओसु" इति वा । ४ "सत्तुक्कमेण उदयसा"
 इति वा "उक्कोससत्त उदयसा" इति वा । ५ "दोण्हं" इति वा । ६ "एत्तो" इति वा ।
 ७ "बंधादी" इत्यपि । ८ "एक्कक्कु" इत्यपि, "इक्केक्कु०" इत्यपि वा । ९ "ता होज्जा ॥१६॥"
 इति वा । १० "होज्जा" इत्यपि । ११ "एक्कग छक्केक्कारस" इत्यपि । १२ "एक्कगा" इति वा,
 "एक्कग" इति वा । १३ "चउवीसदुगेक्कमिक्कारा ॥१८॥" इत्यपि, "चउवीस दुगिक्कमिक्कारा
 ॥२०॥" इत्यपि वा, "धार दुगिक्कमि इक्कारा ॥२०॥" इत्यपि वा । १४ इयं गाथा हस्तलिखितप्रतौ
 द्वाविंशतितमी द्वाविंशतितमी चैकविंशतितमीति व्यत्यय । १५ "विगप्पेहिं मोहिया" इत्यपि । १६
 "अउणत्तरिमीआला" इत्यपि । १७ "वद०" इत्यपि । १८ "णउअसए" इति वा, "णउअसएहुदण्ण०"
 इति वा, "णुयसएहिं" इति वा । १९ "मोहिया" इत्यपि । २० "अउणत्तरि" इति वा, "अउणत्तरि
 एगुत्तरि" इति वा । २१ "तिण्णेव उ" इति वा, "तिन्नेव उ" इति वा । २२ "कम्मसा ।
 सत्तरसे छस्सते तेरस नवबंधए पच ॥२३॥" इति हस्तलिखितप्रतौ । २३ "णव०" इति वा । २४ "ओसु"
 इति वा । २५ "ठाणाइ ॥२१॥" इति वा २६ "पत्तेय पत्तेय" इत्यपि । २७ "य" इति वा, "उ" इति
 वा । २८ "वोच्छेए" इत्यपि । २९ "पयइ०" इति वा "पयइ०" इत्यपि वा । ३० "भणियाइ"
 २१ ३१ "एत्तो" इति वा । ३२ "पाम" इति वा । ३३ "वोच्छं" इत्यपि ।

तैवीस १पणवीसा, छव्वीसा अडुवीस २गुणतीसा ।
 ३तीसेगतीस ४एगे, वंध ५ट्टाणाणि नामस्स ॥२४॥१६॥
 ६चउ पणवीसा सोलग नव वाणउईमया य अडयाला ।
 एयालुत्तरछाया -लसया ७इक्कक्क वयविही ॥२७॥(प्र०)
 वीसिगवीसा चउवीसग्गा उ एगाहिया य इगतीसा ।
 उदयट्टाणाणि भवे नव अडु य ८हुँति नामस्स ॥२५॥२८॥
 ९इक्क विजालिक्कारस, ११त्तितीसा छस्मयाणि १२त्तितीसा ।
 वारसमत्तरससयाण -हिंसाणि विपंचसीईहि ॥२६॥२९॥
 अउणत्ती १३सिक्कारससयाणिहि असतरपंचसट्टीहि ।
 १४इक्कक्कगं च वीसा-दट्टुदयतेसु उदयविही ॥२७॥३०॥
 तिदुनउई १५गुणनउई, १६अडसी छलसी असीड १७गुणसीई ।
 १८अडुयछापन्नत्तरि, नव अडु य १९नामसंताणि ॥२८॥३१॥
 अडु य वारस वारस, वंधोदय २०संतपयडि २१ठाणाणि ।
 ओहेणाएसेण य, जत्थ जहामभवं २२विभजे ॥२९॥३२॥
 नव २३पणगोदयसंता तेवीसे २४पन्नवीस छव्वीसे ।
 अडु चउरडुवीसे, नव २५सग्गि गुणतीस तीमंसि ॥३०॥३३॥
 २६एगेगमेगतीसे, एगे एगुदय अडु संतंसि ।
 उवरयवंधे दस दम, वेअगभंतसि २७ठाणाणि ॥३१॥३४॥

१ 'पन्नवीसा' इत्यपि । २ 'गुणतीसा' इति, 'उगुतीसा' इत्यपि वा । ३ 'तीसिक्कं' इत्यपि,
 "तीसेक्कं" इत्यपि । ४ "मेक्क" इत्यपि । ५ "ट्टाणाडं" इत्यपि । ६ इय गाथा मूलगाथातया
 चूर्णो नास्ति, श्रीमन्मलयगिरिविहितवृत्त्युपैतसप्ततिकाया चाऽस्ति । २७-२८ तमगाथयोर्हस्तलि
 खितप्रतौ व्यत्ययोऽस्ति । २७ तमगाथास्थानेऽष्टात्रिंशतितमी गाथा, अष्टात्रिंशतितम्या स्थाने सप्त-
 त्रिंशतितमीति । ७ "एक्केक्कं" इत्यपि । ८ "ंगाड इगतीसगत एगहिया" इत्यपि । "ंगादि-गतीसग
 ति एगहिया" इत्यपि "ंगाति एगहिया उ इगतीसा ।" इत्यपि, "ंगाड एगहिया उ इगतीसा"
 इत्यपि वा । ९ "हुँति" इत्यपि । १० "एगवियालेक्कारस" इत्यपि, एगवियारेक्कारस" इत्यपि वा । ११-१२
 "त्तितीसा" इत्यपि । १३ "सेक्कारससयाणहिंसत्तरस पंचं" इत्यपि, "सेक्कारससयाहिंगा सतरस-
 पंचं" इत्यपि, "सेक्कारससयाणहिंसत्तरपंचं" इत्यपि वा । १४ "इक्केक्क" इत्यपि, "एक्केक्क" इत्यपि
 वा । १५ "इगुं" इत्यपि, 'उगुं' इत्यपि वा । १६ "अडुच्छलसी" इत्यपि "अट्टुयच्छलसी" इत्यपि
 वा । १७ "उगुं" इत्यपि । १ "अट्टुयच्छपणत्तरि" इत्यपि, 'अट्टुउत्पणत्तरि' इत्यपि । १९ "णामं"
 इत्यपि । २० "सत्तपणडिठाणाड" इत्यपि । २१ 'ठठाणाड' इत्यपि । २२ 'विभए' इत्यपि । २३
 "पचोदयं" इत्यपि "पच उदयं" इत्यपि । २४ "पणवीस" इत्यपि । २५ 'सत्तगतीसं' इत्यपि, "सत्ता-
 गुतीस" इत्यपि, "सत्तिगुतीसं" इत्यपि वा । २६ 'एगेग इगतीसे' इत्यपि । २७ "ठाणाड" इत्यपि ।

तिविगप्पपगइठाणेहि^१, जीवगुणसन्धिएसु ठाणेसु ।
 भगा पउ^२जियच्चा, जत्थ जहा संभवो १भवइ ॥३२॥३५॥
 तेरससु जीवसखेवएसु, नाणंतरायतिविगप्पो ।
 २इक्कंमि तिदुविगप्पो, करणं पइ ३इत्थ अविगप्पो ॥३३॥३६॥
 तेरे नव चउ पणगं, नव संतेगंगि भंगमिक्कारा ।
 वेअणिआउगगोए, विभज्ज मोह पर ४वुच्छं ॥३४॥३७॥
 पज्जत्तगसन्धिअरे, अट्ट चउक्कं च ६वेअणियभंगा ।
 ७सत्त य तिगं च गोए, ८पत्तेअ जीवठाणेसु ॥३८॥(प्र०)
 पज्जत्ताऽपज्जत्तग, समणे पज्जत्तअमण संसेसु ।
 अट्टावीसं दसगं, नवगं पणगं च आउरस ॥३९॥(प्र०)
 अट्टसु पंचसु एगे, एग दुगं दस य मोहवंधगए ।
 तिग चउ नव उदयगए, तिग तिग पच्चरस सतंमि ॥३५॥४०॥
 पण दुग पणगं पण चउ, पणगं पणगा हवंति तिन्नेव ।
 पण छप्पणगं छच्छ, -प्पणग अट्टदसग ति ॥३६॥४१॥
 सत्तेव अपज्जत्ता, सामी ९सुहुसा य वायरा चैव ।
 विगल्लिदिआ १०उ तिन्नि उ, तह य असक्की ११अ सक्की १२अ
 ॥३७॥४२॥
 नाणंतराय तिविहमवि, दससु दो १३हुंति दोसु ठाणेसु ।
 मिच्छः १४साणे १५वीए, नव चउ पण नव य १६संतंसा ॥३८॥४३॥
 १७मिस्साइ १८नियट्ठीओ, छ चउ पण नव य संतकम्मसा ।
 चउबंध तिगे चउपण, नवंस दुसु जुअल १९छस्संता ॥३९॥४४॥
 उवसंते चउ पण नव, खीणे चउरुदय छच्च चउ २०संता ।
 वेअणिआउअगोए, विभज्ज मोहं परं २१वुच्छं ॥४०॥४५॥
 चउ छस्सु दुन्नि सत्तासु, एगे चउगुणिसु वेअणिअभंगा ।
 गोए पण चउ दो तिसु, एगइसु २२दुन्नि इक्कंमि ॥४६॥(प्र०)

१ "होइ" इत्यपि । २ "एक्कंमि" इत्यपि । ३ "एत्थ" इत्यपि । ४ "वोच्छ" इत्यपि । ५ "अरे" इत्यपि । ६ "वेयं" इत्यपि । ७ "सत्तगं" इत्यपि । ८ "पत्तेय" इत्यपि । ९ "तह सुहुमवायरां" इत्यपि । १० "य" इत्यपि । ११ १२ "अ" इत्यपि । १३ "हुंति" इत्यपि । १४ "सामण" इत्यपि । १५ "विइए" इत्यपि । १६ "सत्तासा" इत्यपि । १७ "मीसाइ" इत्यपि । १८ "नियट्ठीए" इत्यपि । १९ "छस्सत" इत्यपि । २० "सत" इत्यपि । २१ "वोच्छ" इत्यपि । २२ "दोन्नि" इत्यपि ।

अद्दु१च्छाहिगवीसा, सोलस वीसं च २वारस छ दोसु ।
 दो चउसु तीसु इक्कं, ३मिच्छाइसु आउए भंगा ॥४७॥(प्र०)
 गुणठाणएसु अद्दुसु, इक्किकक्कं मोह ४वंधगाणं तु ।
 ५पच अनिअट्टिठाणे, वंधावरमो पर तत्तो ॥४१॥४८ ।
 सत्ताइ दस उ मिच्छे, सासायणमीसए ६नडुवकोसा ।
 छाई ७नव उ अविरए देसे वंचाइ अट्टेव ॥४३॥४९॥
 विरए खओवसमिए, चउगई सत्त छच्चऽपुव्वंमि ।
 ८अनिअट्टिवायरे पुण, ९इक्को व दुव्वे व उदयंसा ॥४३॥५०॥
 एगं सुहुससरागो, वैएइ अवेअगा भवे सेसा ।
 भंगाणं च पमाणं, पुव्वुट्टिटेण नायव्व ॥४४॥५१॥
 १०इक्क छडिक्कारिवका रसेव इक्कारसेव ११नव तिन्नि ।
 एए चउवीसगया, वार दुगे पंच १२इक्कंमि ॥४५॥५२॥
 वारसपणमट्टिसया, उदयविगप्पेहिं १३मोहिआ जीवा ।
 चुलसीई सत्तुत्तरि, पय १४विदसएहिं १५विन्नेआ ॥५३॥(प्र०)
 अद्दुग चउ चउ चउरट्टगा य, चउरो १६अ हुंति चउवीसा ।
 मिच्छाइअपुव्वंता, वारस पणगं च १७अनिअट्टी ॥५४॥(प्र०)
 १८जोगोवओगलेसा, -इएहिं गुणिआ हवंति १९कायव्वा ।
 जे जत्थ २०गुणट्टाणे, हवंति ते तत्थ गुणकारा ॥४६॥५५॥
 अद्दुट्टी वत्तीसं, वत्तीसं सट्टिमेव २१वावन्ना ।
 २२चोआल दोसु वीसा, २३विअमिच्छमाईसु २४मामन्नं ॥५६॥(प्र०)

१ “च्छाहियं” इत्यपि । २ “वार छ दोसु” इत्यपि । ३ “मिच्छाइसु आउगे” इत्यपि । ४. “वंधगाण” इत्यपि । ५. ‘पचानि०’ इत्यपि । ६ “णानु०” इत्यपि । ७ “णव” इत्यपि । ८ “अणि०” इत्यपि । ९ ‘एक्को’ इत्यपि । १० ‘एक्कल्लेक्कारसेव एक्कारसेव’ इत्यपि । ११ “णव” इत्यपि । १२ ‘एक्कम्मि’ इत्यपि । १३ ‘मोहिया’ इत्यपि । १४. “वंधसएहिं” इत्यपि । १५ “विन्नेया” इत्यपि । १६ ‘य’ इत्यपि, “य होंति” इत्यपि वा । १७ “अनियट्टे” इत्यपि, “अणियट्टे” इत्यपि वा । १८ ५५-५६ तमगाथयोर्हस्तलिखितप्रती व्यत्ययोऽस्ति । १९ “नायव्वा” इत्यपि । २० “गुणट्टाणोसु हुति” इत्यपि । “गुणट्टाणोसु होंति” इत्यपि । २१ “वावण्णा” इत्यपि । २२ “चोयालु” इत्यपि । “चोयाल चोयाल वीना विअ मिच्छमाईसु ॥” इत्यपि । २३ “मिच्छामाईसु” इत्यपि । २४ “सामण्ण” इत्यपि ।

१तिन्नेगे एगेगं, तिग श्रीसे पंच चउसु तिगऽपुच्वे ।
 ३इक्कार वायरमि उ, सुहुमे चउ तिन्नि उत्रसंते ॥४७॥५७॥
 ४छन्नव छक्कं तिग सत्त, दुगं दुग तिग दुग ति अडु चउ ।
 दुग^१छच्चउदुगपणचउ, चउदुगचउपणगएगचऊ ॥४८॥५८॥
 एगेगमट्ट एगे- गमट्ट छउत्थनेवल्लिजिणाणं ।
 एग चऊ एग चऊ, अडु चऊ दु छकमुदयंमा ॥४९॥५९॥
 चउ षणवीसा सोलस, नव चत्ताला सया य चाणउई ।
 वत्तीसुत्तरछायाल-सया मिच्छस्स वंधविही १.६०॥(प्र.)
 अडु ७सया चउसट्टी, वत्तीमसयाई सासणे भेआ ।
 अट्टावीसाईसुं, सव्वाणऽट्टहिग छन्नउई ॥६१॥(प्र.)
 १इगचत्तिगार वत्तीस, छसय इगतीसिगारनवनउई ।
 सतरिगसि गुतीसचउद इगारचउसट्टि मिच्छुदया ॥६२॥(प्र.)
 वत्तीस १^२दुन्नि अडुय वासीइसया य पंच नव उदया ।
 ११वारहिआ तेवीसा, १^३चावन्निक्कारस सया य ॥६३॥(प्र.)
 दो छक्कट्ट चउक्कं, पण १^४नव इक्कार छक्कं उदया ।
 १^५नेरइआइसु १^६सत्ता, ति पंच इक्कारस चउक्कं ॥५०॥६४॥
 १^७इग विगलिंदअ सगले, पण पंच य अडु वंधठाणाणि ।
 पण १^८छक्कक्कारुदया, पण पण वारस य संताणि ॥५१॥६५॥
 १^९इअ कम्मपगड्ठाणाणि, सुट्टु वंधुदय संतकम्माणं ।
 १^{१०}गइआइएहि^१ अडुसु, २^०चउप्पयारेण नेयाणि ॥५२॥६६॥२१

१ तिग्गणे” इत्यपि । २. “अयमेव पाठ समीचीनोऽस्ति । तथाऽयत्र चूर्णिकारै टीकाकृद्भिश्च “चउसु नियट्टि तिन्नि” इति पाठो विवृतः । हस्तलिखितप्रतौ पुन “पच” इतिशब्दो नास्ति तथा “चउसु पुण नियट्टितिग” इति पाठ उपलभ्यते । ३. “एक्कार वायरम्मी” इत्यपि । ४ “छण्णव” इत्यपि । ५ “छक्क चऊ पणेगचऊ ॥५८॥” इत्यपि । ६ “पणु०” इत्यपि । ७ “य सय चोवट्टि वत्तीससया य” इत्यपि । ८ “छण्णउई” इत्यपि । ९. इय गाथा हस्तलिखितप्रतौ नास्ति सुद्धितप्ररत्केषूपलभ्यते । १०. “दोन्नि” इत्यपि । ११ “वारहिगा” इत्यपि । १२ “चावन्ने०” इत्यपि । १३ “नवगेक्कार” इत्यपि । “नवक्कार” इत्यपि वा । १४ “०गोर०” इत्यपि । १५ “सता” इत्यपि । १६ “इग्गि” इत्यपि । १७ “छक्के०” इत्यपि । १८ “इय कम्मपगडि०” इत्यपि, “इय कम्मपगड्ठाणाई” इत्यपि । १९ “गइयाइएसु” इत्यपि, “गट्टयाइएहि” इत्यपि । २० “चउप्पयारेण” इत्यपि । २१ “गइइदिग य काए जोए वेए कसायनारो य । संजमदसणत्तेसा भवसम्मो सन्निआहारे ॥ ॥ सतपयप्त्तयणा दन्वपमाणं च त्रित्तफुसणा य । कालतर च भावो अप्पावहुय च दायव्व । ॥ इति गाथाद्वय ६६-६७ तमगाथायोर्मध्येऽधिकतया हस्तलिखितप्रतौ प्रक्षिप्त दृश्यते ।

उदयस्सुदीरणाए, १सामित्ताओ न विज्जड विसेसो ।
 २सुत्तूण य ३इगयालं, सेसाणं सव्व४पयडीणं ॥५३॥६७॥
 नाणंतरायदसग, दंमणनव वेअणिज्जमिच्छत्तं ।
 सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नवनाम उच्चं च ॥५४॥६८॥५
 ६तित्थयराहारग ७विरहिआओ, अज्जेड सव्व८पयडीओ ।
 मिच्छत्त९वेअगो सा—सणो१०वि गुणवीरुसेसाओ ॥५५॥६९॥
 छायालसेसमीमो, अविरयसम्मो ११तिआल१२परिसेसा ।
 १३तेवन्न देसविरओ, विरओ १४सगवन्नमेसाओ ॥५६॥७०॥
 १५इगुणट्टिमप्पमत्तो, बंधड देवा१६उअस्स इअगो वि ।
 १७अट्टावन्नमपुव्वो, १८छप्पन्न वावि छव्वीसं ॥५७॥७१॥
 वावीमा एगूणं बंधड १९अट्टारसंतमनिअट्टी ।
 २०सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो२१सजोगुत्ति ॥५८॥७२॥
 एमो उ बंध२२सामित्त,—ओहो गडआड२३एसु वि तहेव ।
 ओहाओ २४साहिज्जड, जत्थ जहा २५पगइसव्भावो ॥५९॥७३॥
 तित्थयरेवनिरया-२६उअं च तिसु तिसु गईसु २७बोधव्वं ।
 अवसेसा २८पयडीओ, हवति सव्वासु वि गईसु ॥६०॥७४॥
 पढमकसायचउवकं, दंसण२९तिग सत्तगा वि उवसंता,
 ३०अविरयसम्मत्ताओ, जाव ३१निअट्टित्ति नायव्वा ॥६१॥७५॥

१ “सामित्ताण” इत्यपि । २ “सुत्तूण” इत्यपि । ३. “ईयाल” इत्यपि, “इगुयाल” इत्यपि वा ।
 ४ “पगडीण” इत्यपि, “पगईण” इत्यपि । ५ “मणुयगइजाइतसवाथर च पज्जत्तसुमगमाएज्ज । जसकिती
 तित्थयर नामस्स हवति नवए य ॥ ॥” इतिगाथा । ६-६९ तमगाययोर्मव्येऽधि कृतया हस्तलिखितप्रतौ
 प्रक्षिप्ता दृश्यते । ६ ‘ तित्थगरा-’ इत्यपि । ७ ‘ ०विरहिआउ’ इत्यपि “०वज्जियाउ” इत्यपि । ८ ‘ पग-
 ईओ” इत्यपि, पगडीओ” इत्यपि वा । ९ ‘ ०वेयगो” इत्यपि । १० “वि उगुवीसेसाओ” इत्यपि “वि इगु-
 वीससेसाओ” इत्यपि, ‘उ उगुवीससेसाओ” इत्यपि वा । ११ “तियाल०” इत्यपि । १२ “०परिसेस”
 इत्यपि । १३ ‘तेवण्ण” इत्यपि, ‘तेपन्न०” इत्यपि वा । १४ “सगवण्ण०” इत्यपि, ‘सगपन्न०” इत्यपि ।
 १५ “इगुसट्टि०” इत्यपि, ‘उगुसट्टि०’ इत्यपि वा । १६ “०उयस्स वयरो वि” इत्यपि, “०उग च इयरो वि”
 इत्यपि वा । १७ “अट्टावण्ण०” इत्यपि । १८ “छप्पण्ण” इत्यपि । १९ ‘अट्टारस त्ति अनियट्टी” इत्यपि,
 ‘अट्टारस त्ति अनियट्टी” इत्यपि वा । २० “सत्तर” इत्यपि । २१ “सजोगित्ति” इत्यपि । २२ ‘सामित्तोहो”
 इत्यपि, “सामित्तओवो” इत्यपि । २३ “०ए वि तह च्चव” इत्यपि । २४ “साहेज्जा” इत्यपि । २५ “पगडि०”
 इत्यपि । २६ “०उग च” इत्यपि, “०उय च” इत्यपि वा । २७ “बोधव्व” इत्यपि । २८ “पगडीओ”
 इत्यपि । २९ “तिय सत्तया वि” त्यपि । ३० “अविरत०” इत्यपि । ३१ ‘नियट्टी” इत्यपि ।

सच्चद्रु नव य पनरस, सोलम अट्टारसेव १गुणवीसा ।
 एगाहि दु चउवीसा, २पणवीसा वायरे जाण ॥७६॥(प्र.)
 सत्तावीसं सुहुमे, अट्टावीसं रेच मोह ४पयडीओ ।
 उवसंत ५वीअरण, उवसता हुंति नायच्चा ॥७७॥(प्र.)
 षठमकसायचउक्कं, ७इत्तो मिच्छत्तमीससम्मत्तं ।
 ८अविरयसम्ममे देसे, ९पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥६२॥७८॥
 अनिअट्टिवायरे थीण-गिद्धित्तिगनिरय १०तिरिअनामाओ ।
 ११संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ १२खीअंति ॥७६॥(प्र.)
 १३इत्तो हणइ कसाय-दुगंपि पच्छा १४नपुंसं इत्थी ।
 तो १५नोकसायच्छकं, १६छुहेइ संजलणकोहंमि ॥८०॥(प्र.)
 पुरिसं कोहे कोहं, माणो माणं च छुहइ मायाए ।
 मायं च छुहइ १७लोहे, लोहं सुहमंपि तो हणइ १६३॥८१॥
 खीणकसायदुचरिमे, १८निहं पयलं च हणइ छउमत्थो ।
 आवरणमंतराए, छउमत्थो चरममयमि ॥८२॥(प्र.)
 देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभविअंमि १९खीअति ।
 सविवा २०गेअरनामा, २१नीआगोअ पि तत्थेव ॥६४॥८३॥
 अन्नयर २२वेयणीअं, मणुआ २३उअमुच्चगोअ २४नवनामे ।
 वेएइ अजोगिजिणो, उकोसज्जह २५न्नमिकारा ॥६५॥८४॥
 २६मणुअगइजाइतसवायरं च, षज्जत्तसुभग २७माइज्जं ।
 जसकित्ती तित्थयरं, २८नामस्स हवंति नव एआ ॥६६॥८५॥

१ “इगुवीसा” इत्यपि, “उगुवीसा” इत्यपि, “उगवीसा” इत्यपि । २ “पणुवीसा” इत्यपि । ३ “पि” इत्यपि । ४ “पगडीओ” इत्यपि । ५ “वीयरगो” इत्यपि । ६ “होति” इत्यपि । ७ “एत्तो” इत्यपि । ८ “अविरयदेसे विरए” इत्यपि । “अविरयदेसे विरयपमत्तऽपमत्ते य” इत्यपि वा ॥ ६ “पमत्त अपमत्त खीयति” इत्यपि । १० “तिरिय” इत्यपि, “०तिरियणामाड” इत्यपि । ११ “सखे” इत्यपि । १२ “खीयति” इत्यपि । १३ “एत्तो” इत्यपि । १४ “णपु” इत्यपि । १५ “णो” इत्यपि । १६ “छुहइ” इत्यपि । १७ “लोभे लोभ” इत्यपि । १८ “निहा पयला य” इत्यपि । १९ “खीयति” इत्यपि । २० “गेयर” इत्यपि । २१ “नीया गोय” इत्यपि । २२ “वेयणीय” इत्यपि, “वेयणिज्ज” इत्यपि । २३ “उय उच्चगोय” इत्यपि । २४ “णाम च” इत्यपि, “नाम नव” इत्यपि । २५ “०न्नएक्कारं ॥” इत्यपि, “न्नमिकारे ॥” इत्यपि । २६ “मणय” इत्यपि । २७ “०माइज्जं” इत्यपि । २८ “णामस्स हवति णव एया” इत्यपि ।

उदयस्तुदीरणाए, १मामित्ताओ न विज्जइ विसेसो ।
 २मुत्तूण य ३इगयालं, सेसाणं सव्वपयडीणं ॥५३॥६७॥
 नाणंतरायदसम, दंमणनव वेअणिज्जमिच्छत्तं ।
 सम्मत्त लोभ वेआ-उआणि नवनाम उच्चं च ॥५४॥६८॥५
 ६तित्थयराहारग -विरहिआओ, अज्जेइ सव्वपयडीओ ।
 मिच्छत्तध्वेअगो सा—सणो^{१०}वि गुणवीरुसेसाओ ॥५५॥६९॥
 छायालसेसमीओ, अविरयसम्मो १^१तिआल^{१२}परिसेसा ।
 १^३तेवन्न देसविरओ, विरओ १^४सगवन्नमेसाओ ॥५६॥७०॥
 १^५इगुणट्टिमप्पमत्तो, बंधइ देवा^{१६}उअस्म इअगे वि ।
 १^७अट्टावन्नमपुव्वो, १^८छप्पन्नं वावि छव्वीमं ॥५७॥७१॥
 वावीमा एगूणं बंधइ १^९अट्टारसत्तमनिअट्टी ।
 २^०सतरस सुहुमसरागो, सायममोहो^{२१}सजोगुत्ति ॥५८॥७२॥
 एमो उ बंध^{२२}सामित्त, -ओहो^{२३}गडआड^{२४}एसु वि तहेव ।
 ओहाओ २^४साहिज्जइ, जत्थ जहा २^५पगइसव्भावो ॥५९॥७३॥
 तित्थयरदेवनिरया-^{२६}उअं च तिसु तिसु गईसु ^{२७}वोधव्वं ।
 अवसेसा २^८पयडीओ, हवन्ति सव्वासु वि गईसु ॥६०॥७४॥
 पढमकसायचउवक्कं, दंसण^{२९}तिग सत्तगा वि उवसंता,
 ३^०अविरयसम्मत्ताओ, जाव ३^१निअट्टित्ति नायव्वा ॥६१॥७५॥

१ "सामित्ताए" इत्यपि । २ "मोत्तूण" इत्यपि । ३ "ईयाल" इत्यपि, "इगुयाल" इत्यपि वा ।
 ४ "पगडीण" इत्यपि, "पगईण" इत्यपि । ५ "मणुयगइजाइतसवायग च पज्जत्तसुभगमाएज्ज । जसकिनी
 तित्थयर नामस्स हवति नवए य ॥ ॥" इतिगाथा । ६-६९ तमग ययोर्मव्येऽधिकृतया हस्तलिखितप्रतौ
 प्रक्षिप्ता दृश्यते । ६ ' तित्थगरा-' इत्यपि । ७ ' ०त्रिरिहाउ' इत्यपि, "०वज्जियाउ" इत्यपि । ८ ' पग-
 ईओ" इत्यपि, 'पगडीओ" इत्यपि वा । ९ '०वेयगो" इत्यपि । १० "वि उगुवीसेसाओ" इत्यपि "वि उगु-
 वीससेसाओ" इत्यपि, 'उ उणवीससेसाओ" इत्यपि वा । ११ "तियाल०" इत्यपि । १२ "०वरिसेस"
 इत्यपि । १३ 'तेवण्ण" इत्यपि, 'तेपन्न०" इत्यपि वा । १४ "सगवण्ण०" इत्यपि, 'सगपन्न०" इत्यपि ।
 १५ "इगुसट्टि०" इत्यपि, 'उगुसट्टि०" इत्यपि वा । १६ "०उयस्स एयरो वि" इत्यपि, "०उग च इयरो वि"
 इत्यपि वा । १७ "अट्टावण्ण०" इत्यपि । १८ "छप्पण्ण" इत्यपि । १९ 'अट्टारस त्ति अनियट्टी" इत्यपि,
 'अट्टारस त्ति अनियट्टी" इत्यपि वा । २० "सत्तर" इत्यपि । २१ "सजोगित्ति" इत्यपि । २२ 'सामित्तोहो"
 इत्यपि, "सामित्तओवो" इत्यपि । २३ "०ए वि तह चेष" इत्यपि । २४ "साहेज्जा" इत्यपि । २५ "पगडि०"
 इत्यपि । २६ "०उग च" इत्यपि, "०उय च" इत्यपि वा । २७ "वोद्धव्व" इत्यपि । २८ "पगडीओ"
 इत्यपि । २९ "तिय सत्तया वि" इत्यपि । ३० "अविरत्त०" इत्यपि । ३१ 'नियट्टी" इत्यपि ।

सत्तद् नव य पनरस, सोलस अट्टारसेव १गुणवीसा ।
 ष्णाहि दु चउवीसा, २पणवीसा वायरे जाण ॥७६॥(प्र.)
 सत्तावीसं सुहुमे, अट्टावीसं रेच मोह ४पयडीओ ।
 उवसंत ५वीअराए, उवसता हुंति नायच्चा ॥७७॥(प्र.)
 षट्ठमकसायचउक्कं, ७ट्ठो मिच्छत्तमीससम्मत्तं ।
 ८अविरयसम्मो देसे, ९पमत्ति अपमत्ति खीअंति ॥६२॥७८॥
 अनिअट्टिवायरे थ्रीण-गिद्धित्तिगनिरय १०निरिअनामाओ ।
 ११संखिज्जइमे सेसे, तप्पाउग्गाओ १२खीअंति ॥७६॥(प्र.)
 २३इत्तो हणइ कसाय-ट्टुगंपि पच्छा १४नपुंसगं इत्थी ।
 तो १५नोकसायच्छकं, १६छुहेड संजलणक्कोहंमि ॥८०॥(प्र.)
 पुरिसं कोहे कोहं, माणो माणं च छुहइ मायाए ।
 मायं च छुहइ १७लोहे, लोहं सुहमंपि तो हणइ ॥६३॥८१॥
 खीणकसायदुचरिमे, १८निदं पयलं च हणइ छउमत्थो ।
 आवरणपंतराए, छउमत्थो चरममयमि ॥८२॥(प्र.)
 देवगइसहगयाओ, दुचरमसमयभविअंमि १९खीअति ।
 सविवा २०गेअरनामा, २१नीआगोअ पि तत्थेव ॥६४॥८३॥
 अन्नयर २२वेयणीअं, मणुआ २३उअमुच्चगोअ २४नवनामे ।
 वेएइ अजोगिज्जिणो, उक्कोसजह २५न्नमिक्कारा ॥६५॥८४॥
 २६मणुअगइजाइतसचायरं च, पज्जत्तसुभग २७माइज्जं ।
 जसकित्ती तित्थयरं, २८नामस्स हवति नव एआ ॥६६॥८५॥

१ "इगुवीसा" इत्यपि, "उगुवीसा" इत्यपि, "जगुवीसा" इत्यपि । २ "पणुवीसा" इत्यपि । ३ "पि" इत्यपि । ४ "पगडीओ" इत्यपि । ५ "वीयरगे" इत्यपि । ६ "होति" इत्यपि । ७ "एत्तो" इत्यपि । ८ "अविरयदेसे विरए" इत्यपि । "अविरयदेसे विरयपमत्तऽपमत्तो य" इत्यपि वा ॥ ९ "पमत्तअपमत्त खीयति" इत्यपि । १० "तिरिय०" इत्यपि, "०तिरियणामाड" इत्यपि । ११ "सखे०" इत्यपि । १२ "खीयति" इत्यपि । १३ "एत्तो" इत्यपि । १४ "पापु ०" इत्यपि । १५ "णो०" इत्यपि । १६ "छुब्भइ" इत्यपि । १७ "लोभे लोभ" इत्यपि । १८ "निदा पयला य" इत्यपि । १९ "खीयति" इत्यपि । २० "०गेयर०" इत्यपि । २१ "नीया गोय०" इत्यपि । २२ "वेयणीय" इत्यपि, "वेयणिज्ज" इत्यपि । २३ "०उय उच्चगोय०" इत्यपि । २४ "णाम च" इत्यपि, "नाम नव" इत्यपि । २५ "०न्नएक्कारं ॥" इत्यपि, "न्नमिक्कारे ॥" इत्यपि । २६ "मणय०" इत्यपि । २७ "०माएज्जं" इत्यपि । २८ "णामस्स हवति णव एआ" इत्यपि ।

१तच्चाणुपुण्ड्रिसहिआ, तेरस भवसिद्धि२अस्स चरमंमि ।
 संतंसगुक्कोणं, ३जहन्नयं वारस हवंति ॥६७॥ ६॥
 ४मणुअगइसहगयाओ, भवखित्तविवाश्वगजिअविवागाओ ।
 ६वेअणिअन्नयरुच्चं, ७चरमसमयमि खीअति ॥६८॥८७॥
 अह ८सुइअसयल जगसिहर-१०मरुअ११निरुवम१२सहा--
 वसिद्धिसुहं ।
 १३अनिहणमव्वावाहं, तिरयणसारं अणुहवंति ॥६९॥८८॥
 दुरहिगम-निउण--परमत्थ--१४रुडरवहुभंगदिद्धिवायाओ ।
 अत्था अणुमरिअव्वा, बंधोदयसंतकम्माणं ॥७०॥८९॥
 जो जत्थ अपडिपुन्नो, अत्थो अप्पागमेण वद्वोत्ति ।
 तं खमिउण बहु१५सुआ, पूरेउणं परि१६कहंतु ॥७१॥९०॥
 गाहग्गं १७सयरीए, चंदमहत्तरमयाणुसारीए ।
 १८टीगाइनिअमिआणं, एग्गुणा होइ १९नउईओ ॥९१॥(प्र.)

१ अस्या गाथाया स्थाने हस्तलिखितप्रतौ निम्ना गाथा दृश्यते । 'ता एव द्रुति नेया वारस भव-
 सिद्धिगस्स चरमते । सतस्स उ उक्कोस जहन्न एककारस हवति । ८८॥' इति । २ "व्यम्स" इत्यपि,
 'वंगस्स' इत्यपि वा । ३ "जहन्नग" इत्यपि । ४ "मणुयं" इत्यपि । ५ 'वंगजियत्रिवागाओ ।' इत्यपि,
 "वंगजीववागुत्ति ।" इत्यपि, "वंगजीववागत्ति" इत्यपि, "हवति भवजोवपावकम्मसा" इत्यपि । ६
 "वेयणियं" इत्यपि । ७ "चरिमे समयम्मि खीयति ॥६८॥" इत्यपि, "च चरिममवियस्स खीयति ॥६९॥
 ६८॥" इत्यपि, "अचरिमममयम्मि खीयति ॥६८॥" इत्यपि । ८ "सुइयं" इत्यपि "सुइरसइजलमसिहर ।
 ९ "जयं" इत्यपि । १० "मरुयं" इत्यपि । ११ 'गिरुवम' इत्यपि । १२ "वसमावं" इत्यपि । १३
 "अणिं" इत्यपि । १४ "रुडलं" इत्यपि । १५ "वसुया" इत्यपि । १६ "कहितु" इत्यपि । १७ सत्तरिए"
 इत्यपि, "सतरिए" इत्यपि वा । १८ "टीकाए नियमियाण" इत्यपि, "टिक्काए णियमियाण" इत्यपि ।
 १९ "णउईओ" इत्यपि ।



* सप्ततिकाभाष्यम् *

णमिऊण महावीरं कम्मदृपरूवणं करिस्सामि ।
 वंधोदयसतेहिं सत्तरियाच्चुन्निअणुसारा ॥१॥
 णाणतरायदंसणवरणे वेयणियआउगोयाणं ।
 सुगमिच्छि क्किपि दसिय सेमपि समासओ वोच्छ ॥२॥
 णाणंतरायदसगं वंधहि मिच्छाउ जाव सुहुमोत्ति ।
 उदसंत जा खीणो आवरणं दंसणस्सित्तो ॥३॥
 जा सायणु नव^१बंधी मिच्छा उवरि छवंधि जाऽपुव्वो ।
 अप्पुव्वा जा सुहुमो निद्दादुगविरहिचउवंधी ॥४॥
 मिच्छा जा उवसंतं नवसंतं उदयचारिपणगं वा ।
 खवगाण वि नवमन्तं जा चायर^२भागमंखेज्जो ॥५॥
 उवरिं खीणदुवरिमं जा छ उ चउ संति चरिमि खीणस्स ।
 उदए पुण खवगाणं चत्तारि उ दंसणावणे ॥६॥
 चउपणगं वा उदए खीणदुचरिमं तु जाव अन्ने उ ।
 भणियं दंसणावरणं संपइ पभणामि वेयणियं ॥७॥
 जाव पमत्तु असायं सायं जोगंतं ^३जयहि मिच्छादी ।
 अस्सायं सायं वा उदए दो संति भंगचऊ ॥८॥
 वंधविणा उ अजोगी जाव दुचरिमं दुसंति ते बुदया ।
 चरिमे वि ते वि उदया उदयगयं ^४संति भंगचऊ ॥९॥
 आउस्सेगं वंधे एगं उदयम्मि संति दो हुंति ।
 जा वंधो उदएगं दो संतं वंधविरमम्मि ॥१०॥
 एवं नरतिरियाणं दुसंतं अड्डुभंग चउगइसु ।
 आउचए ^५जोगाणं नेरइयसुराण पुण एवं ॥११॥
 भंगचऊ पत्तेयं जं ते वंधंति आउदुगमेव ।
 सव्वेसिसुदयसत एगेगं वंधपुच्चिं तु ॥१२॥

१ "बंधहिं" इत्यपि । २ "वधा" इत्यपि । ३ 'भागुसखिज्जो इत्यपि मुद्रितप्रतौ । ४ "जयहिं" इत्यपि ।
 ५ "सत" इत्यपि । ६ "जुगण" इत्यपि ।

(गतिः समाप्ता)

अडुच्छाहिगवीसा सोलस वीमं च वार छा दोसु ।
 दो चउसु तीसु १एककं मिच्छाडसु अउगे भंगा ॥१३॥
 गुणठाणसु आउस्स भगा इति ॥
 आऊ अडवीसविहं भणिय पभणामि २ संपर्य गोयं ।
 वंधोदयसंतेहिं गीर्यं तिरियाण मिच्छाण ॥१४॥
 ते वि हु तेऊ वाऊ तत्तो वा आगया पुढविमाई ।
 जाव न उच्चागोयं वंधहि तावेस भंगो उ ॥१५॥
 दो संत नीयबंधं नीउच्चं उदइ सरसणो जाव ।
 उच्चं वंधं नीयं च वेयए जाव देसोत्ति ॥१६॥
 दो ३संतमुच्चबंधं उच्चं उदयम्मि जाव सुहुमोत्ति ।
 दो संतमुच्चमुदयं उवसंताओ अजोगंतं ॥१७॥
 उदमंतं उच्चं चिय अजोगिचरिमम्मि सत्तमो भंगो ।
 भणियं गोयं संपड भणामि मोहं समासेणं ॥१८॥
 वार्वास ४एगवीसा सत्तरसं तेरसव नव पंच ।
 चउत्तिगदुगं च एगं वंधडाणाणि दस मोहे ॥१९॥
 मिच्छं कसायसोलस भयं दुगळा तिवेयअन्नयरं ।
 हासरई ड्यरे वा छ भंग मिच्छरस वावीसा ॥२०॥
 मिच्छनपुंसगरहिया इगवीसा सासणस्स चउभंगा ।
 अणइत्थिरहिय सत्तरस दो भंगा मीसअजयाण ॥२१॥
 दुतियकसायविहूणा तेरस देसम्मि नव य विरयम्मि ।
 दो दो भंगा नवरं अपमत्ताईण एगेगो ॥२२॥
 ज ते हासरइदुगं ५बंधहि नन्नं तु ६जाव अप्पुवो ।
 हासरइभयदुगु छारहिया पंचेव ते हुंति ॥२३॥
 तो पुकोहाईणं कमेण वोच्छेइ सेसठाणाइं ।
 अनियट्टि पंच वंधइ न सेस उदयं च ७एत्तो य ॥२४॥
 एको ८व दो ९व चउरो १०एत्तो एकाहिया दसुकोसा ।
 ओहेण मोहणिज्जे उदयडाणाणि नव हुंति ॥२५॥

१ "इकक" इत्यपि । २ "सपइ" इत्यपि । ३ "सत उ" इत्यपि । ४ "इकवीसा सत्तरसा" इत्यपि ।
 ५ "मन्नयर" इत्यपि । ६ "बंधहि" इत्यपि । ७ "जाइ" इत्यपि । ८-११ "इत्तो" इत्यपि । ९-१० "य"
 इत्यपि । ११ "इत्तो इक्काहिया" इत्यपि ।

चउ कोहाइ अणाई दुजुयल हासरइअरइसोगाणं ।
वेयतियं एएहि भंगा चउवीसतिजनामा ॥२६॥

सजाकरण

अणविणु तिन्नि कसाया जुयलन्नयर तिवेयअन्नयरं ।
मिच्छ च सत्त उ चउ मिच्छे भंगा तिजा हुंति ॥२७॥
चउवीस संतु सम्मी मिच्छं गंतुं अणतचयमाणो
वधावलिआ पढमा तत्थुदओ नत्थि णंताणं ॥२८॥
भयगुच्छअणंताणं एगयरे अट्ट नव य पुण हुंति ।
दुगजोगतिणहमेगयरखिवणि-तिगुणा ३ तिजा दुसुवि ॥२९॥
दस तिण्हं पि हु खिवणे तिजभंगा २४ अट्ट सच्चि हुंति तिजा ।
॥२४॥८॥

सत्तट्टनवा एवं सासणमिस्से य नवरं तु ॥३०॥
मिच्छाठाणेणंताणुबंधे मिस्सं च खिवसु जहसंखं ।
चउ चउ तिजा य^१ दीसु वि मिच्छविणासम्मि छक्कुदओ ॥३१॥
भयगुच्छवेयगाणेगयरे सग ७ अट्ट ८ एगदुगखिवणे ।
तिण्हं दुगजोगाणं^२ ति३ तिज २४ नव तिहिं वि एगतिजो ॥३२॥
सव्वट्ट तिजा २४ । एवं विइयकसाएहिं विरहिया देसे ।
पंचाई अट्ट^३ता उदया^३ सव्वेऽट्ट तिज हुंति ॥३३॥
तइयकसायविहूणा विरए चउराइ सत्तगता उ ।
उदया^५ सव्वट्ट तिजा ४।२८ तत्थ उ सम्मे विसेसो यं ॥३४॥
जा वेयगसम्मघरा उदया ताणं तु हुंति न^४उ पढमा ।
खइयगउवसमियाणं चउत्थउदया नवि य हुंति ॥३५॥
पणवंधि वार भंगा कसायवेएहिं दुन्ह उदयम्मि ।
पंचाओ य चउक्क^६ संक्रममाणस्स^६ ते चन्ने ॥३६॥
जावइया^७ वज्झंती तस्समभंगा य तत्थ य हवंति ।
एगो अवंधगस्स उ एगारस सच्चि एगुदए ॥३७॥
चउरो जईउ देमाउ पंच अजयाउ छाउ जाऽपुव्वा ।
सत्तापमत्त देमट्ट नव उ अजयंत मिच्छाउ ॥३८॥

१ “दो वि हु मिस्स विणा” इत्यपि । २ “ति ति तिज नव तिहिं वि” इत्यपि । ३ “सव्व-ऽट्ट” इत्यपि । ४ “सव्वेऽट्ट” इत्यपि । ५ “हु” इत्यपि । ६ “ते वऽन्ने” इत्यपि । ७ “वधती इत्यपि ।

दस मिच्छे अनियद्दी वेयड दो एगु वा सहसु एगं ।
 उदया गुणैसु एवं भंगविगप्पा इमे तेसु ॥३९॥
 अड्ड य चउचउ चउरड्डगा य चउरो य हुंति तिज २४ नामा ४
 चउतीस भंग ८ एगो ९ सुहुमंता हुंति जहमंखं ॥४०॥
 उदओ सम्मत्तो ॥

अट्टग सत्तग छच्चउ' तियदुगएक्काहिया भवे वीसा ।
 तेरम वारेकारम एत्तो पंचाइ एगूणा ॥४१॥
 मोहो सव्वो अडवीस मम्मि उव्वलिड होइ सगवीसा ।
 मिस्सुव्वलिए छव्वीस अणाडमिच्छस्स वा होइ ॥४२॥
 जहसंखं अणचउ ४ मिच्छा^१मिस्स २ सम्मं च अड्ड य कसाया ८॥
 नपु १२^२ मित्थिहासछप्पु^३ खविए मोहाउ २८ जा चउरो ॥४३॥
^४एक्के कम्मि य खीणे संजलणे सेस संत जावेगो ।

गुणास्थानेषु सत्तास्थानान्याह—

मिच्छे जा टव्वीसा अट्टवीसा य सासाणे ॥४४॥
 चउवीसंता छव्वीसवज्जिया मिस्मि हुंति मंताउ ।
 अडचउतिदुगहिया वीसा अजयाडचउसु^१ पि ॥४५॥
 तो अडचउएगहिया वीसा^२ उवसंत जाव सव्वेसिं ।
 तेराड खचगि वायरि एगंता^३ एगु सुहुमम्मि ॥४६॥
 अडवीसमंतकम्मो सम्मं उव्वलिय जाड मीसम्मि ।
 मिच्छादिद्दी एवं सत्तावीसा हवड मीसे ॥४७॥

साप्रत गुणास्थानविषयबन्धोदयेषु सत्तास्थानान्याह—

जे गुणठाणगसंता ते ते ताणं पि वंधउदएसु ।
^१मोत्तु^२ वायरखवगो अणसम्मविसेसिउदए वि ॥४८॥
^३इयवीमाई चउरो पणचइ चउचइ इगार पण चारि ।
 तिब्बंधाडसु संतं वंधसमं एगअहियं च ॥४९॥

१ "तिगदुगएगाहिया" इत्यपि । २ "उव्वलिय" इत्यपि । ३ "मीसं" इत्यपि । ४ "इत्थि"
 इत्यपि । ५ "इक्किक्कम्मि उ" इत्यपि । ६ "उवसतु" इत्यपि । ७ "एग" इत्यपि । ८ "मिच्छदिं"
 इत्यपि । ९ "अणमम्मविसेसुदए वायरखवग च मुत्तणा ॥४८॥" इति सुद्धितप्रतौ पाठान्तरम् । १० इय
 तायाद्वयी हस्तलिखितप्रतौ, सुद्धितप्रतौ पुनरिथं दृश्यते । 'मिच्छुदए अणरहिए अट्टवीसे च हुति
 सतम्मि । सम्मजुइ उदइ इगवीस नत्थि तिदुवीससम्मिदिणा ॥४९॥ इगवीमाई चउरो पणचइ चउचइ
 इगार पण चारि । तियववाइसु संत वंधसम एगअहिय च ॥५०॥ इति ।

सम्मज्जुय उदइ इगवीस नत्थि तिट्ठीम नत्थि विणा ।
 मिच्छुदए अणरहिए अट्ठावीसेव मत्तम्मि ॥५०॥
 पुं चयनपित्थिमंते जुगवं थक्के अवेइ एक्कुदओ ।
 चउवध संतिगारस जुगवं सत्तक्खए चउरो । ५१॥
 पंडगपट्टवणेयं एवं थीए वि नवरि नपि खीणे ।
 १ता इत्थिउदयसंतं पुवंधं जुगवुच्छेएइ ॥५२॥
 पुरिसो पट्टवगो पुण सत्विगवीमाइफासए कमसो ।
 हासछगखवणकाले पुवंधुदया परं थक्का ॥५३॥
 सम्म विणा उदएसुं संतविभागो उ अजयमाईणं ।
 चउरट्टवीस उवसत्तसम्मि खीणम्मि इगवीसा ॥५४॥

जीवस्थानेषु बन्धादीनाह —

अट्टसु पंचसु एगे जियठाणे एग दुन्नि दस वंधा ।
 तिग चउ नव उदयम्मि उ तिग तिग पन्नरस संतम्मि ॥५५॥

गतिपु वधादीनाह —

चधट्ठाणा तिन्नि उ पढमा सुरनारएसु चउ तिरिसु ।
 सुरनारयाण छाई तिरि पंचाई दसंतुदया ॥५६॥
 इगवीसंता तेवीसवज्जिया छावि संति तिसु गइसु ।
 मणुयगईए सव्वे बंधोदयसंतठाणाणि ॥५७॥

मोहो सम्मत्तो ॥

तेवीसपन्नवीसा छवीसा अट्टवीस शुणतीसा ।
 १तीसेगतीसमेगं बंधट्ठाणाणि नामस्स ॥५८॥

वन्नचउतेयकम्मा निम्माणुवघायमगुरुलहुयं च ।
 नव धुवबंधा एए सव्वत्थ मिलंति जा बंधो ॥५९॥
 थिरसुभर सुस्सरइ सुखगइ४ सुभग५ जसा६ देय७ सियरसत्तदुगा
 संघयणा ६ मंठाणा छट्ठा-पिंडा हवंतेए ॥६०॥

३नवगाविरुद्धगहणे तज्जा भंगा हवति सव्वत्थ ।

छायालसयाणि अट्टत्तराणि अविसेसिए धुवओ ॥६१॥

१ "तो इत्थिउदय सन्त पुवध जुगव छेएइ" इति पाठो मुद्रितप्रतो दृश्यते । किन्तु स छन्दमङ्गल-
 दिहेतुना ऽऽशुद्ध प्रतिभाति । २ "तिसिक्कतिसमेग" इति मुद्रितप्रतौ पाठोऽस्ति, किन्तु सोऽशुद्धः ।
 ३ 'नवए वि० इत्यपि ।

जत्थ य अट्ट य भंगा तत्थ य थिरसुभर जसेहिं ३ सियरेहिं ३ ।
उट्ठिति संकरहिया आयवउज्जोय १ दुग्गि दुग्गुणा ॥६२॥

वधस्थानानि विवरयन्नाहगाथादशकेन-

नियगइदुगनियजाई उरलं हुंडं च थावरं अधिरं ।
अणएज्ज असुभदूभग अपज्जनवधुवय अजसं च ॥६३॥
पत्तेयदुगेगयरं सुहुमदुगेगयरिगंदितेवीसा ।
१ एगिदियाइतिरिनर वंधहिं मिच्छेण चउभंगा ॥६४॥
सोसासपराधाए खित्ते पणुवीसिगिदिपज्जस्स ।
२ पत्तयसुहुमसुभथिर जसज्जुयलिहिं वीस भंगाओ ॥६५॥

विरुद्धपरित्यागेन ज्ञेया ।

नेरइयवज्ज मिच्छो वंधइ एसा वि होइ छव्वीसा ।
उज्जोयआयवाणं एगयरे भंगसोलसगं ॥६६॥
साहारणसुहमेहिं उज्जोयजसायवा न वज्जंति ।
अपजत्तेणं च तहा पमत्थपरियत्तमाणीओ ॥६७॥
३ एगिदिवज्जतिरिमणुअपज्ज पणवीस एत्थ पणभंगा ।
तसवायरउरलदुगं सेवट्टं तहय पत्तेयं ॥६८॥
४ तेवीससेससहियं नरतिरिएगिदियाइ वंधंति ।
नारयअडवीसेवं वंधहिं तिरिमणुयपंचिदी ॥६९॥

मा एव-

नियगइदुगनियजाईवायरपरधाय ५ पज्जपत्तेयं ।
नवधुव सासु तसं चिय वेउच्चिदुगं च हुंडं च ॥७०॥
अपसत्थपिंडसहिया सघयणं ६ मोत्तु मिच्छ वंधेइ ।
भंग विणा मिच्छाईपुच्चंता सा वि सुरजोग्गा ॥७१॥
नवरं भगा अट्ट उ समचउरंसं पसत्थपिंडं च ।
सा तित्थि इग्गुणतीसा ७ वंधहिं अजयाइणो अहवा ॥७२॥

१ "दुग्गि" इत्यपि ह० प्रती । २ एगिदिया य तिरि०" इत्यपि । ह० प्रती ३ "वायरपत्तेयथिरासुभ-
ज्जसि सियरेहिं वीसाम्ना ॥६५॥" इत्यपि मुद्रितप्रती पाठान्तरम् । ४ 'वधति' इति सु० प्रती । ५ "अपि-
ज्जत्तविगलतिरिमणुयज्जुगपणवीसइत्य पण भगा" इति मुद्रितप्रती पाठान्तरम् । ६ "सेसतेवीस०" इति
मुद्रितप्रती पाठोऽस्ति पर तु स छन्दमङ्गकारणेणा-ऽशुद्धो भाति । ७ "पज्जत्त०" इति तु मुद्रितप्रती
पाठोऽस्ति, किन्तु स न सम्यक्, छन्दोमङ्गत्वात् । ८ "मुत्तु मिच्छु" इत्यपि । ९ 'वधइ' इति सु० प्रती ।

नियमद्वुभनियजाई उरलदुगं वायरं पराघायं ।
 पत्तेय पज्ज नव ध्रुव नवपिंडा उ तमं सामं ॥७३॥
 नरतिरिय ^१जोगमिच्छाड ^२दोन्नि वंधंति पिंडजा भंगा ।
 विगलद्वुभंग हुंडं ^३सेवद्वु हीणपिंडिल्ला ।७४॥
 मंधयणा मंठाणा छावि हु मिच्छाण हुंति वंधम्मि ।
^४सेवद्वुहुंडविरहे पण सामणि तयणुभंगा उ ॥७५॥
^५पढमं सुरनेरइया मिस्साडजया नराण पाउगं ।
 अडभंग ^६मन्थपिडा एस त्रिसेसो इगुणतीसे ॥७६॥
 नरइगुणतीस तीसा तित्थेणं होड ^७अजउ वंधेड ।
 अहवु ^८ज्जोयण तीसा तिरि गुण तीसाड तह सव्वं ॥७७॥
 अहवा सुरअडवीमाऽऽ ^९हारगदुजुया अभग वरतीसा ।
 तित्थेणं इगतीसा ^{१०}बंधहि अपमत्तअप्पुव्वा ॥७८॥
 जसक्कित्तिमपुव्वाई ^{११}बंधहि उवमतमाड न उ नामं ।
 इय नामबंधं ^{१२}ठाणाड भंगमंखा इमा तेसु ॥७९॥
 चउ ^{१३}पणवीमा ^{१४}सोलस ^{१५}नवध बाणउई सया य अडयाला ।
^{१६}इगयाउत्तरछायालसया ^{१७}एके कबंधविही ॥८०॥

गुणस्थानेषु वन्वस्थानान्याह-

मिच्छो छ उ तीसता सासणु ^१अजया य तिन्नि तीसता ।
 टेमपमत्ता मीमा बंधहि वीसा नवद्वुहिया ॥८१॥
 अडवीमाई चउगे वंधड अपमत्तु पंच अप्पुव्वो ।
 एगमनियद्विसुहुमा सेसा नामं न वंधंति ॥८२॥

जीवस्थानेषु वन्वस्थानान्याह-

एगेगतीम सन्नी पज्जो अडवीस पज्जु अमणो वि ।
 सेमा उ पंचठाणा ^१बंधड सन्वे वि जियठाणा ॥८३॥

१ "जुगमं" इत्यपि २ "दुन्नि" इत्यपि । ३ "सेवद्वु" इत्यपि । ४ "सेवद्वु" इत्यपि । ५ वधति
 सुरनेरइया मिस्सा अजया य मणुयराउग्गा ।" इति सुद्धितप्रती पाठान्तरम् । ६ "पसत्थं" इति सु
 प्रती । ७ "अजय" इति सु प्रती । ८ "ज्जोडणं" इत्यपि सु प्रती । ९ "तीसाए" इत्यपि सु प्रती
 १० "हारदुगजुया" इत्यपि सु प्रती । ११-१२ "बंधहि" इत्यपि सु । १३ "ठाणाई" इत्यपि सु
 १४ "पणु" इत्यपि सु । १५ "इगयाउत्तरं" इत्यपि सु । १६ "इक्किक्क" इत्यपि सु । १७ "अजया"
 इत्यपि सु । १८ "बंधहि" इत्यपि सु ।

गतिषु तान्याह-

मणुएसु सवि वंधा पणछन्नववीस तीस देवेसु ।
तिरिएसु छ ६ तीसंता नरए गुणतीसतीसा य ॥८४॥
षणयाल सन्नि नरि सत्ततीस तेरस सहस्स नव य सया ।
तिरि पज्जि अमणि मिच्छे ते छच्चीसा असम्मजया ॥८५॥
ते सतरसहिय १जियवारसेसु अट्टसय तेरस सहस्सा ।
छप्पन्नहिय सुरेसु २वत्तीसहिया य ते नरए ॥८६॥
छन्नवडसयट्टहिया सोलस वत्तीस सोल सोलस य ।
चउ पंच एगभेगं साणाइसु भंग जा सुहुमो ॥८७॥

॥ इति जीवस्थानादिषु भङ्गाः ॥

-॥ बंधो समत्तो ॥

वीसिगवीसा चउवीसि ३गाउ इगतीसमंत एगहिया ।
उदयट्टाणाणि भवे नव अट्ट य हुंति नामस्स ॥८८॥
३तेयाकम्मागुरुलहु थिरसुभजुयलाणि निम्म वन्नचउ ।
एया वारस पयडी धुवोदया हुंति नामस्स ॥८९॥
४सघयणा ६संठाणा ६सुभगं १आदेय १जस १ति ३जुयलाणि ।
२रामीगुणेण भगा अडसीया दो सया हुंति ॥९०॥ करण ॥
षज्जत्तजसादेयं सूभगजुयलेहि ५ नव य भंगाओ ।
अपसत्थेगु अपज्जे पज्जट्ट उ करणजवडिल्लं ॥९१॥
६साहारणे ण आयवु-जोयजसायव अपज्जसुहुमेहिं ।
साहारुज्जोयजसायवे य नोदिति सुहुमतसे ॥९२॥
उदयस्थानानि विवरयन्नाह त्रिंशद्भिर्गाथाभिः-
नियगइदुगनियजाई थावरनादेय ७दुहयधुवपयडी ।
सुहुभापज्जजसाणं दुगदुग ८एगयरि पणभंगा ॥९३॥
थावरइगवीसेसा अवणिय अणुपुवि ९घत्तियं एयं ।
पत्तेयदुगेगयरं हुंडं उरलं १०उवघायं, ॥९४॥

१. "०वारसजिएसु" इत्यपि सु० । २ "०गाइ०" इत्यपि । ३ "इय गाथा हस्तलिखितप्रती नास्ति ।
४ सघयणं सठाण सूभगआ०" इति सु प्रती । ५ "रासिगुणणे" इति सु प्रती । ६ "साहारणे न" इति
सु० प्रती । ७ "दुभग०" इत्यपि सु । ८ "एगयरे य" इति ह प्रती । ९ "घत्तिय" इत्यपि सु प्रती ।
१० "च उवघाय" इत्यपि सु प्रती ।

दस भंगा १ उरलम्मी विउव्विपज्जेगु २ जाण चउवीसे ।
 ३ बायरविउव्विदेहे पत्तेयं ४ वित्थ य विसेसो ॥१५॥
 अज्जचउवीस पणुवीस होइ परघाय सत्त तहिं भंगा ।
 पत्तेय १ सुहुमरजसजुयलि २ छाओं एको य वेउव्वे ॥१६॥
 उसासे छव्वीसा तत्थ वि ते सत्त अहव ३ उज्जोये ॥४॥
 अहवा वि आयवेणं २ चउरो ४ दोर गिदि ५ छव्वीसा ॥१७॥
 सा व्वीसमज्जे आयवउज्जोयएगयरि छूटे ।
 सत्तावीस छ ६ भंगा एगिदियभंगवायालं ॥१८॥
 जा इगवीसा एगिदियस्स विगलाण होइ सा चेव ।
 विंकेतु तसवायरं चिय पाठो भंगा य ७ तिन्नेवं ॥१९॥
 अपसत्थपज्जभंगो एगो नरएसु अट्ट वि सुरेसु ।
 नव तिरिनरेसु नवडि भंग सेसो उ विगलकमो ११००॥
 विगलइग १ वीसि अणुपुव्विविहिए खिवसु हुंडसेवट्टे ।
 उरलदुगं उवघायं पत्तेयं चेव छव्वीसा ॥१०१॥
 तं भंगतियं सा वि हु दुखगइ १ परघायखिवणि अडवीसा १
 भंगा य १ दोन्नि इत्थं अपज्जभंगा जओ नत्थि ॥१०२॥
 उसासुज्जोयाणेदगयरे गुणतीस भंग चत्तारि ।
 सासगुणतीसतीसा सुरदुगउज्जोय एगयरे ॥१०३॥
 १ छभंगा सर तीसा इगतीसोज्जोयएण भंगचऊ ।
 चेइंदियवावीसा छावट्टी सव्वविगलाणं ॥१०४॥
 सगलाणं छव्वीसा एवं नवरं तु रासिजा भंगा २८८ ।
 अप्पज्जभंग अप्पसत्थजुत्त १ अडवीस पुण एवं ॥१०५॥
 खगईदुगएगयरे परघाए खित्ति रासिजा २८८ दुगुणा ।
 रासिज २८८ भंग चउगुणा ४ गुणतीसे सासि जोए वा ॥१०६॥
 उसासे गुणतीसे सरदुगउज्जोयएगयरखेवे ।

१ "उरलम्मी उ" इत्यपि सु । २ "जाणि" इति ह प्रती । ३ "बायरह" इति सु । ४ "इत्थं" इत्यपि सु । ५ "छा इको उ" इति सु । ६ "उज्जोय" इत्यपि सु । ७ "छव्वीसे" इत्यपि । ८ "तिन्नेवं" इत्यपि सु । ९ "ववीस" इति सु । १० "परिघा०" इति सु । ११ "दुन्नि" इति सु । १२ "छ य" इत्यपि सु ।

^१छग्गुणरासिजभंगा २८८ तीसाड पुणो वि सरतीसा ॥१०७॥
 उज्जोएणिगतीसा चउग्गुणा ४ रासिजा उ उदयसा ।
 छलहियग्गुणवन्नसया भंगा पंचिदितिरियाणं ॥१०८॥
 उज्जोयरहियतिरिविहि सामन्नराण अत्थि सच्चो वि ।
 दुग्गहियछच्चीससया भंगाणं ताण तो हुंति ॥१०९॥
 वेउच्चियपणुवांमा वेउच्चिदुगं समंतचउरंसं ।
 पत्तेय उवघायं सिग्गवीसणुपुच्चिरहिया य ॥११०॥
 अडभंग सत्तवीस वि सुखगइ ^२परघायसंजुय तहेव । -
 सासुज्जोएगयरे अडवीस दु अट्ट २।८ जवडिल्ला ॥१११॥
 उज्जोयसूमरेगयारि सास अडवीस होड गुणतीसा ।
 जवडिल्ला दो य अठा उज्जोए तीस जवडट्टा ॥११२॥
 तिरि छप्पन्नं भंगा नरेसु एमेव भंगपणतीमा ।
 जं उज्जोओ जईणं तहिं ^३पसत्था य जवडिल्ला ॥११३॥
 आहारमंजयाण वि एवं आहारगं तहिं वच्चं ।
^४एक्केको वि य भगा सच्चत्थ वि सत्तमिलिया वि ॥११४॥
 नरगडपणिदिजाई तसवायरपज्जसुभग्गधुवपयडी ।
 आदेयजसा वीमं तित्थेणिग्गवीस केवल्लिणो ॥११५॥
 उरलदुगं सट्टाणं ^५पत्तेगुवघायवज्जरिसहं च ।
 मह वीसाए छवीसा सत्तावीसा य तित्थेणं ॥११६॥
 स च्चेव य छवीसा परघाउस्सासगडसरंगयरं ।
 पंक्खिविय भवे तीसा एगत्तीसा य तित्थेण ॥११७॥
 केवल्लिणो तीसुदए सरंमि रुद्धे भवे इग्गुणतीमा ।
 अडवीम सामरोहे अहवा तित्थयर इगतीसा ॥११८॥
 सररोहि तीम सासम्मि गूणिया एवमट्ट मणुयगई ।
 तमसुहयपज्जवायरपणिदिया-SS ^६एज्जयजसेहिं ॥११९॥
 नव तित्थिण केवल्लिणो सच्चे भंगट्ट पुच्चगहरोण ।
 मणुयाण सच्चि भंगा छवीससया उ वावन्ना ॥१२०॥

१ “छग्गुणा” इत्यपि सु । २ “परिघाय०” इति ह प्रती । ३ “च सत्था” इति ह । ४ “इक्किको
 च्चिय” इत्यपि सु । ५ “पत्तेयु०” इत्यपि सु । ६ “उडज०” इत्यपि सु ।

नियएगवीसजुत्ता विउच्चितिरिसरिस हुंति देवुदया ।
 चउमट्टि देवभंगा अपसत्था पंच नरएसु ॥१२१॥
 उदरेपु भङ्गसख्या ॥
 इग वेयालिकारस तेत्तीसा छस्सयाणि तेत्तीसा ।
 चारस सत्तरससयाणहिगाणि विपंचसीईहिं ॥१२२॥
 अउणत्तीसेगारमसयहियसत्तरसपंचसट्टीहिं ।
 एक्केकगं च वीमादुदुदयंतेसु उदयविही ॥१२३॥

उदयस्थान	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
भङ्ग	१	४२	११	२३	६००	३३	१२०२	१७८५	०६१०	११६५	१	१

बन्धस्थानेषु उदयानाह-

इगतीमता इगवीसमाइणो सच्चि उदय विज्जंति ।
 तीमंतबंधगेषु चउवीसा मोत्तु अडवीसे ॥१२४॥
 गुणतीमतीम उदया इगतीसे एगबंधि तीसेव ।
 चउवीसा पणवीसा मोत्तुमबंधम्मि दस सेसा ॥१२५॥
 साप्रत सर्वोदयभङ्गसख्यापूर्वक सर्वस्थानेषु समवितोदयभङ्ग-
 सख्यामाह-
 सत्तरी सयाइं एक्काणउयाइं सच्चभंगाणं ७७९१ ।
 जइं सुरइं नरयपविहूणा तेवीसे बंधि सेसुदया ७७०४ ॥१२६॥
 नारयपजइं विहूणा पुण छवीसे य पन्नवीसेय ७७६८ ।
 केवलिरहियाउदया गुणतीसे तीसबंधे य ७७८३ ॥१२७॥
 पन्नमया वासीया ५०८२ अडवीसे बंधि जमिह तिरिउरला ।
 देहेणापडिपुन्ना पढमे संघयणसंठाणे ॥१२८॥
 अड्यालं भंगसयं १४८ इगतीसे एगबंधि दुगसयरी ७२ ।
 अट्टाणवई मव्हे अवधए हुंति उदयसा ॥१२९॥

॥ इति बन्धस्थानेषु उदयभङ्गसख्या ॥

साप्रत गुणस्थानेषु उदयस्थानान्याह-

१ "मुत्त" इत्यपि सु । २ "उदयो" इत्यपि ह० । ३ "पणु" इत्यपि सु । ४ "मुत्त" इत्यपि सु । ५ "नरयजविहूणा पुण छवीसे पन्नवीसवधेय" । इत्यपि मुद्रितप्रतौ । ६ "वासीती" इत्यपि सु ।

१ छग्गुणरासिजभंगा २८८ तीसाड पुणो वि सरतीसा ॥१०७॥
 उज्जोएणिगतीसा चउग्गुणा ४ रासिजा उ उदयसा ।
 छलहियगुणवन्नसया भंगा पंचिदितिरियार्ण ॥१०८॥
 उज्जोयरहियतिरिविहि सामन्नराण अत्थि सव्वो वि ।
 दुग्गहियछव्वीससया भंगाणं ताण तो हुंति ॥१०९॥
 वेउव्वियपणुवीसा वेउव्विदुगं समंतचउरंसं ।
 पत्तेयं उवघायं सिगवीसरुपुव्विरहिया य ॥११०॥
 अडभंग सत्तवीस वि सुखगइ ३ परघायसंजुय तहेव ।
 सासुज्जोएगयरे अडवीस दु अट्ट २।८ जवडिल्ला ॥१११॥
 उज्जोयसूमरेगयरि सास अडवीस होइ गुणतीसा ।
 जवडिल्ला दो य अठा उज्जोए तीस जवडट्टा ॥११२॥
 तिरि छप्पन्नं भंगा नरेसु एमेव भंगपणतीमा ।
 जं उज्जोओ जईर्णं तहि ३ पसत्था य जवडिल्ला ॥११३॥
 आहारसंजयाण वि एवं आहारगं तहि वच्चं ।
 ४ एवकेको वि य भंगा सच्चत्थ वि सत्तमिलिया वि ॥११४॥
 नरगडपणिदिजाई तसवायरपज्जसुभगधुवपयडी ।
 आदेयजसा वीमं तित्थेणिगवीस केवल्लिणो ॥११५॥
 उरलदुगं सट्टाणं ५ पत्तेगुवघायवज्जरिसहं च ।
 मह वीसाए छवीसा सत्तावीसा य तित्थेणं ॥११६॥
 स च्चेव य छव्वीमा परघाउस्सासगइसररेगयरं ।
 पक्खिविय भवे तीसा एगत्तीसा य तित्थेण ॥११७॥
 केवल्लिणो तीसुदए सरंमि रुद्धे भवे इग्गुणतीमा ।
 अडवीम सामरोहे अहवा तित्थयर इगतीसा ॥११८॥
 सररोहि तीम सासम्मि गूणिया एवमट्ट मणुयगई ।
 तमसुहयपज्जवायरपणिदिया-५५ ६ एज्जयजसेहि ॥११९॥
 नव तित्थिण केवल्लिणो सव्वे भंगट्ट पुव्वगहणेण ।
 मणुयाण सव्वि भंगा छव्वीससया उ वावन्ना ॥१२०॥

१ "छग्गुणा" इत्यपि सु । २ "परिघाय" इति ह प्रती । ३ "च सत्था" इति ह । ४ "इक्कि
 च्चिय" इत्यपि सु । ५ "पत्तेयु" इत्यपि सु । ६ "उड्डज" इत्यपि सु ।

नियण्गवीसत्तुत्ता विउच्चितिरिसरिस हुंति देवुदया ।
 चउमट्टि देवभंगा अपमत्था पंच नरएसु ॥१२१॥
 उदयेषु भङ्गसख्या ॥
 इग वेयालिकारस तेत्तीमा छस्सयाणि तेत्तीसा ।
 वारम सत्तरससयाणहिगाणि विपंचसीईहि ॥१२२॥
 अउणत्तीसेगारमसयहियसत्तरसपचसट्टीहि ।
 एककेकगं च वीमादट्टुदयंतेसु उदयविही ॥१२३॥

उदयस्थान	२०	२१	२४	५	२६	७	२८	२६	३०	३१	६	८
भङ्ग	१	४२	११	२३	६००	३३	१२०२	१७२५	०६१०	११६५	१	१

बन्धस्थानेषु उदयानाह-

इगतीमता इगवीसमाङ्गो सच्चि उदय विज्जंति ।
 तीमंतबंधेसु चउवीसा मोत्तु अडवीसे ॥१२४॥
 गुणतीमतीस उदया इगतीसे एगबंधि तीसेव ।
 चउवीमा पणवीसा मोत्तुमबंधम्मि दस सेसा ॥१२५॥
 साप्रत सर्वोदयमङ्गसख्यापूर्वक सर्वस्थानेषु समवितोदयमङ्ग-
 सख्यामाह-
 सत्तरी सयाइं एकाणउयाइं सच्चभंगाणं ७७९१ ।
 जड^१ ८सुर^२ ६^३ नरय^४ विहूणा तेवीसे बंधि सेसुदया ७७०४ ॥१२६॥
^५ नारय^६ जड^७ १८विहूणा पुण छवीसे य पन्नवीसे य ७७६८ ।
 केवलिरहियाउदया गुणतीसे तीसबंधे य ७७८३ ॥१२७॥
 पन्नमया वासीया ५०८२ अडवीसे बंधि जमिह तिरिउरला ।
 देहेणापडिपुन्ना पढमे संघयणंसठाणे ॥१२८॥
 अड्यालं भंगसयं १४८इगतीसे एगबंधि दुगसयरी ७२
 अट्टाणवई मन्वे अबंधए हुंति उदयसा ॥१२९॥

॥ इति बन्धस्थानेषु उदयमङ्गसख्या ॥

साप्रत गुणस्थानेषु उदयस्थानान्याह-

१ "मुत्तु" इत्यपि सु । २ "उदओ" इत्यपि ह० । ३ "पणु०" इत्यपि सु । ४ "मुत्तु" इत्यपि सु । ५ "नरयजडविहूणा पुण छवीसे पन्नवीमन्वे य" । इत्यपि सुद्रितप्रतौ । ६ "वासीती" इत्यपि सु ।

इगतीसंता इगवीसमाइणो मिच्छि सच्चि उदयाओ ।
 सत्तड्वीसरहिया ते चेव उ सत्त सासाणे ॥१३०॥
 गुणतीसाई तिन्नि उ इगतीसंता उ मिस्सगुणठाणे ।
 चउवीसरहिय अजए देसे चउल्लेग-२४-२६-२१-वीसणा ॥१३१॥
 विरए वेवं नवरं इगतीसाए य रहिय अपमत्तो ।
 गुणतीसतीस पुब्बा जा खीणो तीस जोगेवं ॥१३२॥
 चउपणअहिया वीसा नव अट्ट य मोत्तु अट्ट उदयाओ ।
 नव अट्ट अजोगंमी भंगोवाओ इमो तेसु ॥१३३॥
 सुहुमतिगं सुहु सा मिच्छे इगविगल जाव सासाणे ।
 उदया वि न संतेए सासाणे नरगइगवीसा ॥१३४॥
 एगिंदिसु छव्वीसा नरतिरि गुणतीसतीस वुज्जोई ।
 सुरवजा पणवीसा इगतीसा तिरिसगलसेसा ॥१३५॥

भिन्ने विशेषमाह-

नरतिरिए गुणतीसा तीस वि जोएण नत्थिणमीसाण ।
 अण^१एज्जदुहयमजसं देसाईणं न य उदेइ ॥१३६॥
 गुणतीसंतुद^२एहि संजयदेसा न हुंतुरलदेहा ।
 आहारनरूज्जोया जइस्सऽपुव्वऽट्ट केवल्लिणो ॥१३७॥
 संघयणे पढमे चिय सेढी तिन्नाइ अन्नि उवसमगे ।
 तित्थयरे सम रं सरखगई सुप्पसत्थित्ति ॥१३८॥
 नि दयभंगसंखा अजोगगरहिया भवे निययसंखा ।
 गुणठाणे गुणठाणे भंग चिय संपय वुच्छं ॥१३९॥
 सत्तत्तरितेवत्तरि ७७७३ भंगसया मिच्छसासणे एवं ।
 चारि सहस्सा सगनउय ४०९मीसि चउतीस णसट्टा ३४६५
 ॥१४०॥
 अजए इगवन्नसया इगचत्ता ५१४१देसि चउसय^३ ४४३ ।
 अट्टवन्नसयं छट्ठे १५८ अडयालसयं १४८ तु अपमत्ते ॥१४१॥

१ "मुत्त" इत्यपि सु । २ "य" इत्यपि सु । ३ इयगाथा मुत्तितप्रतावित्थम्-
 गतीस असुरपणुवीसिगिंदि छव्वीसा । तिरिजोई विगलतीसा तिरिमणुयानं च गुणतीसा" इति ।
 ४ "अणुइज्ज" इत्यपि सु० । ५ "०एसु" इत्यपि सु० । ६ "सपई" इत्यपि सु० ।

उवरिं जा उवसंतो विसत्तरी ७२ खीणमोहि चउवीसा २४ ।
अडचत्त ४८ सजोगम्मी दो भंगा चरिमगुणठाणे ॥१४२॥

जीवस्थानेपूदयानाह—

छव्वीसंता सुहुमे सगवीसता य वायरे उदया ।
इगतीसंता चउवीसहीण समणेगवीसाई ॥१४३॥
विगलामणेषु ते वि हु पणुवीसा सत्तवीस विणु छाओ ।
पज्जि १अपज्जाण निज दो दो उरलोदया पढमा ॥१४४॥

जीवस्थानेषु उदयस्थानकमङ्गसख्यामाह—

सुहमेयरेसु तिय तिय ३ अपज्जि पज्जेसु सत्त गुणतीसं ।
सन्नि अपज्जे चउरो दो दो सेसेसु ऽपज्जेसु ॥१४५॥
छावत्तरि इगसत्तरि समणे विगलेसु वीस पत्तेयं ।
अमणे गुणवन्नसया चउसहिया जीवउदयंसा ॥१४६॥

गतिपूदयस्थानान्याह—

इगपणसगट्टनवहियवीसा नरगे सुरेसु तीसा वि ।
नरुदय—चउवीसूणा नवट्टवीसूण—तिरिएसु ॥१४७॥
उदयंस पंच नरण तिरिए पण सहस सयरि भंगाणं ।
देवेसु चउसट्टी नरेसु छव्वीसवावन्ना ॥१४८॥

गुणस्थानजीवस्थानगतीनां बन्धेषूदयानतिदिशन्नाह—

गुणतीसंता उदया अडवीसे नत्थि जाव मीसोत्ति ।
निगतीस तित्थवंधे इगतीसचयाइ ३१ गुणसरिसा ॥१४९॥
पणसगअहिया वीमा तेवीसचए न होइ सगलाणं ।
गुणजियगईण सरिसावसेसबंधेषु उदयाओ ॥१५०॥

मिश्रस्यैकोनत्रिंशद्बन्धे एकोनत्रिंशदुदय ॥

॥ उदओ सम्मत्तो ॥

तिदुनवई गुणनवई २अट्टच्छडसी असी य गुणसी य ।
अट्टयछप्पन्नत्तरि नव अट्ट य नामसंताणि ॥१५१॥
३पडिपुन्नु नामु तिणवइ तित्थविणा दुणवई य सा होइ ।
चउआहारगरहिया ता ६३-९२ गुणनवई य अडसीया ॥१५२॥

१ “अपज्जत्ताण निय दो” इत्यपि । २ “अडसी छडसी असीइ गुणसीइ ।” इत्यपि सु० । ३ “पति पुत्र” इत्यपि सु० ।

१सुरदुगनरयदुगे वा एगयरे नासिए हवड छासी ।
 असड विउव्विचउक्के दुगअन्नयरे य उव्वलिए ॥१५३॥
 मणुयदुगे उव्वलिए २अडसत्तरि सत्तखवणरहियाण ।
 खवगाणं पुण सव्वे छासी ३अडसत्तरी मोत्तुं ॥१५४॥
 तेणवडमाडयाओ चउरो नामस्स तेरसे खविए ।
 जायति अमी गुणसी छसयरि पणसयरि जहमंखं ॥१५५॥
 नरयदुगं तिरियदुगं विगलिगजाई य थावरं सुहुमं ।
 आयावं उज्जोयं ४साहारण तेरस डमाओ ॥१५६॥
 दुणवडअडमीयाओ उवसंतो जाव संति मिच्छाओ ।
 तिणवड गुणणवईओ दो वि हु अजयाउ अट्टणहं । १५७॥
 गुणनवड असी छासी ५अडसत्तरि मिच्छि थूलखवगाओ ।
 पणछन्नवहियसत्तरि असी अजोगंतऽणुवमंते ॥१५८॥
 नव अट्ट अजोगिं म्मी सत्ता गुणठाणगेसु इय भणिया ।
 गुणबंधुदएसेव नवरं तत्थ य विसेसोयं ॥१५९॥
 अडवीसचयं ६मोत्तुं दुणवड छडसी ७असी ८व्य सव्वत्थ ।
 छवीमंतुदएसुं अडसयरी पंचमी मिच्छो ॥१६०॥
 गुणतीसचए नरगोदएसु १ २५, २७, २८, २९नवसी विबंधि अडवीसे ।
 दुणवडनवडुछासी नवसी विणु एकनीसुदए ॥१६१॥
 सासणि तीसे तुदए दुणवड ९अडमी य सेमि पुण अडसी ।
 अजए गुणतीसचए तिनवड नवसी छवीसुदए ॥१६२॥
 १०देमपमत्ति गुण ११तीसे १२ चइ अजए तीसि तिणवई नवसी ।
 अडवीसचए दुणवड अडसी अजयाडतिणहंपि ॥१६३॥
 अडमी नवमी दुणवड तिणवड संता कमेण वधेसु ।
 अपमत्तअपुव्वाण इगतीमंतेसु चउसुं पि ॥१६४॥

१ “अस्या गाथाया स्थाने मुद्रितप्रनाविय गाथाऽस्ति । “छासीइ असइ सुरदुगि नरगाचियछक्के
 अमइ असिई । सुरदुगि नरयदुगेण व छक्कचए सइ पुणो छासी ।” इति । २ “अट्टत्तरि” इत्यपि मु० ।
 ३ ‘अडहत्तरि मुत्तुं ॥’ इत्यपि मु० । ४ “साहारण” इत्यपि मु० । ५ अडहत्तरि इत्यपि मु० । ६ “०म्मि
 उ” इत्यपि मु० । ७ “मुत्तुं दुणवई छडसी असीइ” इत्यपि मु० । ८ “अडसीइ” इत्यपि मु० । ९ “देसि”
 इत्यपि मु० । १० “०निसे” इत्यपि मु० ।

तित्थविणा उदएसु^१ अतित्थसंताइँ हुंति केवलिनो ।
तित्थेण सतित्थाइँ सेसा संता गुणकमेण ॥१६५॥

जीवस्थानेषु सत्तामाह-

दुणवइ अडसी छासी असीइ अडहत्तरी य तेरससु ।
पन्नत्तरिपज्जंता दस संता सन्निपज्जत्ते ॥१६६॥

जीवस्थानविषयबन्धोदयेषु सत्तामाह-

^१बंधोदइ तेरेवं नवरं उरलोदए छवीसंते ।
अडसयरी संति बंधे अडवीसि अतित्थि मिच्छविही ॥१६७॥
छवीसंतचएसु^२ सन्निम्मि वि होइ विगलविहि नवरं ।
पणसगवीसुदएसु^३ दुणवइ अडसी अ तेवीसा ॥१६८॥
अडवीसाइँ तीसंतबंधि संताइँ निययउदएसु^४ ।
अजयजुयमिच्छविहिणा छलसीमाइँ उरलि चैव ॥१६९॥
इगतीसएगबंधे अवंधि उदएसु जइविही होइ ।
करणं पइ सन्निम्मि वि विहि केवलिनो निरवसेसो ॥१७०॥

गतिषु सत्तामाह-

एगचउ पंच छहिए वीसे उदयम्मि जे तिरियउरला ।
तेसिं चैवडसयरी तिरिजोग्गचईण नवरं तु ॥१७१॥
छपणवीसुदएसु^५ अडसयरी नत्थिगिदिपज्जस्स ।
जससाहारणआयवउज्जोएहिं तु मिस्सेसु ॥१७२॥
दुणवइ अडसी चउगइ ^६असी य छासी य मणुयतिरिएसु ।
सुरणर तिणवइ नरगे वि गुणवई पंच नरि सेसा ॥१७३॥

गतिविषयबन्धोदयेषु सत्तामाह-

बंधोदएसु गइविहि णारयतिरिएसु णवरि अडसयरी ।
^७जीवे व्व तिरिगईए अडवीसि अतित्थि सन्निविही ॥१७४॥
तिरि सयलि २६ ऽविगलि १८ सव्वे ^८पणंसिगा एगवीसल्लव्वीसे ।
उरलोगिदियभंगा एवं इगवीसचउवीसे ॥१७५॥
पत्तेयअजसभंगा दो दो छवीसपन्नवीसेसु ।
एवं च पंच ^९सत्तिगातिन्निसया ^{१०}होति पणतीसा ॥१७६॥

१ “बन्धोदय” इति मु० प्रतौ । २ ‘असीइ छासीइ’ इत्यपि मु० ३ “जीवव्व” इत्यपि मु० । ४ “पणंसिगा” इति वा । ५ “सत्तिग” इत्यपि मु० । ६ “हुति” इत्यपि मु० ।

मणुएसु वि मन्निविही णवरं अडमयरि नत्थि तह तीसे ।
 वंधे तिनवइ नवसी इगतीसुदओ नसइ वंधो ॥१७७॥
 देवाण तीसबंधे संता चउरो वि नियमउदएसुं ।
 दुनवइ अडमी मता सेसेसुं वंधउदएसु ॥१७८॥
 सञ्चत्थ वि अडमयरी अन्ने तिरियाण उरलउदएसुं ।
 पणसगर्वसुदएसुं ^१तेवीसचयं नरे वित्ति ॥१७९॥

सामान्येन सर्वबन्धेषु सत्ताभ्यानान्याह—

तीमंतऽडवीसविणा वंधेसुदएसु एगतीमंते ।
 इगवीसाइसु दुणवइ अडसी छासी अमी ठवसु ॥१८०॥
 छव्वीमंतुदएसुं अडसयरी ^२पंचमी तहा ठवसु ।
 गुणनवई तह तिणवइ ठवेसु एएसु उदएसु ॥१८१॥
 गुणतीमबंधगस्स उ चउवीसिगतीमवज्जि सेसेसु ।
^३छच्चउअहिया वीसिगतीसा वज्जित्तु तीसचए ॥१८२॥
 इगतीसबंधि उदया गुणतीसा तीस सति तेणवई ।
 इगबंधिअबंधीणं तीसुदए अट्ट संताणि ॥१८३॥
 त्तिदुनवई गुणनवई ^४अडमी य असी य तह य गुणसीया ।
 छप्पणहत्तरि ^५एत्तो अबंधि सेसेसु उदएसु ॥१८४॥
 वीसछवीसऽडवीसे गुणसी पन्नचरी य संताइं ।
 गुणतीसे इगुणासी छप्पणसयरी असी चेव ॥१८५॥
 णवउदए संताइं असीइ छावत्तरी य नव चेव ।
 अट्टुदए ते चेव उ एगूणा त्तिथनामेण ॥१८६॥
 असीइ छमयरि दुत्ति उ इगवीसिगतीससत्तवीसाए ।
 अडवीसे पुण वंधे नवइ ^६अडसी य सव्वत्थ ॥१८७॥
 इगतीसुदए छासी छासी गुणनवइ ^७तीसुदयअहिया ।
 गुणनवइ कस्स भन्नइ मिच्छदिट्ठिस्स नन्नस्म ॥१८८॥

१ “तेवीसचओ वि मणुएसु ॥” इत्यपि मुद्रितप्रतौ पाठ । २ “पचम ” इति मु० प्रतौ । ३ ‘छक्क-
 चउअहियवी०” इत्यपि मु० । ४ ‘अडमी[ई]इ असीइ तह य गुणसीइ ॥” इत्यपि मु० । ५ “इत्तो”
 इत्यपि मु० । ६ “अडसीइ सव्वत्थ” इत्यपि मु० । ७ ‘तिसुदए अहिया ।” इत्यपि मु० ।

मणुएसु वि मन्निविही णवरं अडमयरि नत्थि तह तीसे ।
 वधे तिनवइ नवसी इगतीसुदओ नसइ वंधो ॥१७७॥
 देवाण तीसबंधे संता चउरो वि नियमउदएसुं ।
 दुनवइ अडमी मता सेसेसुं वंधउदएसु ॥१७८॥
 सन्वत्थ वि अडमयरी अन्ने तिरियाण उरलउदएसुं ।
 पणसगर्वासुदएसुं ^१तेवीसचयं नरे त्रिति ॥१७९॥

सामान्येन सर्वबंधेषु सत्तास्थानान्याह—

तीमंतऽडवीसविणा वंधेसुदएसु एगतीमंते ।
 इगवीसाइसु दुणवइ अडसी छासी अमी ठवसु ॥१८०॥
 छव्वीमंतुदएसुं अडसयरी ^२पंचमी तहा ठवसु ।
 गुणनवई तह तिणवइ ठवेसु एएसु उदएसु ॥१८१॥
 गुणतीमबंधगस्स उ चउवीसिगतीमवज्जि सेसेसु ।
^३छरुचउअहिया वीसिगतीसा वज्जित्तु तीसचए ॥१८२॥
 इगतीसबंधि उदया गुणतीसा तीस सति तेणवई ।
 इगबंधिअबंधीणं तीसुदए अट्ट संताणि ॥१८३॥
 त्तिदुनवई गुणनवई ^४अडसी य असी य तह य गुणसीया ।
 छप्पणहत्तरि ^५एत्तो अबंधि सेसेसु उदएसु ॥१८४॥
 वीसछवीसऽडवीसे गुणसी पन्नत्तरी य संताइं ।
 गुणतीसे इगुणासी छप्पणसयरी असी चेव ॥१८५॥
 णवउदए संताइं असीइ छावत्तरी य नव चेव ।
 अट्टुदए ते चेव उ एगूणा तित्थनामेणं ॥१८६॥
 अमीइ छसयरि दुन्नि उ इगवीसिगतीससत्तवीसाए ।
 अडवीसे पुण वंधे नवइ ^६अडसी य सन्वत्थ ॥१८७॥
 इगतीसुदए छासी छासी गुणनवइ ^७तीसुदयअहिया ।
 गुणनवइ कस्स भन्नइ मिच्छदिट्ठिस्स नन्नस्म ॥१८८॥

१ “तेवीसचओ वि मणुएसु ॥” इत्यपि सुद्धितप्रतौ पाठ । २ “पचम ” इति मु० प्रतौ । ३ ‘छक-
 चउअहियवी०” इत्यपि मु० । ४ ‘अडमी[ई]इ असीइ तह य गुणसीइ ॥” इत्यपि मु० । ५ “इत्तो”
 इत्यपि मु० । ६ “अडसीइ सन्वत्थ” इत्यपि मु० । ७ ‘तिसुदए अहिया ।” इत्यपि मु० ।

संतद्वाणा पनरस अडवीसा ताव इत्थ सुपमिद्धा ।
 सम्मत्ते उव्वलिए सगवीसा होइ संतम्मि ॥१५॥
 मीरम्मि उ छव्वीसा अणाइमिच्छस्स अहविमो नेया ।
 अणुवधीणुव्वत्तणे चउवीसा मिच्छपुंजम्मि ॥१६॥
 खवियंमी तेवीसा वावीसा मिस्सपुंजखवणम्मि ।
 सम्मत्तपुंजखवणे इगुवीसा खवगसम्मस्स ॥१७॥
 अट्टकसाए खविए तेरस चारस नपुंसवेयखए ।
 थीवेयखएकारस खीणे छक्कम्मि पंचेव ॥१८॥
 पुसवेयखए चउरो तिन्नि उ कोवम्मि दन्नि माणम्मि ।
 मायाखयम्मि एक्को इय भणियं सयलमोहणियं ॥१९॥
 तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा अट्टवीस इगुतीसा ।
 तीसेगतीसमेगं वंधट्टाणाणि नामस्स ॥२०॥
 तेवीसा पणवीसा छन्नवहिय वीस तीस एयाणि ।
 मिच्छदिट्ठी वंधइ तिरियगईए निमित्ताइं ॥२१॥
 एगिंदियपाउग्गाणि वंधठाणाणि तिन्नि पढमाणि ।
 तत्थ च तेयगकम्मगवन्नाइचउकयं चेव ॥२२॥
 अगुरुलहू उवचायं निम्माणं नव इमाउ धुवबंधा ।
 तिरियगई एगिंदियजाई ओरालियं हुंड ॥२३॥
 तिरियाणुपुन्विथावरघायरसुहमाण दुन्हमेगयरं ।
 अप्पज्जत्तगपत्तेयइयरमेगियरथिरगं च ॥२४॥
 असुभं दूभगअणइज्जअजसधुवबंधणीहि सुह एसा ।
 अप्पज्जत्तगएगिंदियाण पाउग्गतेवीसा ॥२५॥
 परघाउस्साससमा पज्जत्तेगिदिजोग्गपणवीसा ।

॥ स तिकासारम् ॥

सिरिवीरजिणं नमिऊण भणियनीसेससत्थसारत्थं ।
 बुच्छामि सत्तरीए सारमिणं संगहेऊण ॥१॥
 बंधे उदए संते पण पण पढमंतिमेसु कम्मसेसु ।
 वेयणियाउयगोए बंधे उदए य एक्किक्कं ॥२॥
 संतम्मि दोन्नि एक्कं व हुज्ज अह दंसणस्स आवरणे ।
 नव छच्चउरो बंधे संतम्मि य उदय चउ पण वा ॥३॥
 बावीस इक्कीसा सतरस तेरस हवंति नव पंच ।
 चउ तिग दुग एक्कं वि य बंधट्टाणाणि दस मोहे ॥४॥
 मिच्छं कसायमोलस वेओ एको भयं दुगुंछा य ।
 जुयलेणेण दुवीसा इगवीसा मिच्छविगमम्मि ॥५॥
 अणबंधविगमि सतरस तेरस विगमे अपच्चखाणाणं ।
 पच्चखाणाभावे नव हासाईचउक्कस्स ॥६॥
 वोच्छेए पणबंधे पुमवेयाविगमओ य चत्तारि ।
 कोहाई य कसाए केवलए बंधए तत्तो ॥७॥
 कोहे विगए बंधइ संजलणतिगं दुगं तु माणम्मि
 मायाविगमे बंधइ अनियट्टी लोभमेगं तु ॥८॥
 दस नव अट्ट य सत्त य छ पंच चउ दुन्नि एक मोहुदया ।
 मिच्छ कसायचउक्कं वेओ जुयलं भयदुगुंछा ॥९॥
 एए दस अणविगमे भयदुगुंछाण वेगविगमम्मि ।
 नवउदए दुगविगमे अट्ट य सत्त उ तिगाविगमे ॥१०॥
 अणरहियकसायतिगं वेओ जुयलं छलोदए एवं ।
 आइल्लवीयरहिया दुन्नि कसाया य पुमवेओ ॥११॥
 जुयलेण य पणगुदए चउरुदओ पुणिकयम्मि संजलणे ।
 वेएण य जुयलम्मि य दुगोदओ जुयलविगमम्मि ॥१२॥
 वेयस्स पुणो विगमे संजलणकसायमेगमुदयम्मि ।
 इय दिसिमिच्चं भणिया एगेगपगारओ उदया ॥१३॥
 अट्टग-सत्तय-छ-च्चउ-तिग-दुग इक्काहिया भे वीमा ।
 तेरस वारिकारस पण चउ ति दु इक्क मोहस्स ॥१४॥

संतद्वाणा पनरस अडवीसा ताव इत्थ सुपमिद्धा ।
सम्मत्ते उच्चल्लिए सगवीसा होइ संतम्मि ॥१५॥
मीसम्मि उ छवीसा अणाइमिच्छस्स अहविमो नेया ।
अणुबंधीणुव्वल्लणे चउवीसा मिच्छपुंजम्मि ॥१६॥
खवियंमी तेवीसर वावीसा मिस्सपुंजखवणम्मि ।
सम्मत्तपुंजखवणे इगुवीसा खवगसम्मस्स ॥१७॥
अट्टकसाए खविए तेरस वारस नपुंसवेयखए ।
थीवेयखएक्कारस खीणे छक्कम्मि पंचेव ॥१८॥
पुमवेयखए चउरो तिन्नि उ कोवम्मि दन्नि माणम्मि ।
मायाखयम्मि एकौ इय भणियं सयलमोहणिय ॥१९॥
तेवीस पन्नवीसा छवीसा अट्टवीस इगुतीसा ।
तीसेगतीममेगं बंधद्वाणाणि नामस्स ॥२०॥
तेवीसा पणवीसा छन्नवहिय वीस तीस एयाणि ।
मिच्छद्दिट्ठी बंधइ तिरियगईए निमित्ताइं ॥२१॥
एगिंदियपाउग्गाणि बंधठाणाणि तिन्नि पढमाणि ।
तत्थ च तेयगकम्मगवन्नाइचउक्कयं चेव ॥२२॥
अगुरुलहू उवघायं निम्माणं नव इमाउ धुवबंधा ।
तिरियगई एगिंदियजाई ओरालियं हुंड ॥२३॥
तिरियाणुपुव्विथावरवायरसुहमाण दुन्हमेगयरं ।
अप्पज्जत्तगपत्तेयइयरमेगियरथिरगं च ॥२४॥
असुभं दूमगअणइज्जअजसधुवबंधीणीहि सुह एसा ।
अप्पज्जत्तगएगिंदियाण पाउग्गतेवीसा ॥२५॥
परघाउस्साससभा पज्जत्तेगिदिजोग्गपणवीसा ।
आयावुज्जोए वा तज्जोगा चेव छवीसा ॥२६॥
पणवीसा गुणतीसा तीसा वेइंदियाण पाउग्गा ।
तेवीसाए पुव्वोइयाए खित्तम्मि सेवट्ठे ॥२७॥
अंगोवंगे य तथा अप्पज्जत्तस्स जोग्गपणवीसा ।
नवरि तसं वेइंदियजाई च्चिय इत्थ भणियच्चा ॥२८॥
परघाउस्सासअणिट्ठगमणदूसरसमेयगुत्तीसा ।

नवरं एमा पञ्जत्तगरस जोग्गा मुणोयच्चा ॥२९॥
 एवं चिय तीमा वि हु नवरं उज्जोयबंधगस्सेसा ।
 एवं जा चउरिदी बंधतिगं होइ एयं पि ॥३०॥
 पंचिदियतिरियाणं मणुयाणं तह य होइ पाउग्गं ।
 एयं चिय बंधतिगं संघयणाईहि नाणत्तं ॥३१॥
 अन्नं चुज्जोएणं तीसा न हु होइ मणुयपाउग्गा ।
 किं तु सुरा निरया वि य तित्थयरसमं कुणंति तथं ॥३२॥
 अडवीसे गुणतीसा तीसा इगतीसमेव एयाणि ।
 देवाण पाउग्गाणि बंधठाणाणि चत्तारि ॥३३॥
 देवगई पचिदियजाई वेउच्चियं च चउरंमं ।
 अंगोवंग च तहा देवणुपुच्ची य नायच्चा ॥३४॥
 परधाऊभासपसत्थगमणतसवायरं च पज्जत्तं ।
 पत्तेयं च थिराथिरसुभासुभाणं च एगयरं ॥३५॥
 सुभगं सुस्सरमेव य आइज्जजसाण दुन्हमेगयरं ।
 धुवबंधिणीण नवगम्मि मीलिए होइ अडवीसा ॥३६॥
 १ तित्थयरेणुगतीसा आहारदुगेण होइ पुण तीसा ।
 तित्थयराहारदुगे य मीलिए हवड इगतीसा ॥३७॥
 नेडडयाणं जोग्गा एकच्चिय वज्झए उ अडवीसा ।
 साहे सुराण भणिया नाणत्तं निरयमदाई ॥३८॥
 वीसा एकग चउ पण छ सत्त अट्ट नवसमहिया वीसा ।
 तीसेगतीस नव अट्ट उदयठाणाणि वारस उ ॥३९॥
 तेणउई वाणउई नवट्टछहिं समहिया असी असिई ।
 नवअट्टछपन्नत्तरि नवट्ट वारस वि संताणि ॥४०॥
 ओहेणं भणियाडं जप्पाउग्गाणि बंधठाणाणि ।
 तह उदसत्ताणिहि वोच्छं चउगइविसेसेण ॥४१॥
 एगुत्तीसा तीसा वि य बंधठाणाणि दुन्नि निरयाणं ।
 इगवीम पन्नवीसा सत्तट्टनवाहिया वीसा ॥४२॥

उदयङ्काणाणि इमाणि पंच संताणि हुंति पुण तिन्नि ।
 बाणउई य नवासी अट्टामी तत्थ वधदुगं ॥४३॥
 जह पुढ्वि निदिट्ठं पंचिदियतिरियमण्यपाउग्गं ।
 तह इहडं विन्नेयं उदयङ्काणाणि पुण वुच्छं ॥४४॥
 तेयङ्ग कम्मडगं वन्नाडचउक्कअगुरुलहुयं च ।
 थिरमथिर सुभमसुभं निम्मेण धुवोदया एए ॥४५॥
 निरयगई पंचिदियजाई निरयाणुपुव्वि तमनायं ।
 चायर तह पज्जत्तग दूभग अणइज्जमजसं च ॥४६॥
 वारस धुवोदयाओ इय एगवीसा भवंतरालम्मि ।
 हुंडं वेउव्विदुगं उवघायं तह य पत्तेय ॥४७॥
 एयाहि पणवीसा सरीरपत्तस्स आणुपुव्वि विणा ।
 तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघायगमणा य ॥४८॥
 पक्खित्ते सगवीसा ऊत्ताप्पे अट्टवीस 'इगुतीसा ।
 सरसहिया अह सत्ते बाणउया ताणि वोच्छामि ॥४९॥
 गडचउगजाडपणगं पच सरीराणि पंच संघाया ।
 पचेव वंधणाडं छस्संठाणाणि तह चेव ॥५०॥
 अंगोत्रंगाण तिग छस्संघयणाणि वन्नगंधरसा ।
 फासा सच्चे वीस विहायुदु चउरो य अणुपुव्वी ॥५१॥
 अगुरुलहू उवघायं परघाऊसासआयवुज्जोयं ।
 तसवायरपज्जत्तं पत्तोयथिरं सुभं सुभगं ॥५२॥
 स्रमरआडज्जमं थारदसगं तसाइपडिक्खो ।
 निम्माणेण सहिया बाणउई नामसंतम्मि ॥५३॥
 आहारगं सरीर वंधणमंघायअंगुवंगं च ।
 एएहि चउहि रहिया तित्थयरसमा नवासी य ॥५४॥
 तित्थयरनामरहिया अट्टासी अवसिया य निरयगई ।
 इत्तो तिरियगईए वोच्छ वुं धुदयसताणि ॥५५॥
 तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा इगुणतीस तीसा य ।
 एया पंचिण एगिदियाण वधस्स ठाणाणि ॥५६॥

नवरं एमा पञ्जत्तगस्स जोग्गा मुण्येयच्चा ॥२९॥
 एव चिय तीसा वि हु नवरं उज्जोयबंधगस्सेसा ।
 एवं जा चउरिंदी बंधतिगं होइ एयं पि ॥३०॥
 पंचिदियतिरियाणं मणुयाणं तह य होइ पाउग्गं ।
 एयं चिय बंधतिगं संघयणाईहि नाणत्तं ॥३१॥
 अन्नं चुज्जोएणं तीसा न हु होइ मणुयपाउग्गा ।
 किं तु सुरा निरया वि य तित्थयरसमं कुणंति तथं ॥३२॥
 अडवीसे गुणतीसा तीसा इगतीसमेव एयाणि ।
 देवाणं पाउग्गाणि बंधठाणाणि चत्तारि ॥३३॥
 देवगई पचिदियजाई वेउद्वियं च चउरंमं ।
 अंगोवंग च तहा देवणुपुव्वी य नायच्चा ॥३४॥
 परघाऊमासपसत्थगमणतसत्रायरं च पञ्जत्तं ।
 पत्तेयं च थिराथिरसुभासुभाणं च एगयरं ॥३५॥
 सुभगं सुस्सरमेव य आडज्जसाण दुन्हमेगयरं ।
 धुवबंधिणीण नवगम्मि मीलिए होइ अडवीसा ॥३६॥
 १ तित्थयरेणुगतीसा आहारदुगेण होइ पुण तीसा ।
 तित्थयराहारदुगे य मीलिए हवइ इगतीसा ॥३७॥
 नेडडयार्णं जोग्गा १ एकच्चिय बज्झए उ अडवीसा ।
 साहे सुराण भणिया नाणत्तं निरयमदाई ॥३८॥
 वीसा एकग चउ पण छ सत्त अट्ट नवसमहिया वीसा ।
 तीसेगतीस नव अट्ट उदयठाणाणि वारस उ ॥३९॥
 तेणउई वाणउई नवट्टछहिं समहिया असी असिई ।
 नवअट्टछपन्नत्तरि नवट्ट वारस वि संताणि ॥४०॥
 ओहेणं भणियाइं जप्पाउग्गाणि बंधठाणाणि ।
 तह उदसत्ताणिहिं वोच्छं चउगइविसेसेण ॥४१॥
 एगुत्तीसा तीसा वि य बंधठाणाणि दुन्नि निरयाणं ।
 इगवीस पन्नवीसा सत्तदनवाहिया वीसा ॥४२॥

उदयद्वाणाणि इमाणि पञ्च मन्त्राणि ज्ञानि पुण निन्नि ।
 वाणउई य नवामी अट्टामी तन्थ च्चदुग ॥४३॥
 अह पुर्विन्नि निदिदु पच्चिदियतिगियमण्यपाउग्गं ।
 तह इहइं विन्नेयं उःयद्वाणाणि पुण वुञ्छ ॥४४॥
 तेयइग कम्मइगं वन्नाइचउक्कअगुरुल्लह्यं च ।
 धिरमधिर सुभमसुभं निम्मेण धुवोदया ण्ण ॥४५॥
 निरयगई पच्चिदियजाई निरयाणुपुच्चि तमनामं ।
 वायर तह पज्जत्तग दूभग अणइज्जमज्जमं च ॥४६॥
 वाग्ग धुवोदयाओ इय एगवीसा भवन्तगल्लम्मि ।
 हुंइं वेउक्विदुगं उवघाय तह य पत्तेय ॥४७॥
 एयाहि पणवीसा मरीरपत्तस्स आणुपुच्चि विणा ।
 तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघायगमणा य ॥४८॥
 पक्खित्ते सगवीसा उमाप्पे अट्टवीम 'इगुतीसा ।
 सरसहिया अह सत्ते वाणउया ताणि वोच्छामि ॥४९॥
 गड्ढउगजाइपणगं पंच सरीराणि पंच मंघाया ।
 पंचेय वंधणइं छस्संठाणाणि तह चेव ॥५०॥
 अंगोत्रगाण तिगं छस्संघयणाणि वन्नगधरसा ।
 फासा सव्वे वीस विहायुदु चउरो य अणुपुच्चि ॥५१॥
 अगुरुल्लह उवघायं परघाउसासआयवुज्जोयं ।
 तसवायरपज्जत्तं पत्तोयधिरं सुभं सुभगं ॥५२॥
 स्रमरआइज्जज्जमं थायरदसगं तसाइपडिक्खलो ।
 निम्माणेण सहिया वाणउई नाममत्तम्मि ॥५३॥
 आहारगं सरीर वंधणमंघायअंगुवंग च ।
 एएहि चउहि रहिया तिथयरसमा नवासी य ॥५४॥
 तिथयरनामरहिया अट्टासी अवसिया य निरयगई ।
 इत्तो तिरियगईए वोच्छ वु'धुदयसंताणि ॥५५॥
 तेवीस पन्नवीसा छव्वीसा इगुणतीस तीसा य ।
 एया पंचिण एगिदियाण वंधस्स ठाणाणि ॥५६॥

इगवीसा चउवीसा पंचगछगसत्तसमहिया वीसा ।
 उदयट्टाणाणि इमाणि पंच बाणउय अट्टासी ॥५७॥
 छलसी असी य अट्टत्तरी य एयाणि पंच संताणि ।
 तिरिमणुपाउग्गाइं वंधट्टाणाइं जहपुव्विं ॥५८॥
 उदयट्टाणिगवीसा जहपुव्वं नारयाण निदिट्टा ।
 नवरिं गिदियजाईपमुहं नाणत्तमिह नेयं ॥५९॥
 तत्तो सरीरपत्ते ओरालसरीरहुंडउवघायं ।
 साहारणपत्तेयाणमेगा अणुपुव्विविगमम्मि ॥६०॥
 चउवीसुदओ तत्तो सरीरपज्जत्तगस्स परघाए ।
 खित्तम्मि पन्नवीसा ऊसासुदयम्मि छव्वीसा ॥६१॥
 आयासुज्जोए वा खित्ते सगवीस संतठाणेषु ।
 बाणउई अट्टासी जह निरयणं तहेहं पि । ६२॥
 देवदुगे उव्वलिए तत्तो अट्टत्तरी य संतम्मि ।
 तेवीमपन्नवीसा छन्नवहियवीसतीसा य ॥६३॥
 विगल्लिंदियाण तिण्हं पि वंधठाणाणि पंच एयाणि ।
 इगछक्कगअडनवहियवीसा तीसा य इगतीसा ॥६४॥
 उदयट्टाणाणि इमाणि छच्च एगिंदियाण जह भणिया ।
 नवरं इगवीसाओ अणुपुव्वि विणा सरीरत्थे ॥६५॥
 ओरालदुगे हुंडे उवघाए तह य चेव सेवट्टे ।
 पत्तेयम्मि य खित्ते छव्वीसा होड उदयम्मि ॥६६॥
 परघाए गमणंमि य अट्टावीसा तओ य उस्मासे ।
 इगुतीसा तीसा उण सरंमि उज्जोइ इगतीसा ॥६७॥
 बाणउई अट्टासी छलसी य असी य अट्टसयरी य ।
 संताण पंच एगिंदियाण जह पुव्वभणियाणि ॥६८॥
 तिगपंचगछगअट्टगनवाहिया वीस तह य तीसा य ।
 छ इमाणि वंधठाणाणि हुंति पंचिदित्तिरियाणं ॥६९॥
 एयाणि जहा विगल्लिंदियाण पाएण नवरि इत्थहियं ।
 अट्टावीसा नेया सुरनेरइयाण पाउग्गा ॥७०॥
 एकगल्लक्कगअट्टगनवाहिया वीस तीस इगतीसा ।

उदयट्टाणा छच्चिय पागयपंचिदितिरियाणं ॥७१॥
 एयाणि जह विगलिदियाण नाणत्तु जाइमाईहिं ।
 पंचगसत्तगअट्टगनवाहिया वीस तीसा य ॥७२॥
 वेउच्चियतिरियाणं उदयट्टाणाणि पंच एयाणि ।
 अस्संघयणी वेउच्चियत्ति नो एगहीणत्ति ॥७३॥
 इगपंचछसत्तट्टगनवाहिया वीस तीस इगतीसा ।
 अट्टुदया सामन्नेण हुति पंचिदितिरियाणं ॥७४॥
 एएसि संताण वि पंच जहेगिंदियाण भणियाणि ।
 सम्मत्ता तिरियगई इत्तो बुच्छामि मणुयगई ॥७५॥
 तत्थ मणुयाण अट्ट वि वंधट्टाणाणि पुव्वभणियाणि ।
 चउवीसविरहियाइं एकारस उदयट्टाणाणि ॥७६॥
 अट्टत्तरिवज्जाइं एकारस हुंति संतटाणाणि ।
 सामन्नमिणं बुच्छं विसेसओ उदयसताणि ॥७७॥
 इगवीसा छव्वीसा अडवीसा एगूणतीस तीसा य ।
 पागयमणुयाण इमाणि उदयटाणाणि पंचेव ॥७८॥
 पंचगसत्तगअट्टगनवाहिया वीस तीस जहपुच्चिं ।
 पंचिदियतिरियजुग्गा तहित्थ वेउच्चिमणुयाणं ॥७९॥
 वीसेगवीस छस्सत्तअट्टनवअहिय वीस तीसा य ।
 इगतीस नवट्ट भवे दस उदया केवल्लिजिणाणं ॥८०॥
 मणुयगई पंचिदियजाई तसवायरं च यज्जत्तं ।
 सुभगआइज्जसं धुचोदएहि समा वीसा ॥८१॥
 सामन्नकेवल्लिस्स य इमा समुग्घायवट्टमाणस्स ।
 तित्थयरस्सिगवीसा छव्वीसा देहपत्तस्स ॥८२॥
 केवल्लिणो पक्खिस्सत्ते ओरालदुग्घायपत्तेए ।
 संघयणे संटाणे सत्तावीसा य तित्थयरे ॥८३॥
 छव्वीसाए खिन्ने परधाउसासगइसरेगयरे ।
 ओरालकायजोगे तीसा सामन्नकेवल्लिणो ॥८४॥
 सरउसासनरोहे तीसा उण केवल्लिस्स अडवीसा ।
 उसामे अनिरुद्धे सरे निरुद्धम्मि इगुतीसा ॥८५॥

तीसा उ महावत्थस्स होड तह इक्कीम तित्थयरे ।
 गइजाडतमं वायरपज्जत्तं सुभगमाइज्जं ॥८६॥
 जसत्तित्थयरेहिमसो नवोदथो पुण इमो अजोगिस्स ।
 तित्थयरनाभरहिओ अट्टुदओ होड तस्सेव ॥८७॥
 तेणउई चाणउई नवड्डछहि समहिया असी असिई ।
 अणखवगाणं छ इमा हवंति नामस्स संताणि ॥८८॥
 तेरसनामे खविए चउन्ह आइल्लमंतटाणाणं ।
 तत्तो कमेण जाणसु खवगाणं केवलीणं च ॥८९॥
 असिई अउणासीई छावत्तरि पन्नसत्तरी चेव ।
 हुंति अजोगिजिणाणं पुव्वुत्तनवड्डसंताणि ॥९०॥
 देवाणं पणवीसा छवीसिगुत्तीस तीस चउवंधा ।
 एग्गिदियपंचिदियतिरियाण नराण पाउग्गा ॥९१॥
 उदयट्टाणाणि पुणो पंच जहा नारयाण भणियाणि ।
 छट्ठं तु इहं तीसा उज्जोणं समा नेया ॥९२॥
 तेणउई चाणउई नवअट्टहि समहिया असीई य ।
 संतट्टाणाणि पुणो देवाण इमाणि चत्तारि ॥९३॥
 एयाहिं जहा पुव्वि भणियाइं तहा इहं पि नेयाणि ।
 इय वंधोदयसंताणि वन्नियाइं समासेणं ॥९४॥
 इय सत्तरीए सुत्तस्स तह य चुन्नीए सारमुद्धरियं ।
 सीसाण हियट्टाए भणियं सिरिहेमस्सरीणं ॥९५॥
 जो पढइ इमं जीवो तस्स फुडं सत्तरीयचुन्नीए ।
 सारत्थो हिययत्थो विप्फुरइ सया सनामं व ॥९६॥

॥ इय सत्तरीसार सम्मत्त ॥

इति सप्ततिकासारं समाप्तम्

शुद्धिपत्रकम्

पृष्ठः पक्तिः अशुद्धिः

शुद्धिः

३	१५	अणि ।	अणि । सुहुम ।
८	२४	२	२२
६	१३	३	२
१०	१६	२ । २ ।	२ । १ ।
१४	२ २८	७१-७६ ।	७०/७८ (गाथाङ्का.)
१५	२-१८	८०-८७	७६-८६ (")
१६	१२	१३२	१३३
१६	१४-२२	८८-९२	८७-९१ (गाथाङ्का)
२६	१६	एव	एव
३१	५	गिदिय	एगिदिय
३१	५	१	६
३१	६	२	१२
३१	२२	१८१	१८०
३१	२४	१८२	१८१
३२	२८	"एत्तो"	'एत्तो'
३३	२४	विगल ३)	विगल (३)
३४	६	बा अप.	बा. अप.
३४	५	२दो दो	२ Δदो दो
३७	२३	घ.	बघ.
३८	१५	ठवणा	ठवणा
४२	२३	चूर्णिकार	चूर्णिकारै
४३	६	पञ्चम	
४३	२३	०ज्य	सज्य
४३	३१	सुहुत्ता	सुहुत्ता
४४	१४	२७	३७
४५	३	२८	३८
४५	६	२२०	२४०
४८	७	ठ पा	ठापा
४८	१८	१३६७	१३६१७
४८	६	चउरिदियाण	चउरिदियाणं
४६	११	चउसता	चउसता
५२	१०	७५	२७५
५२	२८	प्रमाण	प्रमाण

पृष्ठः पक्तिः अशुद्धिः

शुद्धिः

५२	२९	दा-SSहारक-	दा-SSहारकसप्तकोट-
		सप्तकोटलनं	लनं कृत्वैव पुनः
		कृत्वैव" पुनः	
५३	२०	०स्थितेष्वपि	०स्थितेष्वपि
५३	२४	॥२०६॥ दय-	॥२०६॥ (२५०)
		स्यात् (२५०)	
५४	६	७२८	१७२८
५४	१३	१३७४५	१३६४५
५५	११	भग	भंग
५६	२०	को कस्त ।	२ को कस्त ।
५६	२७	॥२९१॥ (३६३)	॥२६१॥ (३६५)
५७	३	३६३	३६४
५७	५	३६४	३६५
५७	१०	बंधविवज्जा	बंधविवज्जा
५७	२२	दसणारण	दसणावरण
५७	८	ठवण	ठवणा
६२	२	वज्जा	वावज्जा
६४	१५	१७ ८	१७२८
६५	१	नेषुमोह०	नेषु मोह०
६५	७	२३	४२३
६७	८	केवलीण	केवलीण
६७	३१	प्रतो	प्रतौ
६९	२३	जो	जा
७२	१०	॥३८४॥ (४६४)	॥३८४॥ [४४१]
		[४४१]	
७२	१२	॥३८५॥ (४६५)	॥३८५॥ [४४२]
		[४४२]	
७३	३	उडिव०	वेडडिव०
७३	१४	०नके) अजो	०नके) गिस नत्र
			अइणो वीसं भेया उ
			नो तिरिओ (५०५) अजो
७३	१६	तेरस	तीसे
७३	५	४६०६	४९०६
८०	७	॥(५६३)	॥४०९॥ (५६३)
		६	॥४१०॥ (५६४)

इति
सप्ततिका